

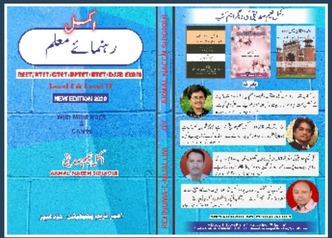
इंसान अपने रब को पहचान

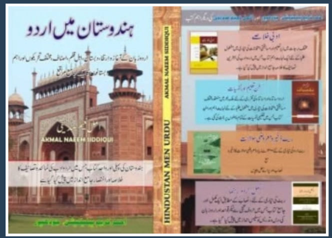
लेखक: हुसैन अहमद तरब

अहमर करीम पब्लिकेशन, जोधपुर

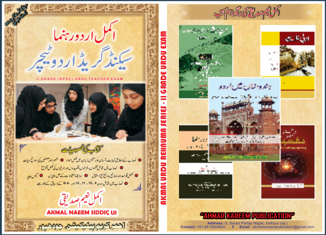


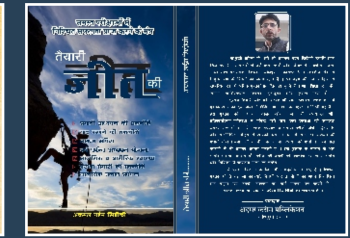
अहमर करीम पब्लिकेशन की दीगर कुतुब











इंसान अपने रब को पहचान

लेखकः हुसैन अहमद "तरब"

अहमर करीम पब्लिकेशन, जोधपुर

इंसान अपने रब को पहचान

पुस्तक का नाम	:	इंसान अपने रब को पहचान
लेखक	:	हुसैन अहमद "तरब"
प्रकाथन दिनांक	:	अप्रैल 2021
टाइपिंग व कम्पोज़िंग	:	कामरान अज़ीम
टाइटल कवर डिज़ाइन	:	आई डिज़ाईन इंडिया, जोधपुर
कुल पृष्ठ संख्या	:	
तादाद	:	1000 (एक हज़ार)
क़िमत	:	100.00/- (सौ रूपये मात्र)
प्रकाशन	:	अहमर करीम पब्लिकेथन, प्रताप नगर, जोधपुर (राज.)
मिलने का पता	:	फैज़-ए-आम मस्जिद के पास, जीं. सैक्टर, प्रताप नगर, जोधपुर, (राज.)

।। पुस्तक ऑनलाईन भी उपलब्ध है ।।
ऑनलाईन मंगवाने हेतु दिये गये बारकोड को स्कैन करें

अधिक जानकारी के लिये हमारे यू-ट्यूब चैनल पर जायें

दिये गये बारकोड
को स्कैन करें

फ़हरिस्त-ए-उन्वानात

पेश लफ्ज - अकमल नईम सिद्दीक़ी

जदीद दौर के इन्सान का अल्मिया ये है कि उसने खुदा की बनाई हुई इस दुनिया को जानने और समझने में अपनी पूरी ताकत लगा दी । उसने जमीन, आसमान और खला (अंतरिक्ष) तक का इल्म हासिल किया । उसने जमीन और आसमान के दरमियान मौजूद हर मख्लूक की छान बीन कर डाली । परिंदों, चरिन्दों, दरिंदों, पहाड़ों, दरियाओं, समुन्दरों, दरख्तों और यहाँ तक कि अपने खुद के जिस्मानी आजा (शारीरिक अंगों) तक के रहस्यों को खोज निकाला । इल्म की इतनी शाखें (शाखाएं) बना डालीं कि किसी एक इंसान के लिए इन सब का मुताअला (अध्ययन) मुमकिन ही नहीं है । लेकिन अफसोस का मकाम ये है कि इंसान जैसे जैसे इल्म हासिल करता चला गया वो इस कायनात के खालिक ओ मालिक और कारखाना–ए–कुदरत का निजाम संभालने वाली हस्ती को भूलता चला गया । हालांकि होना ये चाहिए था कि इस कायनात में मौजूद बेपनाह कुदरती मनाजिर और अक्लो खिरद को हैरान कर देने वाले लातादाद कमालात को देख कर इंसान खुदा की कुदरत और उसकी अजमत का ऐतराफ करता मगर उसने इसका उलट किया । लेकिन ऐसा हुआ क्यूँ ?शायद ऐसा इसलिए हुआ कि इंसान ने इन तमाम साइन्सी मालूमात और इजादात को अपना कमाल जान लिया। वो ये भूल गया कि दरअसल ये कमाल उसका नहीं है बल्कि वो तो एक अजीमुश्शान और बाकमाल खुदा की बनाई हुई बाकमाल दुनिया के हैरतअंगेज निजाम का सिर्फ मुशाहिदा कर रहा है और उसके निजाम को समझ कर मोटी मोटी किताबों में दर्ज कर रहा है । दरअसल कमाल ये नहीं है बल्कि कमाल तो इस हैरतअंगेज निजाम के बनाने वाले का है ।

कमाल ये नहीं है कि हमने **Embryology** की खोज की और उस पर रिसर्च की । कमाल ये है कि आखिर मां के रहम में ये सब तख्लीकात किसके हुक्म से अमल में आ रही हैं ? कमाल ये नहीं कि हमने परमाणु को तोड़ कर उससे कसीर मिकदार में तवानाई (ऊर्जा) हासिल करना सीख लिया है बल्कि कमाल ये है कि इन परमाणुओं में इतनी कसीर तवानाई रखी किसने ? कमाल ये भी नहीं है कि हम चाँद और मंगल पर हो आये बल्कि कमाल ये है कि चाँद और मंगल बनाए किसने ? और उन्हें अपने अपने मदार (व्इपज) में घुमा कौन रहा है? ये बात बड़ी नहीं है कि हमने अपने खेतों को सींचने के लिए नहरें और जोतने के लिए ट्रेक्टर और फसल काटने के लिए मशीनें और फसलों को लाने ले जाने के लिए ट्रकों को इजाद कर लिया बल्कि बड़ी बात ये है कि वो कौन है जो एक बेजान बीज से एक जानदार दरख्त पैदा करके वापिस उस जैसे हजारों लाखों बीज पैदा कर देता है ?

दरअसल तालीम का जो सबसे आला मकसद है, वो है Understanding यानि समझ पैदा करना और फिर उसके मुताबिक अपने व्यवहार में परिवर्तन करना। किसी हकीकत (तथ्य) को जान लेना या मालूम कर लेना सिर्फ Information यानि सूचना और जानकारी भर है इल्म नहीं । इल्म दरअसल ये है कि इंसान जानने की कोशिश करता कि वो जिस जबरदस्त और हैरतअंगेज दुनिया में रहता है और जिसकी अश्या और जिसके निजाम पर सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी रिसर्च कर रहा है उसका खालिक ओ मालिक कौन है ? मालूम करने की कोशिश करता कि इतने अजीम निजाम को कायम करने वाली, इसे चलाने वाली और एक मुद्दत–ए–मुतअय्यिना के बाद खत्म कर देने का दावा करने वाली जात कौनसी है ?

कुरआन–ए–करीम में अल्लाह रब्बुल इज्जत ने ये ये दावा पेश किया है । दुनिया में आज तक किसी ने इस निजाम को बनाने, चलाने और एक मुद्दत के बाद खत्म कर देने का दावा नहीं किया । अल्लाह के अलावा किसी हस्ती ने इस निजाम को बनाने और कायम रखने का मकसद बयान नहीं किया । अब हम इंसानों का ये फर्ज है कि हम इस जानिब अपनी तवज्जो करें और देखें कि ये किताब कुरआन क्या कहती है ? और इस कायनात का खुदा क्या इर्शाद फरमाता है ? तब तो हमारी समझदारी और अक्लमंदी साबित होती है वरना हम में और नाकिसुल–अक्ल जानवरों में कोई फर्क नहीं ।
आपके हाथों में जो किताब इस वक्त है वो दरअसल खुदा के दावे को आपके सामने उसी की आयात के जरिये से पेश करती है । इस किताब में बताया गया है कि रब की पहचान क्यूँ जरूरी है ? रब की सिफअते कुदरत, सिफअते तखलीक, सिफअते रज्जाकियत और सिफअते इल्म को कुरआनी आयात के जरिये पेश किया गया है और आखिर में उस सच्चे रब की तालीमात का मुख्तसर तजकिरा भी पेश किया गया है ।

मुझे उम्मीद है कि सोचने और समझने की सलाहियत वाला जेहन और एक हस्सास दिल रखने वाला हर शख्स, इस किताब को पढ़कर अपने रब की पहचान और उसकी मआरिफत को जरूर हासिल करेगा । **इंशाअल्लाह**

अकमल नईम सिद्दीकी
जोधपुर (राजस्थान)

कुछ अपनी बात-हुसैन अहमद ''तरब''

इस किताब की तस्नीफ का मक़सद किसी भी धर्म, किसी भी मज़हब, मसनद या फिरक़े की बेजा तन्क़ीद या बेवजह मुख़ालिफत करना नहीं है बल्कि तमाम इन्सानों की रहनुमाई और हिदायत के लिये सच्चे रब की तरफ से नाज़िल की गई आख़री आसमानी किताब **''क़ुरआन–ए–अज़ीम''** की रोशन आयतों के पर्दे में छुपे हुये उन हकाइक़ को नये सिरे से उजागर करना है तवील ग़फ़लत के नतीजे में दिल व दिमाग़ से महव हो गये हैं । इन्सान उन हक़ाइक़ को भूलकर ग़लत राहों की तरफ मुड़ गया है और सीधे रास्ते को छोड़ बैठा है ।

यह किताब अगर पढ़ने वालों को अपने वाहिद और सच्चे रब की हकीक़त समझने में कामयाब हो गई तो मेरे लिये यह उस रब–ए–अज़ीम का इनआम होगा जिसी तौफ़ीक़ से इस किताब की तसनीफ का काम तक्मील तक पहुच सका ।

नाचीज़
हुसैन अहमद तरब
जोधपुर (राजस्थान)

सच्चे रब को पहचानना क्यों ज़रूरी है ?

तारीख़ इस बात की शाहिद है कि दुनिया में इन्सानों की गुमराही का अहम सबब अपने हक़ीक़ी रब को न पहचानना रहा है। जिस तरह एक क़ाफ़िला ग़लत रहनुमा के इन्तिख़ाब की वजह से अपनी मंज़िले मक़्सूद से भटक जाता है उसी तरह इन्सान ग़लत चीज़ को अपना रब क़रार देकर अपनी पूरी ज़िन्दगी ज़ाया कर देता है। इसलिये दुनिया में इन्सान का फ़र्ज़ है कि वह अपने सच्चे रब को अक़्लो फ़हम की रोशनी में पहचानकर उसकी फ़र्मांबरदारी में अपनी ज़िन्दगी गुज़ारे ताकि दुनिया व आख़िरत में उसे कामयाबी हासिल हो। दुनिया के तमाम इन्सानों की हिदायत व रहनुमाई के लिये नाज़िल की जाने वाली आसमानी किताब कुरआने हकीम में सच्चे रब की वह तमाम सिफ़ात खोल खोलकर बयान कर दी गई हैं जिनमें ग़ौरो फ़िक्र करने के बाद झूठे मअ़बूदों की हक़ीक़त का पता चल जाता है। चाँद, सूरज, सितारे, पेड़, मूर्ति, मज़हबी पेशवा, पैग़म्बर, फ़रिश्ते और इन्सानी नफ़्स वग़ैरह को इलाह और रब का दर्जा देकर बहुत सी क़ौमें हलाकत में पड़ गईं।

बहैसियत इन्सान तअ़स्सुब और जांनिबदारी से ऊँचा उठकर कुरआन के इल्मी सूरज की किरनों से अपने दिलो दिमाग़ को रोशन करके हक़ और बातिल, सही और ग़लत, सच और झूठ के फ़र्क़ को समझने की कोशिश करें। आइए! कुरआने करीम के मज़बूत दलाइल की रोशनी में हम देखें कि इन्सान का हक़ीक़ी रब कौन है ? उसकी क्या सिफ़ात है ? उसकी क्या तालीम है ? उसकी तालीम को मानने और न मानने वालों का नतीजा क्या होता है ? आईये जानते हैं कि कुरआने करीम हक़ीक़ी रब की कौन कौन सी सिफ़ात के बारे में हमें बताता है और इस सिफात को जानकर हक़ीक़ी रब को पहचानने की कोशिश करते हैं ।

सच्चे रब की सिफ़त-ए-तख़्लीक़

सच्चा रब वह है जो अश्या की तख़्लीक़ में बेमिसाल हो। जो कुछ भी पैदा न कर सके वह रब नहीं हो सकता।

सूरह बक़रह आयत नम्बर 29 में है,
''वही है जिसने ज़मीन पर पाई जाने वाली हर चीज़ को तुम्हारे लिये पैदा किया फिर आसमान की तरफ़ इरादा किया और सात आसमानों को ठीक तौर पर पैदा कर दिया और वह हर चीज़ का इल्म रखता है।''

इस आयत से मालूम हुआ कि ज़मीन की हर चीज़ और आसमानों को बनाने वाला वही अल्लाह है। उसने तमाम चीज़ें हमारे फ़ायदे के लिये पैदा की हैं और वह उनका पूरा पूरा इल्म रखता है। उनसे किसी भी हाल में बेख़बर नहीं इसलिये वही इन्सानों का सच्चा रब कहलाने का मुस्तहिक़ है।

सूरह बक़रह आयत नम्बर 228 में है,
'तलाक़ दी हुई औरतों के लिये हलाल नहीं कि जो कुछ अल्लाह नेउनके रहमों में पैदा किया उसको छुपाएँ।''

आयत के बलीग़ अल्फ़ाज़ साबित कर रहे हैं कि औरतों के रहम में सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की कुदरत से ही हमल ठहरते हैं। टेस्ट ट्यूब बेबी का तजुर्बा करने वाले साईन्सदां बड़ी ग़लत फ़हमी में मुब्तला हो गए और उनके तजुर्बे से मुतास्सिर होने वाले भी नादानी का शिकार हो गए। ग़ौर करने का मक़ाम है कि ट्यूब में माद्दा मन्विया के बग़ैर कोई बच्चा पैदा नहीं होता और माद्दा मन्विया की तख़्लीक़ ज़मीन से पैदा होने वाली मुख़्तलिफ़ ग़िज़ाओं के इस्तेमाल के बाद आदमी के जिस्म में सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की कुदरत से होती है। इसलिए ट्यूब में पैदा होने वाले बच्चों का असली ख़ालिक़ तो अल्लाह तआ़ला ही हुआ।

सूरह निसाअ आयत नम्बर 1 में है,
''ऐ लोगों अपने रब से डरो जिसने तुमको एक जान से पैदा किया और उसी जान से उसका जोड़ा पैदा किया और उन दोनों से बहुत मर्द और औरतें ज़मीन में फैला दिये और डरते रहो अल्लाह से जिसका वास्ता देकर तुम आपस में सवाल करते हो और क़िरबतदारों से ख़बरदार रहो। बेशक तुम पर अल्लाह निगहबान है।''

आयत में तमाम इन्सानों को उनके रब से डराया गया है जो इस बात की दलील है कि सबका रब एक ही है। उस अकेले रब के अ़लावा जो इन्सान दूसरे को अपना रब क़रार देगा वह ग़लती कर जाएगा और उस एक ग़लती की वजह से उसकी सारी ज़िन्दगी ग़लत़ राह पर लग जाएगी और उसे ऐसा नुक़्सान उठाना पड़ेगा जिसकी तलाफ़ी मुम्किन न होगी। सवाल यह पैदा होता है कि आख़िर वह रब कौन है? कोई मूर्ति, कोई मज़ार, कोई क़ब्र, कोई पत्थर, कोई पेड़, कोई मज़हबी पेशवा, कोई पीर और कोई पैग़म्बर? इन्सान किसे अपना रब माने? आयत के आगे के अल्फ़ाज़ वज़ाहत कर रहे हैं कि जिसने आदम व ह़व्वा को अपनी कामिल क़ुदरत से पैदा करके उनके ज़रिये तमाम इन्सानों की नस्ल चलाई। वही रब बनाये जाने का मुस्तहिक़ है और वो रब अल्लाह है जिसके नाम का वास्त़ा देकर सब एक दूसरे से सवाल करते हैं, क़समें खाते हैं और मामलात करते हैं। वही अल्लाह हम सब पर निगहबान है। इसलिए तमाम इन्सानों को उसी से डरते रहना चाहिए और अपने किराबतदारों का ह़क़ अदा करना चाहिए।

सूरह अन्आ़म की आयत नम्बर 1 में है,
''तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिये, जिसने आसमानों और ज़मीन को बनाया और अंधेरे और उजाले को पैदा किया। फिर भी नाशुक्री करने वाले दूसरों को अपने रब के बराबर ठहराते हैं।''

आयत से वाज़ेह़ है कि किसी और को अपने रब के बराबर क़रार देना इन्सान की सबसे बड़ी नासमझी और बेवक़ूफ़ी है। क्योंकि सब कुछ पैदा करना उसकी सिफ़त है। आसमान, ज़मीन, अंधेरे और उजाले को पैदा करने वाले के बराबर क्या कोई और हो सकता है? आख़िर इन्सान कहाॅं भटक रहा है? क्या किसी मूर्ति ने या मज़ार वाले ने उसे ये नेअ़मतें अ़ता की हैं?''

सूरह अन्आ़म आयत नम्बर 73 में है,
''आसमानों और ज़मीन को वह ईजाद करने वाला है, उसका कोई बेटा कैसे हो सकता है? ह़ालाॅंकि उसकी कोई बीवी नहीं और उसी ने हर चीज़ बनाई है और वह हर चीज़ का इ़ल्म रखता है।''

आयत बता रही है जिसका आसमानों और ज़मीन के बनाने में कोई हिस्सा नहीं और जो बीवी बच्चों वाला हो, वो रब नहीं हो सकता। उसकी पूजा करना दानिशमन्दी की बात नहीं। जो लोग दुनिया से गुज़र जाने वाले अफ़राद की मूर्तियाँ और मज़ारे बनाकर उनकी पूजा कर रहे हैं उनकी इ़बादत में लगे हुए हैं,

उनको सज्दे कर रहे हैं, उनसे दुआ़एँ मांग रहे हैं, उनसे डरे हुए हैं, उनसे उम्मीदें वाबस्त़ा किये हुए हैं, रात दिन उनकी तारीफ़ों में खोये हुए हैं आख़िर वो कौनसे रास्ते पर जा रहे हैं? क्या यह रास्ता उनको दोज़ख़ की आग से बचाकर जन्नत के लहलहाते बाग़ात तक पहुॅंचा देगा? सोचें! ख़ूब सोचें! ग़ौर करें! ख़ूब ग़ौर करें! और अपनी ग़लती को पहचानकर उस ह़क़ीक़ी रब की इ़बादत में लग जाएँ जो उनका और सारी कायनात का रब है और हर चीज़ से ख़बरदार भी है, जिसका न कोई बेटा है, न बीवी।

सूरह अन्आ़म आयत नम्बर 102 में है,
''वही अल्लाह तुम्हारा रब है, उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं है। उसने तमाम चीज़ों को पैदा किया है तो तुम उसी की इ़बादत करो और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।''

आयत नम्बर 101 में जिस रब की सिफ़ात बयान की गई थीं मौजूदा आयात में उसी रब को अल्लाह का नाम दिया गया है। इस आयत से मुकम्मल तौ़र पर वाज़ेह़ हो जाता है कि अल्लाह ही हर इन्सान का रब है। वह सिर्फ़ मुसलमानों का ही रब नहीं है। इस ज़मीन पर पाये जाने वाले तमाम इन्सान ख़्वाह किसी भी मज़हब को अपनाये हुए हों वह उन सबका रब है। यह और बात है कि सोच की ग़लती से दीगर मज़ाहिब वालों ने अपने अपने रब अलग बना लिये हों। जब वही सच्चा रब है तो मअ़बूद भी वही है। पूजा भी उसी की होनी चाहिए। सज्दे भी उसी के लिये वक़्फ़ होने चाहिए। हमारे ख़ौफ़ और उम्मीद का वही मर्कज़ होना चाहिए। सोचें और ग़ौर करें! सच्चे रब को पहचानें। फिर दुनिया से बेख़ौफ़ होकर उसका दामन पकड़ लें।

सूरह आ़राफ़ आयत नम्बर 54 में है,
''बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिसने छः दिन में ज़मीन और आसमानों को पैदा किया। फिर अ़र्श पर क़रार पकड़ा। रात को दिन पर ओढ़ाता है। इस त़रह़ कि दिन–रात के पीछे दौड़ता हुआ लगा आता है और उसी ने सूरज, चाँद और तारे पैदा किये, जो उसके हुक्म के ताबेदार हैं। ख़बरदार! पैदा करना और हुक्म देना उसका ह़क़ है। वह अल्लाह बड़ी बरकत वाला है, जो सारे जहानों का रब है।''

आयत वाज़ेह़ कर रही है कि तमाम इन्सानों का रब अल्लाह ही है और इसकी सबसे बड़ी दलील यह है कि उसी ने आसमानों और ज़मीन को छः दिन में

पैदा किया। रात दिन की शक्ल में उसकी हज़ारों कुदरतों के नमूने बिखरे पड़े हैं मगर नासमझ इन्सान अपने उस सच्चे और अज़ीम रब को छोड़कर दूसरे झूठे और मनगढ़त रबों के सामने माथा टेककर अपनी ज़िन्दगी के क़ीमती सरमाये को बर्बाद करने पर तुले हुए हैं। आयत के आख़िरी अल्फ़ाज़ इस हक़ीक़त से पर्दा उठाने के लिये काफ़ी हैं कि अल्लाह सिर्फ़ मुसलमानों का रब नहीं है बल्कि सारे जहानों का रब है और वह बड़ी बरकत वाला है। सारे जहान में सिर्फ़ मुसलमान ही नहीं रहते। हिन्दू, सिख, ईसाई, यहूदी वग़ैरह भी रहते हैं और फिर उन मज़ाहिब वालों में भी अनगिनत फ़िरक़ों के इन्सान हैं। उन सबका एक ही रब है। अब अगर कोई दूसरे को रब बनाकर उसकी पूजा में मसरूफ़ है तो ऐसा करने का उसको मुकम्मल इख़्तियार तो है मगर उसे अक़्लमंद नहीं कहा जा सकता और न ही यह दावा किया जा सकता है कि वह दोज़ख़ के भड़कते हुए शोलों से भी महफ़ूज़ रहेगा। आह! आज के इन्सान की नादानी भी कितनी ख़तरनाक नादानी है जो उसे अपने रब से दूर रखकर उसे भड़कती हुई आग की तरफ़ दौड़ाये लिये जा रही है और वह बिलकुल बेख़ौफ़ है।

सूरह यूनुस आयत नम्बर 3 में है,
''बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिसने छः दिन में आसमानों और ज़मीन को बनाया और फिर अर्श पर क़ायम हुआ। वो काम की तदबीर करता है। उसकी इजाज़त के बग़ैर कोई किसी के लिये सिफ़ारिश नहीं कर सकता। वो अल्लाह ही तुम्हारा रब है। इसलिए उसी की इबादत करो। क्या तुम ध्यान नहीं देते?''

इससे पहले सूरह आराफ़ की आयत 54 का आग़ाज़ भी इस सूरत जैसे इब्तिदाई अल्फ़ाज़ से ही हुआ था। एक बात को सूरतों में एक जैसे अल्फ़ाज़ के साथ बयान करना ये बता रहा है कि बात कितनी अहमियत रखती है। छः दिन में आसमानों और ज़मीन की तख़्लीक़ और अर्श बनाकर उस पर क़ायम होना कितना ज़बरदस्त काम है और जिसने यह काम अंजाम दिया वही इस दुनिया का रब है। बिला शुब्हा वही अल्लाह सबका रब है तो सबको उसी की इबादत करनी चाहिए। दुनिया का कोई इन्सान यह नहीं मानता कि, ज़मीनो आसमान को पैदा करने वाला कोई मूर्ति, साहिबे मज़ार या कोई और है मगर फिर भी वह पूजा का हक़ उनको देकर अपनी ही बात का मज़ाक़ उड़ाता है। इसीलिए आयत के आख़िर में कहा गया कि क्या तुम ध्यान नहीं करते? ध्यान करने और सोचने का मौक़ा मौत से पहले पहले ही है। ज़िन्दगी की जो मुद्दत इन्सान को मिली है उसमें ध्यान करने का वक़्त निकालकर सोचे और हक़ीक़त तक पहुँचने की कोशिश करे। जो

ऐसा करेगा तो उसका ही फ़ायदा होगा और रेत को पानी समझकर उसके पीछे अपनी ज़िन्दगी बर्बाद करने से बच जाएगा।

सूरह यूनुस आयत नम्बर 5 में है,
''वही है जिसने सूरज को रोशन और चांद को पुर नूर बनाया और चांद के लिये मंज़िलें मुक़र्रर कर दीं कि बरसों की गिनती और हिसाब का इल्म हासिल करो। अल्लाह ने जो कुछ भी पैदा किया है वह अक़्लमंद लोगों के लिये निशानी है और अपनी आयात खोल खोलकर बयान करता है।''

इन्सानों! सोचो और ग़ौर करो। आसमानों और ज़मीन की तख़्लीक़ के साथ साथ आसमान पर चांद की तख़्लीक़ और चांद की मंज़िलों का तक़र्रुर कितना ज़बरदस्त काम है। क्या कोई साबित कर सकता है कि इतनी बड़ी तख़्लीक़ का दावा अल्लाह के सिवा किसी और ने किया हो? और न सिर्फ़ दावा किया हो बल्कि उसकी दलील भी पेश की हो। यह दावा सिर्फ़ कुरआने करीम में अल्लाह तआला ही ने किया है। एक जगह नही मुख़्तलिफ़ जगहों पर मुतफ़र्रिक़ आयात में। जिससे वाज़ेह हो जाता है कि अल्लाह के सिवा किसी और को रब समझकर उसकी पूजा करने वाले ग़लती कर रहे हैं। और उस ग़लती का एहसास भी उनको नहीं। अफ़सोस! सद अफ़सोस! शैतान ने उनको बहकाकर ऐसे रास्ते पर डाल दिया जो तबाही और बर्बादी का रास्ता है। काश! आज के नादान इन्सान सोचें।

सूरह यूनुस आयत नम्बर 6 में है,
''बेशक रात और दिन के बदलने में और जो कुछ अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन में पैदा किया है उसमें डरने वालों के लिये निशानियाँ हैं।''

आह! आज ग़ाफ़िल इन्सान इस आयत के होते हुए जानवरों जैसी ज़िन्दगी गुज़ार रहा है। उसे खाने–पीने, सोने और अपनी नफ़सानी ख़्वाहिशात को पूरा करने के सिवा और कुछ नज़र नहीं आता। रात का दिन में बदल जाना। दिन का रात में बदल जाना। उसके लिये कोई अहमियत नहीं रखता। रात और दिन की नेअमतों से वह फ़ायदा उठाना तो जानता है मगर रात और दिन जिसकी कुदरत से बनते हैं और आसमानों और ज़मीन में जो कुछ अल्लाह ने पैदा किया है उस पर ग़ौर करने की उसको फ़ुर्सत नहीं। आज के इन्सान की इससे बड़ी बदनसीबी क्या होगी कि वह अपने ख़ालिक़ और अपने रब से भाग रहा है। जिसने उस पर

नेअ़मतों की बारिश कर रखी है। नेअ़मतें उसकी इस्तेमाल करता है और सज्दे दूसरों के दरों पर करता है। गुण दूसरों के गाता है। तारीफ़ें दूसरों की करता है। क्या यह आज के इन्सान की खुली हुई एहसान फ़रामोशी नहीं है? क्या इस जुर्म की सज़ा हमेशा के लिये भड़कती हुई आग के सिवा और कुछ मुनासिब है? इस एहसान फ़रामोशी की वजह है अपने रब से निडर हो जाना। दिल से उसके डर का निकल जाना। इन्सानों! अपने रब का ख़ौफ़ अपने दिल में जगाओ ताकि तुम्हारे दिल की आंखें खुल जाएँ और तुम्हें अपनी ख़तरनाक ग़लती का एहसास हो जाए। कुरआन का इल्म हासिल करो। यह तुम्हारी अपनी किताब है। इसे सिर्फ़ मुसलमानों की किताब न समझो। यह हर इन्सान की हिदायत के लिये उतारी गई है।

सूरह हूद की आयत नम्बर 7 में है,
''और वही है जिसने छः दिन में ज़मीन व आसमान को बनाया ताकि आज़माए कि तुममें से कौन अच्छे अ़मल करता है।''

आसमानों और ज़मीन को बेमक़्सद पैदा नहीं किया है। आयत से मक़्सद भी वाज़ेह है कि खुदा देखना चाहता है कि अपने रब पर ईमान लाकर कौन अच्छे अ़मल करता है, उसकी इबादत में अपनी ज़िन्दगी गुज़ारता है या दूसरे के दर पर सज्दे लुटाता है? सिर्फ़ खाने पीने और नफ़्सानी ख़्वाहिशात को पूरा करने वाले अस़ल मक़्सद से ग़ाफ़िल है। इसलिये उनको अपने बुरे अ़मल को देखने के लिये भी तैयार रहना चाहिए। जो जैसा करता है उसे वैसा ही भरना पड़ता है।

सूरह इब्राहीम की आयत नम्बर 19 में है कि,
''क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन व आसमान को ह़क़ के साथ बनाया है। अगर वह चाहे तो तुम्हें फ़ना करके तुम्हारी जगह नए लोग पैदा कर दे।''

सूरह नह़ल की आयत नम्बर 3 से 8 तक अल्लाह की स़िफ़त तख़्लीक़ मुअस्सर पीराये में मुफ़स्सल त़रीक़े पर बयान की गई है, इर्शादे रब्बानी है,
''उसने आसमान व ज़मीन को ह़क़ के साथ बनाया। वह लोगों के शरीक बतलाने से बरी है। उसने आदमी को एक बूंद से बनाया। फिर वह खुला झगड़ालू बन गया। उसने तुम्हारे लिये चौपाये बनाए। उनमें तुम्हारे लिये सर्दी और गर्मी के सामान है और बहुत से फ़ायदे हैं। और उनमें से बहुत

इंसान अपने रब को पहचान

से चौपाये का गोश्त तुम खाते हो। और उनमें तुम्हारे लिये एक शान है। जब तुम शाम को चराकर लाते हो और जब सुबह़ को चराने ले जाते हो और वह चौपाये तुम्हारे बाक़ी चीज़ों को उठाकर उन शहरों तक ले जाते हैं जहाँ तुम मुशक़्क़त के बग़ैर नहीं पहुँच सकते थे। बेशक तुम्हारा रब तुम पर बड़ा मेहरबान है और रह़म करने वाला है। उसने घोड़े, ख़च्चर और गधे पैदा किये जिस पर सवारी करना तुम्हारे लिये ज़ीनत का सबब हैं और वह ऐसी चीज़ें भी पैदा करता है जिनको तुम नहीं जानते।''

सूरह नह़ल की आयत नम्बर 80 और 81 में भी सच्चे रब की स़िफ़त तख़्लीक़ को दिल में उतर जाने वाले उ़मदा और गहरे अल्फ़ाज़ में बयान किया गया है, इर्शादे बारी तआ़ला है,
''और अल्लाह ने तुम्हारे बसने के लिये तुम्हारे घर बनाए और तुम्हारे लिये चौपाये की खाल से ऐसे घर बनाये हैं जो सफ़र और क़ियाम में तुम्हारे लिये हल्के रहते हैं और भेड़ों, ऊँटों और बकरियों के बालों से इस्तेमाल की चीज़ें एक मुक़र्ररा वक़्त के लिये बनाई हैं। और अल्लाह ने अपनी बनाई चीज़ों के साये तुम्हारे लिए ही बनाए हैं और तुम्हारे लिये पहाड़ों के अंदर छुपने के लिये जगहें बनाई हैं। और तुम्हारे लिए ऐसे कुर्ते बनाए हैं जो गर्मी और लड़ाई के मौक़े पर तुम्हारा बचाव करते हैं। इस तरह़ वह अपनी नेअ़मतें तुम पर पूरी करता है। ताकि तुम उसके फ़र्मांबरदार बन जाओ।''

इन्सानों को उनके ही फ़ायदों के लिए सच्चे रब की तरफ़ से अ़ता की गई कितनी ज़बरदस्त नेअ़मतें और इन्सानों की तरफ़ से उनकी नाशुक्री काश! कि आज के इन्सान सोचें वो किस राह पर जा रहे हैं। फ़ायदा तो उठाना अल्लाह की नेअ़मतों से और पूजा करनी उनकी जिनके इख़्तियर में कुछ नहीं और जो रत्ती बराबर भी नफ़ा नुक़्सान के मालिक नहीं हैं। अगर कोई ऐसा तस़व्वुर करता है तो यह सिर्फ़ उनका वहम है।

सूरह बनी इस्राईल की आयत नम्बर 99 में है कि,
''क्या इन्होंने नहीं देखा कि जिस अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को बनाया है वो तुम जैसी चीज़ों को पैदा करने की कुदरत रखता है और उसने तुम्हारे लिये एक मुद्दत मुक़र्रर कर दी है जिसमें कोई शुब्हा नहीं। इसके बावजूद ज़ालिम लोग इन्कार किये बग़ैर नहीं रहते।''

सूरह अम्बिया की आयत नम्बर 33 में है,
"और वही है जिसने रात–दिन, सूरज और चांद को बनाया। सब अपने अपने दायरे में घूमते हैं।"

लोगों! ग़ौर करो कि रात–दिन का उसकी क़ुदरत से बनाया जाना, चाँद और सूरज की तख़्लीक़ उसकी कितनी बड़ी कारीगरी है। फिर क्या वो पूजा के लायक़ भी हैं जिनकी तुम आज पूजा कर रहे हो? जिन–जिनके सामने माथा टेक रहे हो? जिन जिनके ख़ौफ़ से काँप रहे हो? जिन जिनसे अपनी उम्मीदों को पूरा कराने की उम्मीद लगाये बैठे हो? क्या उन्होंने दिन और रात को बनाया? या चाँद–सूरज को पैदा किया? अगर यह साबित हो जाए तो वाक़ेई सबको उनकी पूजा में लग जाना चाहिए। क्योंकि इस सूरत में पूजा के हक़दार वही होंगे। मगर उसको आज तक कोई साबित नहीं कर सका। और न क़यामत तक साबित कर सकता है। इसलिए सबूत के बग़ैर अल्लाह को छोड़कर किसी और की पूजा करने वाले ग़लती कर रहे हैं और इस ग़लती का नुक़सान उन्हीं को पहुँचेगा। ग़लती करने वाले को चाहिए कि वह अपनी इस्लाह की तरफ़ मुतवज्जह हों। इसी में उनका फ़ायदा है।

सूरह नूर की आयत नम्बर 45 में है,
"और अल्लाह ने हर जानदार को पानी से पैदा किया। फिर उनमें कोई अपने पेट के बल चलता है। कोई दो पैर पर और कोई चार पैर पर चलता है। अल्लाह जो चाहता है करता है। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।"

इस अ़ज़ीम आयत में ज़मीन पर पाये जाने वाले तमाम जानदारों की तख़्लीक़ का सिलसिलेवार बयान है। इन तमाम इन्सानों, हैवानों, चरिन्दों, परिन्दों, दरिन्दों और कीड़े मकोड़ों की तख़्लीक़ करने वाली ज़ात–ए–अ़ज़ीम सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की ज़ात है जिसने उनमें पेट के बल रेंगने और दो पैर और चार पैर पर चलने की स़लाहियत अ़ता फ़र्माई है और उन सबको पानी से पैदा किया है।

सूरह फ़ुरक़ान की आयत नम्बर 54 में है,
"और वही है जिसने पानी से आदमी को बनाया और उसका नसबी सिलसिला क़ायम किया और उसके लिये ससुराल बनाई। और तेरा रब हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।"

सूरह अ़न्कबूत आयत नम्बर 44 में है,
"अल्लाह ने हक़ के साथ आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और उसमें मानने वालों के लिए निशानी है।"

आसमानों और ज़मीन को बनाने वाला अल्लाह के सिवा और कोई नहीं है इसलिए वही तमाम इन्सानों का रब है और सिर्फ़ उसी की ही इबादत करनी चाहिए। उसी से अपने दिल का रिश्ता जोड़ना चाहिए। और तमाम झूठे खुदाओं से अपना नाता तोड़ लेना चाहिए। यही हिम्मत का काम है। यही है दोज़ख़ की आग से बचने और जन्नत के लहलहाते बाग़ों और उसकी दूसरी ला–ज़वाल नेअ़मतों का ज़रिया।

सूरह अ़न्कबूत आयत 61 में है,
"और अगर तुम उन लोगों से पूछो कि आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाला और चाँद–सूरज को मुसख़्ख़र करने वाला कौन है? तो वो जवाब देंगे कि अल्लाह है फिर इनसे कहो कि वह कहाँ से उलट जाते हैं।"

इस आयत में उन लोगों की नफ़्सियात को बयान किया गया है जो जुबान से तो यह कहते हैं कि सबका पैदा करने वाला अल्लाह है, मगर वो पूजा दूसरों की करते हैं, एहकाम दूसरों के मानते हैं, फ़र्मांबरदारी दूसरों की करते हैं। सच्चाई तो यह है जब अल्लाह को ख़ालिक़ मान लिया तो पूजा और इबादत भी उसी की करो। न उसके अ़लावा किसी और की इबादत करो और न ही उसके अ़लावा किसी और को पूजो। सबसे कटकर उसी से जुड़ जाना तौहीद है और तौहीद दीन की बुनियद है। बुनियाद कमज़ोर होगी तो इमारत भी कमज़ोर होगी।

सूरह रूम की आयत 8 में है,
"क्या ये लोग अपने जी में ग़ौर नहीं करते कि अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन में और उनके बीच पायी जाने वाली चीज़ों को ठीक ठीक और एक मुक़र्ररा मुद्दत तक के लिये बनाया है। और बहुत से लोग अपने रब से मिलने की बात नहीं मानते।"

और हर दौर की तरह इस दौर में भी अनगिनत इन्सानों की सीधी राह से भटक जाने और एक सच्चे रब को छोड़कर दूसरों को रब मानकर उनकी इबादत में अपनी ज़िन्दगी की क़ीमती घड़ियों को ज़ाया करने की वजह यह है।

देखा–देखी काम करना। ग़ौरो फ़िक्र से काम न लेना। इन्सान फ़ुर्सत के लम्हे निकालकर तंहाई में सोच विचार करे तो हक़ीक़त खुद ही उसकी निगाहों पर खुल जाए। आज की भागदौड़ की ज़िन्दगी में आपाधापी के माहौल में किसी को हक़ की तलाश ही नहीं रही। जो दूसरों को करते हुए देख रहे हैं वही हम भी कर रहे हैं। उसी की धुन है। उसी का रिवाज है। उसी माहौल में जिन लोगों ने ग़ौरो फ़िक्र से काम लिया वह संभल गए। और उन्हें अपनी ग़लती का पता चल गया। वह अपने रब से जुड़ गए। मुबारक है ऐसे लोग। बशारत है उनके लिए कि भड़कते शोलों से मौत के बाद उनका वास्ता नहीं पड़ेगा। जन्नत के बाग़ों में वो इत्मिनान की ज़िन्दगी गुज़ारेंगे और मौजूदा ज़िंदगी में उनको चैनो सुकून मयस्सर होगा। यह उनके रब का वादा है जो पूरा होकर रहेगा।

सूरह रूम की आयत नम्बर 20 से 22 तक सच्चे रब की सिफ़ते तख़्लीक़ का बयान बार बार पढ़ने और ग़ौर करने के क़ाबिल है,

''और उसकी निशानियों में से है कि उसने तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर अब तुम इन्सान बनकर ज़मीन पर फैले हुए हो और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हारे वास्ते तुम्हीं में से तुम्हारे जोड़े बनाये जिनकी क़ुर्बत से तुम चैन हासिल करते हो और उसी ने तुम्हारे बीच प्यार और मुहब्बत भी पैदा कर दी। इसमें सोचने वालों के लिए निशानियाँ हैं और उसकी निशानियों में से यह कि उसने आसमानों और ज़मीन को बनाया और तुम्हारी ज़बानें और रंग मुख़्तलिफ़ बनाए। इसमें समझने वालों के निशानियाँ हैं।''

सूरह लुक़्मान की आयत नम्बर 10 में है,

''उसने बग़ैर सतूनों के आसमानों को बनाया, तुम उसको देखते हो। और ज़मीन पर पहाड़ो को गाड़ दिया ताकि वो तुमको लेकर झुक न जाए और ज़मीन पर बहुत से जानदार बिखेर दिये और हमने आसमान से पानी बरसाया फिर उसकी मदद से हर क़िस्म के उमदा जोड़े पैदा किये।''

यह अल्लाह की तख़्लीक़ है अब तुम मुझको दिखाओ जो इसके सिवा हैं (जिनकी तुम पूजा करते हो) उन्होंने क्या पैदा किया है? (हक़ीक़त में उन्होंने कुछ भी पैदा नहीं किया) बल्कि ज़ालिम लोग (दूसरों की पूजा करने वाले) साफ़ तौर पर भटक रहे हैं (ख़्वाह वह अपने आपको भटका हुआ न समझें) आज के इल्मी और साइन्सी दौर में भी बग़ैर किसी दलील के जो नासमझ लोग मूर्तियों को पूज

रहे हैं। मज़ारों के सामने सज्दे लुटा रहे हैं। मज़हबी पेशवाओं को अपना रब बनाते हैं। तअ़वीज़ गण्डे करने वालों के आगे पीछे फिर रहे हैं गोया कि उनकी क़िस्मतों को बनाने वाले वही हैं। ऐसे लोग बार बार क़ुरआने करीम की मुन्दरजा बाला आयात में ग़ौर करें और मर्दानगी से सबको ठोकर मारकर उसका दामन पकड़ लें जिसकी तख़्लीक़ के जलवे पूरी कायनात में बिखरे पड़े हैं।

सूरह सज्दा की आयत नम्बर 4 में है,

''अल्लाह है जिसने ज़मीनो आसमान को और उनके बीच में पाई जाने वाली तमाम चीज़ों को छः दिन में बना दिया और फिर अ़र्श पर क़ायम हुआ। उसके सिवा तुम्हारा कोई मददगार और सिफ़ारिशी नहीं है। क्या तुम ग़ौर नहीं करते?''

अल्लाह बार बार इस बात का दावा कर रहा है कि आसमानों और ज़मीन को और इनके बीच की चीज़ों को उसने छः दिन में पैदा किया। आज का इन्सान अल्लाह को छोड़कर जिनकी पूजा में मसरूफ़ हैं उनमें से किसी ने भी यह दावा नहीं किया फिर भी नादान उनके गुण गा रहे हैं और भेड़ों की तरह सबके सब भागे जा रहे हैं।

सूरह यासीन की आयत 36 में है,

''पाक ज़ात है उस अल्लाह की जिसने सब चीज़ों के जोड़े बनाए ख़्वाह ज़मीन से उगे हों। ख़्वाह खुद उनमें से हों और ख़्वाह उनमें से हों जिनकी उनको ख़बर भी नहीं।''

सूरह जुमर की आयत में है,

''उसने आसमानों और ज़मीन को ठीक ठीक पैदा किया।''

सूरह हामीम सज्दा की आयत 9 से 12 में है,

''इनसे कहो! क्या तुम उस अल्लाह को नहीं मानते जिसने दो दिन में ज़मीन को बनाया। और तुम उसके बराबर दूसरों को ठहराते हो। वह सारे जहानों का रब है। और उसने ज़मीन में भारी पहाड़ रख दिये जो उसके ऊपर है। और उसमें बरकत रख दी। और उसमें ख़ूराकें मुक़र्रर कर दीं और यह काम चार दिन में अंजाम दिया। सवाल करने वालों के लिए जवाब पूरा हुआ। फिर आसमान की तरफ़ बुलंद हुआ। और वह धुआँ हो रहा था। फिर आसमान और ज़मीन से कहा कि तुम दोनों ख़ुशी से आओ या मजबूर होकर। वो बोले ख़ुशी से आए। फिर उसने सात

आसमान बना दिये। दो दिन में और हर आसमान के लिए हुक्म उतारा। और आसमान को सबसे पहले सितारों से सजाया और महफ़ूज़ कर दिया। यह उस ज़बरदस्त और अ़लीम का मुक़र्रर किया हुआ है।''

सूरह जासिया की आयत नम्बर 22 में है,
''और अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ बनाया, ताकि हर किसी को अपनी कमाई का बदला मिले और उन पर ज़ुल्म न होगा।''

इस आयत से यह हक़ीक़त भी वाज़ेह हो गई कि ज़मीनो आसमान की तख़्लीक़ बेमक़्सद नहीं की गई। रब अपने बन्दों के अच्छे बुरे कामो का बदला देना चाहता है। इसी मक़्सद से आसमानों और ज़मीन को बनाया गया है क़यामत के दिन जब दुनिया के तमाम जानदार दोबारा अपने मौजूदा जिस्म के साथ ज़िन्दा किये जाएँगे तो उनके अच्छे कामों का बदला जन्नत और बुरे कामों का बदला दोज़ख़ की शक्ल में दिया जाएगा। इसलिये दुनिया में हर इन्सान को अपने अ़मल की पूरी पूरी आज़ादी दी गई है। जुम्हूरियत का सबसे बड़ा अ़लमबरदार इस्लाम है। किसी पर जबर करके उसका मज़हब तब्दील कराना ग़लत़ है। अपनी मर्ज़ी से सोचने–समझने के बाद कोई सच्चे रब की ख़ातिर मूर्तियों, मज़ारों, क़ब्रों और खुद अपने नफ़्स की पूजा छोड़ दे तो यह ग़ैर मुनासिब न होगा। दुनिया में ज़ोर ज़बरदस्ती से किसी को पूजा से रोकना, मज़ारों और क़ब्रों से सज्दा करने से रोकना, नफ़्सानी ख़्वाहिशात से रोकना, किसी का हक़ नहीं है। हर एक को अपने मज़हब और मस्लक पर चलने, हर एक को नेकी और बदी करने की आज़ादी है, मगर ग़लत़ कामों का नतीजा भुगतने के लिये हर इन्सान को तैयार रहना चाहिए। अगर हमने रब के इंतिख़ाब में ग़लती कर दी तो हमारी पूरी ज़िन्दगी बर्बाद होकर रह जाएगी। दुनिया की नेअ़मतें तो अच्छे–बुरे, सही और ग़लत़ हर तरह के आदमियों को मिलती रही हैं क्योंकि तमाम जानदारों को रिज़्क़ देने का वादा सच्चे रब ने किया है और वह अपने वादे के खिलाफ़ कभी कुछ नहीं करता। जिस तरह़ ज़हर और अमृत बराबर नहीं। ज़हर हलाक करता है और अमृत ज़िन्दगी बख़्शता है। मगर ज़हर पीने का इख़्तियार हर इन्सान को हासिल है। इसी तरह़ रब को पूजना और उसको छोड़कर दूसरों की पूजा करने का इख़्तियार भी इसको हासिल है। मगर दोनों का अंजाम एक जैसा नहीं हो सकता। सोचो और ग़ौर करो हमें सही रास्ता मिल जाएगा। भेड़ चाल से तुम भटक जाओगे।

सूरह अह़क़ाफ़ की आयत नम्बर 33 में है,
''क्या इन्होंने नहीं देखा वह अल्लाह जो आसमानों और ज़मीन को बनाने

से नहीं थका। वह मुर्दों को ज़िन्दा करने की क़ुदरत भी रखता है। क्यूँ नहीं। वह हर चीज़ पर क़ादिर है।''

जो इन्सान सिर्फ़ दुनियावी फ़ायदे हासिल करने की ख़ातिर अल्लाह को छोड़कर दूसरों की इबादत करने में लगे हुए हैं और मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होने को नहीं मानते, उन्हें इस आयत में ग़ौर करना चाहिए। आज के समाज में बुराई फैलने की अहम वजह यही तो है कि आज का इन्सान अपने रब से बेख़ौफ़ है और यह समझता है उसे मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होकर अपने कामों का हिसाब नहीं देना है। जब ज़मीनो आसमान बेमक़्सद नही पैदा किये गए तो। जब ज़मीनो आसमान को बनाने वाला मुर्दों को दोबारा ज़िन्दा करने की क़ुदरत रखता है तो इसी दुनिया की ज़िन्दगी को आख़िरी ज़िन्दगी समझ लेना इंतिहाई दर्जे की नासमझी है। सोचो और ग़ौर करो! अगर तुम दुनिया में एक सच्चा और पाक समाज बनाना चाहते हो तो क़ुरआन की इस आयत को आ़म करो। इसे खुद भी अपने दिल में उतारो। और न भूलो कि एक दिन तुम अपने तमाम झूठे खुदाओं को छोड़कर मरने के बाद अपने सच्चे रब के सामने हाज़िर होने वाले हो। इसलिए आने वाले कल के लिए आज ही से तैयारी शुरू कर देने में ही भलाई है।

सूरह नजम की आयत नम्बर 45 में है,
''और यह कि उसने नर और मादा की शक्ल में तुम्हें जोड़ा जोड़ा करके बनाया।''

सच्चे रब की तख़्लीक़ भी कितनी हिक्मत भरी है। नर भी पैदा किये और मादा भी। अगर सब जोड़े किसी शक्ल में पैदा न किये जाते तो जानदारों की नस्ल आगे कैसे चलती? दुनिया का गुलज़ार वीराने में बदल जाता। नाशुक्रे इन्सानों! अपने रब के एह़सानात भूलकर तुम किन अंधेरी राहों पर ठोकरें खा रहे हो।

सूरह रह़मान की आयत नम्बर 3 में है,
'उसने आदमी को बनाया' आदमी को बनाने का दावा सच्चे रब के सिवा आज तक किसी ने नहीं किया क्योंकि तमाम इन्सानों और चीज़ों का ख़ालिक़ वही है इसलिए उसके दर पर झुको। वरना कल क़यामत के दिन पछताओगे। इसी सूरह की आयत 41 में है, ''उसने आदमी को ठीकरे जैसी खनखनाती मिट्टी से पैदा किया।''

इसी सूरह की आयत 15 में है,
''उसने जिन्नों को आग की लपट से बनाया।'' इन्सान और जिन्नात को सच्चे रब ने वाज़ेह तौर पर बयान करके आगे आगाह कर दिया कि जो इन्सान उसके सिवा किसी और को रब बनाकर उसकी इबादत करेगा वह ग़लत राह पर जा पड़ेगा। इबादत का मुस्तहिक़ वही है जिसने सबको अपनी क़ुदरत से पैदा किया है। यह क़ुदरत अल्लाह के सिवा और किसी में नहीं है।

सूरह हदीद की आयत नम्बर 4 में है,
''वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिन में बनाया और फिर अ़र्श पर क़ायम हुआ।''

सूरह तग़ाबुन की आयत नम्बर 3 में है,
''उसने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ बनाया और तुम्हारी सूरत खींची फिर सूरत को कितना अच्छा बनाया।''

सूरह तलाक़ की आयत नम्बर 12 में है,
''अल्लाह वह है जिसने सात आसमानों और उतनी ही ज़मीनें बनाईं। उनके अंदर उसका हुक्म उतरता है ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है और अल्लाह ने अपने इल्म में हर चीज़ का अहाता कर रखा है।''

सूरह मुल्क की आयत नम्बर 2 में है,
''जिसने मौत और हयात को बनाया ताकि आज़माए कि तुममें से कौन अच्छे काम करता है।'' इस आयत से इन्सानी ज़िन्दगी का मक़सद वाज़ेह होता है। हर जानदार को ज़िन्दगी का मिलना और मौत से दो चार होना उसी की क़ुदरत और हुक्म से होता है। वही सच्चा रब है उसी की पूजा करनी चाहिए। वो ज़बरदस्त है। कुफ़ और गुनाहों की सज़ा भी दे सकता है और ग़फ़ूर है। तौबा करने वालों के गुनाहों को माफ़ भी कर देता है। इतनी आ़ला सिफ़ात वाली ज़ात ही हमारी इबादत और सज्दों की मुस्तहिक़ है।

इसी सूरह की आयत नम्बर 3 में है,
''जिसने एक के ऊपर एक सात आसमान बनाए।''

इंसान अपने रब को पहचान

सूरह नूह की आयत 15 से 20 तक सच्चे रब की सिफ़ते तख़्लीक़ पर उम्दा पैराये में रोशनी डाली गई है,
''क्या तुमने देखा कि अल्लाह ने किस तरह एक के ऊपर एक सात आसमान बनाए और उनमें चांद को नूर और सूरज को रोशन चराग़ की तरह बनाया।''

और तुमको अल्लाह ने ज़मीन से उगाया। फिर वह दोबारा तुमको उसी में पहुँचा देगा और फिर क़यामत के दिन उसमें से बाहर निकालेगा। अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़मीन को सजाया। ताकि इसके खुले हुए रास्तों पर चलो।

सूरह क़ियामा आयत नम्बर 37 से 39 में है,
''क्या इन्सान मनी (वीर्य) की एक बूंद न था जो माँ के रहम में डाली गई। फिर वह जमा हुआ खून बन गया। फिर अल्लाह ने उसे अपनी क़ुदरत से पैदा किया। और उसके अअ़ज़ा (अंग) दुरुस्त किये। फिर नर और मादा की शक्ल में बनाया।''

इस आयत की रोशनी में इन्सान अगर अपनी हक़ीक़त पर ग़ौर कर ले तो अल्लाह के सिवा किसी की पूजा न करे। मगर अपने बाप दादा की अंधी तक़्लीद (पैरवी) में वह हक़ीक़त से दूर ही होता चला जाता है।

सूरह आ़ला की आयत नम्बर 2 में है
''जिसने बनाया और ठीक किया।''

सच्चे रब की तख़्लीक़ बेमिसाल है। इन्सान अपने पैदाइश और अअ़ज़ा के तनासुब पर ग़ौर करे तो उसके दिल की आँखें खुल जाएगी। आँख, नाक, कान, हाथ, पैर और जिस्म के दूसरे हिस़्से अपनी अपनी जगह किस तरह उसकी क़ुदरत से माँ के पेट में बन जाते हैं। मनी के क़तरों में उसने क्या खूबी रखी है। तुम टेस्ट ट्यूब को ईजाद करके बेजा तकब्बुर में मुब्तला हो गए। मनी का एक क़तरा बनाकर दिखाओ तो बात है। अगर ऐसा नहीं कर सकते। और कर भी नहीं सकते तो सज्दा रेज़ हो जाओ उस रब के सामने जिसने हमें नई नई चीज़ें ईजाद करने के लिए दिमाग़ की नेअ़मत अ़ता फ़र्माई। अपना दिमाग़ तुमने खुद तो नहीं बनाया। नादानों! शैतान के बहकावे में आकर अपने रब को न भूल जाओ क्योंकि उसी ने तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शी है और उसी की तरफ़ मौत के बाद दोबारा लौटाये जाओगे। यह ऐसी हक़ीक़त है जैसे तुम रात को सोकर सुबह उठ जाते हो।

सूरह अ़लक़ आयत नम्बर 1 और 2 में है,
''अपने रब के नाम से पढ़ जिसने सबको पैदा किया और इन्सान को जमे हुए ख़ून से बनाया।''
सूरह हि़ज्र की आयत नम्बर 26 और 27 में है,
''और हमने आदमी को खनखनाते हुए गारे से बनाया। और जिन्नों को आग की लौ से बनाया।''

सच्चे रब ने आदमी का पुतला सने हुए गारे से बनाया। फिर वह खुश्क होकर पककर खन खन बजने लगा तो उसमें रूह़ फूँक दी आदमी की तख़्लीक़ से पहले आग की लपट से जिन्नात पैदा किये जा चुके थे। आयत से इस ह़क़ीक़त का पता भी चल जाता है।

सूरह मोमिनून की आयत नम्बर 12 से 16 तक सच्चे रब ने इन्सान की तख़्लीक़ मौत और क़यामत का बयान साइन्सी अंदाज़ में किया है,
''और हमने इन्सान को चुनी हुई मिट्‌टी से बनाया। फिर हमने उसको पानी की बूंद की शक्ल में एक जमे हुए ठिकाने में (माँ के रह़म में) रखा फिर उस बूंद से जमा हुआ ख़ून बनाया फिर उस जमे हुए ख़ून से गोश्त की बोटी बनाई। फिर उस बोटी से हड्डियाँ। और उन हड्डियों पर गोश्त चढ़ाया फिर उसको एक दूसरी ही सूरत में उठा खड़ा किया। (यानी उसमें जान डाल दी) सो अल्लाह बड़ी बरकत वाला है। जो सबसे बेहतर बनाने वाला है। फिर तुम उसके बाद मरोगे और फिर क़यामत के दिन दोबारा ज़िन्दा किये जाओगे।''

राह से भटके हुए इस दौर के इन्सान के लिये कुरआन की आयात को पढ़ना और दिन–रात में उनमें ग़ौर करना ऐसा ही है जैसे किसी बीमार के लिए मुनासिब है दवा का पाबन्द बनना। बीमार दवा का इस्तेमाल नहीं करेगा तो हलाक हो जाएगा। आज का इन्सान रूहानी तौ़र पर बीमार हैं और कुरआनी आयात में उसके लिए शिफ़ा का दवाखाना बिखरा हुआ है। तख़्लीक़ से पहले इन्सान जिन मराहि़ल से गुज़रकर इन्सान बनता है उसका बयान आयत में वाज़ेह़ तौ़र पर किया गया है और साईन्स इसे साबित कर चुकी है। ज़िन्दगी के बाद मौत और मौत के बाद ज़िन्दगी भी अपनी जगह अटल है। फिर क्यूँ न अपने उसी रब का दामन पकड़ लें जिसने हमें ज़िन्दगी अ़ता की है। और जिसके हुक्म से हमें मौत भी आएगी और जिसके हुक्म से हम दोबारा ज़िन्दा होकर अपने कामों का हि़साब भी देंगे। जन्नत और दोज़ख़ के ह़क़दार बनेंगे। उनसे ग़ाफ़िल रहकर जानवरों की

तरह खाने–पीने और सोने और अपने नफ़्स की ख़्वाहिश को ही पूरा करने में लगे रहेंगे तो अपना ही नुक़्सान करेंगे। सच्चा रब सबसे बेनियाज़ है। झूठे रब खाने, पीने और तुम्हारे तोह़फ़े तह़ाइफ़ के और तुम्हारे नज़रानों और तुम्हारे चढ़ावों के मोह़ताज हैं। उन्हें छोड़ो और बेनियाज़ और बेतमअ़ रब के क़दमों में गिर पड़ो। वह तुम्हारे कुफ़्र और शिर्क और गुनाहों को माफ़ कर देगा। वह गफ़ूर और रह़ीम है।

सूरह यासीन की आयत 71 में है,
''और क्या वह नहीं देखते कि हमने चौपाये पैदा किये फिर वो उनके मालिक बने हुए हैं।''

चौपायों का ज़िक्र मिसाल के तौ़र पर हैं वरना ह़क़ीक़त यह कि इन्सान को जो कुछ भी ह़ासिल है वह उसका एह़सान और उसी का इन्अ़ाम है। क्या इन्सान खुद ब खुद पैदा हो गया है? क्या उसने अपने जिस्म के हि़स्से खुद बना लिये हैं? या कोई उनको बनाने वाला है? अगर नहीं है और यक़ीनन नहीं। तो मूर्तियों, मज़ारों और पत्थरों को पूजने की बेवक़ूफ़ी मत करो। जिसने दुनिया की हर चीज़ को बनाया है उसी को पूजो। अपने जैसे इन्सानों को भी अपना रब न बनाओ। इस तौ़र पर कि उसकी हर बेजा बात मानने लगो। तअ़वीज़ गण्डे करने वाले आमिलों को अपनी क़िस्मत का मालिक मत समझो। अपने रब के आगे गिड़गिड़ाओ। रो रोकर दुआ़एँ करो। वह तुम्हारी हर मुश्किल को दूर कर देगा। उसकी किताब में डूबो समझो। उसे फैलाओ। मर्दों के करने के ये काम है।

सूरह हूद की आयत नम्बर 37 में है,
''और हमने आसमान–ज़मीन और जो कुछ इसके बीच में है उसको बेकार ही पैदा नहीं किया यह ख़्याल उसका है जो सच्चाई का इन्कार करने वाला है, तो सच्चाई का इन्कार करने वालों के लिए ख़राबी है। उनके लिए दोज़ख़ की आग है।''
सूरह दुख़ान की आयत 38 और 39 में है,
''और हमने आसमान व ज़मीन और जो कुछ उनके बीच है उसको खेल के तौ़र पर नहीं बनाया। इनको हमने किसी मक़्स़द से बनाया है मगर ज़्यादातर लोग नहीं समझते।''

आज दुनिया के ज़्यादातर लोग माद्दी आसाइशों (भौतिक सुविधाओं) को ही अपनी ज़िन्दगी का मक़्स़द बनाए हुए हैं और उनको ह़ासि़ल करने में जाइज़ व

नाजाइज़। हलाल व हराम की हुदूद को तोड़ रहे हैं। वो इस हक़ीक़त को भूल गए हैं जिसका बयान ऊपर की दो आयतों में हुआ है। ज़रूरत इस बात की है वो इन आयात में ग़ौर करके कायनात की तख़्लीक़ के असल मक़्सद को समझें। सच्चे रब की इबादत में लग जाए। नाजाइज़ और हराम कामों को बिलकुल तर्क कर दें। क़यामत को याद रखें। वो दिन जब अपने रब के सामने कोई फ़र्मांबरदार और कोई मुजरिम बनकर पेश होगा। फ़र्मांबरदार राहतों वाली जन्नत में जाएँगे और मुजरिमों का ठिकाना जहन्नम होगा। इन्सानों! उस आग से डरो और बचो जिसका ईंधन इन्सान और पत्थर होंगे।

सूरह अहक़ाफ़ की आयत नम्बर 3 में है,
''हमने ज़मीनो आसमान और उसके बीच में जो कुछ भी है उसको हक़ के साथ एक मुक़र्ररा मुद्दत के लिये पैदा किया है।'' और जो लोग नहीं मानते वो डर की बातें सुनकर अपना मुँह मोड़ लेते हैं।

सूरह क़ाफ़ की आयत नम्बर 16 में है, ''और यक़ीनन हमने इन्सान को बनाया और उसके जी की बातों को भी हम जानते हैं और हम उसकी रगे जाँ से ज़्यादा क़रीब हैं।''

सूरह क़ाफ़ की आयत नम्बर 38 में है,
''और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उसके बीच में हैं उसको छः दिन में पैदा किया है और इस काम में हमें कोई थकान नहीं हुई।''

सूरह ज़ारियात की आयत नम्बर 49 में है, ''और हमने हर चीज़ के जोड़े बनाए ताकि तुम ध्यान दो।''
सूरह दहर आयत नम्बर 2 में है,
''हमने आदमी को दो रंगी बूँद से बनाया। हम उसको पलटते रहे फिर हमने उसको सुनने और देखने वाला बना दिया।''

सूरह हज्ज की आयत 5 इन्सान की ज़िन्दगी और मौत और मौत के बाद की ज़िन्दगी पर मुफ़स्सल रोशनी डालती है। कोई इन्सान बतौर इन्सान इस आयत में ग़ौर करे तो दुनिया के तमाम झूठे रबों की बेफ़ायदा इबादत छोड़कर एक सच्चे रब की इबादत में गुम हो जाए। मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब के खींचे गए दायरों से निकलकर अगर वो फ़हम ओ शऊर के वसीअ़ आसमान के नीचे निकल

आए तो इस आयत के नूर से उसकी आँखें ही नहीं दिल और रूह तक चमक उठें।

''ऐ लोगों! अगर तुम मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होने पर यक़ीन नहीं करते तो तुम्हें मालूम होना चाहिए कि हमने (तुम यानी) तुम्हारे बाप आदम को मिट्टी से और फिर पानी की बूंद से फिर जमे हुए ख़ून से फिर नक़्शा बनी हुई गोश्त की बोटी से बनाया ताकि हम तुम्हें अपनी क़ुदरत खोलकर बयान कर दें। और हम माँ के रहमों में जो कुछ चाहें एक मुक़र्ररा मुद्दत तक ठहराये रखते हैं। फिर तुमको बच्चा बनाकर निकालते हैं ताकि उसके बाद तुम अपनी जवानी को पहुँचो और कोई तुममें से बुढ़ापा आने से पहले उठा लिया जाता है और उसकी निकम्मी उम्र तक ज़िन्दा रखा जाता है। फिर वह जानने के बाद भी कुछ न जानने वाला बना दिया जाता है। और तू ज़मीन को देखता है कि ज़मीन ख़ुश्क पड़ी हुई है। और जहाँ हमने पानी बरसाया तो वह ताज़ा हो गई और उभर गई और हमने हर क़िस्म की रौनक़दार चीज़ें उगा दीं।''

इस आयत की रोशनी में इसी सूरह की आयत 6 और 7 में इन हक़ाइक़ को उजागर किया गया है जिनसे आज के इन्सान ज़्यादातर ग़ाफ़िल हैं और सच्चाई से मुँह मोड़कर झूठ के दलदल में हाथ पैर मार रहे हैं। उजालों से भरी हुई डगर छोड़कर अंधेरी गलियों में भटक रहे हैं। यह सब इस वास्ते बयान किया गया है ताकि तुम्हें मालूम हो जाए कि अल्लाह ही हक़ है और वही मुर्दों को ज़िन्दा करता है और वह हर काम पर क़ादिर है और यह कि क़यामत हक़ है उसके आने में कोई शक नहीं है और अल्लाह क़ब्रों में पड़े हुए मुर्दों को ज़िन्दा करेगा।
सूरह मोमिनून की आयत 115 में है,
''सो क्या ख़्याल करते हो कि हमने तुमको बेकार ही पैदा कर दिया है और तुम मरने के बाद हमारे पास लौटकर नहीं आओगे।''

इस दौरान इन्सान जो अपने नफ़्स और शैतान के चक्कर में पड़कर अपने पैदा करने वाले से ग़ाफ़िल होकर सिर्फ़ इसी दुनिया के फ़ायदों और लज़्ज़तों को ज़िन्दगी का हासिल समझ रहा है उसके लिए क़ुरआने करीम की यह आयत मुकम्मल रहनुमा है। वह समझता है कि उसे पलटकर अपने हक़ीक़ी सच्चे रब के सामने पहुँचकर अपने कामों का कोई हिसाब नहीं देना है। वह आज़ाद है। मुख़्तार है। जो चाहे करे जबकि हक़ीक़त यह है कि उसे पलटकर अपने हक़ीक़ी सच्चे रब के सामने पहुँचकर अपने कामों का हिसाब देना है किसी के न मानने से भी यह

सच्चाई अपनी जगह रहेगी इसलिए कल के नुक़्सान से बचने के लिए हर इन्सान को इस सच्चाई को तस्लीम करके अपनी ज़िन्दगी का रुख़ बदल देना चाहिए। मूर्तियों, पत्थरों, मज़ारों और अपनी ख़्वाहिशों की पूजा छोड़कर अपने रब की पूजा इख़्तियार करनी चाहिए।

सूरह हुजुरात की आयत नम्बर 13 में है,
''ऐ लोगों! हमने तुमको एक मर्द और औरत से बनाया और तुम्हारी ज़ातियाँ और क़बीले बनाए ताकि आपस की पहचान तुम्हारे अन्दर बाक़ी रहे। यक़ीनन अल्लाह के नज़दीक वही इज़्ज़त वाला है जो उससे डरने वाला हो। अल्लाह सब कुछ जानता है और सबसे बाख़बर है।''

दुनिया के तमाम इन्सानों को कितनी बड़ी हक़ीक़त से ख़बरदार किया गया है। बताया गया कि दुनिया के तमाम इन्सान एक मर्द और औरत (आदम व हव्वा) की औलाद हैं। किसी ज़ात और किसी क़बीले का आदमी हो। अगर अपने रब से डरकर ज़िन्दगी गुज़ारेगा तो अपने रब के नज़दीक बाइज़्ज़त क़रार पाएगा। ज़िन्दगी में डर पैदा होने का नतीजा यह होगा कि वह बग़ैर सोचे समझे हर एक की पूजा में नहीं लग जाएगा बल्कि पूजा के क़ाबिल जो रब है उसी को पूजेगा और जिसके दिल से ख़ौफ़े खुदा निकल जाएगा तो डर निकल जाने की वजह से वो हर जगह सज्दे लुटाने के लिये तैयार होगा। जहाँ अपना फ़ायदा देखेगा, झुक पड़ेगा। गुनाहों में भी मुब्तला होगा और अपनी ज़िन्दगी बर्बाद करेगा।

सूरह अहक़ाफ़ की आयत नम्बर 33 में है,
''क्या इन्होंने नहीं देखा वह अल्लाह जिसने आसमानों और ज़मीन को बनाया और उनके बनाने में नहीं थका वह मुर्दों को भी ज़िन्दा करने की क़ुदरत रखता है। क्यूँ नहीं! वह हर काम को करने पर क़ादिर है।''

सूरह हामीम सज्दा की आयत नम्बर 37 में है,
''और रात–दिन, चांद–सूरज उसकी क़ुदरत के नमूने हैं। सूरज और चांद को सज्दा न करो। अगर तुम उसकी इबादत करते हो तो उसको सज्दा करो जिसने सूरज और चांद को पैदा किया है।''

आयत बता रही है कि इबादत और सज्दे का हक़दार वही है जिसने सबको पैदा किया। जिस मूर्ति को पूजा जाता है वह किसी महापुरुष की होती है और उस महापुरुष को भी अल्लाह ही ने पैदा किया था तो फिर अल्लाह ही की पूजा

की जानी चाहिए। जो महापुरुष तख़्लीक़ की सिफ़त नहीं रखता उसकी मूर्ति को पूजना उसको रब बनाना मुनासिब नहीं। जिस मज़ार को पूजा जाता है वह बुज़ुर्ग का है और उस बुज़ुर्ग को भी अल्लाह ही ने पैदा किया था तो फिर अल्लाह ही की इबादत करनी चाहिए। जो बुज़ुर्ग तख़्लीक़ की क़ुदरत नहीं रखता उसके मज़ार की इबादत करना। उसको रब बनाना। मुनासिब नहीं। अगर यह कहा जाए कि हम मज़ार और मूर्ति की पूजा नहीं करते बल्कि अपना ध्यान जमाने के लिए इनको अपने सामने रखते हैं तो यह बात भी ग़लत होगी क्योंकि अल्लाह ने हमें ऐसा करने का हुक्म नहीं दिया और जो मूर्ति और मज़ार को सामने रखे बग़ैर उसे तसव्वुर में खोये हुए रहते हैं उसके ज़िक्र में लगे रहते हैं वो शैतानी ख़तरात से महफ़ूज़ रहते हैं।

सूरह ज़ुख़रुफ़ आयत 87 में है,
''और अगर तू इनसे पूछे कि इनको किसने पैदा किया है तो वह कहेंगे कि अल्लाह ने। फिर वो कहाँ उलट जाते हैं।''

दुनिया का कोई इन्सान यह कह सकता है कि उसको पैदा करने वाली ज़ात मूर्ति है या मज़ार है? मगर फिर भी वह अपने पैदा करने वाले रब को छोड़कर मूर्तियों और मज़ारों के चक्कर काटता है। इससे बड़ी नादानी भी कोई है? सोचो और ग़ौर करो हमें खुद अपनी ग़लती का एहसास हो जाएगा।

सूरह तारिक़ की आयत 4 से 7 में है,
''इन्सान को देखना चाहिए कि वह किस चीज़ से बनाया गया है जो इन्सान की पीठ और सीने के बीच में से निकलता है।''

वह इन्सान जो मनी के एक उछलते हुए नापाक क़तरे से सिर्फ़ और सिर्फ़ सच्चे रब की क़ुदरत से पैदा हुआ है कितनी हैरत और अफ़सोस की बात है वह आदमी रब के एहसान को भूलकर मनगढ़त रबों की पूजा पाठ में लगा हुआ है। और इस वहम में मुब्तला है कि वह झूठे रब उनके नफ़ा व नुक़्सान के मालिक है। मगर जब इन्सानों के करतूतों के सबब अज़ाब का एक छोटा हल्का सा झटका भी लग जाता है तो रोने चिल्लाने लगता है। और सबको भूलकर सच्चे रब को पुकारने लगता है। बेहतर तो यह है कि अज़ाब में मुब्तला होने से पहले ही इन्सान हक़ीक़त को समझने की कोशिश करे। सच्चाई तक पहुँचने का अज़्म करे और माहौल से बग़ावत करने का अपने अन्दर हौसला पैदा करे। यह न देखे कि उसके बाप दादा मूर्ति पूजने वाले थे। इसलिए वह भी मूर्ति पूजा को ही अपना

तरीक़ा बनाएगा। यह न देखे कि उसके बाप दादा तो मज़ारों को सज्दा करने वाले थे। इसलिए वह भी ऐसा ही करेगा। बाप दादा भी ग़लती कर सकते हैं। बाप दादा के तरीक़े को आसमानी किताब और अपनी अक़्लो फ़हम की कसौटी पर परखकर देखें। उसके बाद ही कोई तरीक़ा अपनाए। याद रखो इन्सान को दुनिया में हर राह को अपनाने की आज़ादी दी गई। मगर किस राह पर चलने पर क्या अंजाम होगा उसे नज़र में रखकर ही इन्सान को कोई फ़ैसला करना चाहिए। क्योंकि बिल आख़िर नतीजा हर काम का उसे ही भुगतना है।

सूरह ज़ुमर की आयत 6 में है,
"उसने तुमको एक जान से पैदा किया है। फिर उसी से जोड़ा बनाया। तुम्हारे वास्ते आठ जोड़े बनाए। उसकी यह क़ुदरत है कि उसने तुमको एक तरह से दूसरी तरह पर माओं के पेटों में तीन अंधेरियों के अंदर बनाया। वह अल्लाह है। उसकी हुकूमत है। उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। फिर तुम कहाँ फिरे जाते हो?"

सच्चे रब की बेमिसाल क़ुदरत है उसने बग़ैर किसी पहले नमूने के आदम की तख़्लीक़ की और उससे हव्वा को पैदा किया और इस तरह इन्सानी नस्ल का सिलसिला चलाया। आज इन्सान नफ़्सानी ख़्वाहिशों की भूल भुलैया में गुम होकर शैतान को अपना जिगरी दोस्त बनाकर दुनिया के फ़ानी मज़ों में खोकर उस सच्चे रब उसी ख़ालिक़ व मालिक को भूलकर कहाँ कहाँ सज्दे लुटा रहा है और किस किसकी पूजा कर रहा है। अफ़सोस सद अफ़सोस! इन्सान की नालायक़ी पर। खाता है उसका दिया हुआ रिज़्क़ और गुण गाता है दूसरों के। फिर भी उस रब की रहीमी देखो कि वह नालायक़ों को भी रिज़्क़ दे जाता है। माँ की पेट की तीन अंधेरियों में पैदा होने वाला इन्सान दुनिया के उजाले में आते ही रब के एहसान भूल जाता है। इस हक़ीक़त को, कि अल्लाह ही उसका रब है कायनात पर उसकी हुकूमत का सिक्का चल रहा है, और वही इबादत और पूजा के लायक़ है।

सूरह बक़रह की आयत नम्बर 21 में है,
"ऐ लोगों! अपने रब की इबादत करो जिसने तुम्हें और तुमसे पहले के तमाम इन्सानों को पैदा किया ताकि तुम दोज़ख़ से बच जाओ।"

सच्चा रब दुनिया के तमाम इन्सानों से मुख़ातिब है। हुक्म दे रहा है कि उसी की पूजा करो क्योंकि उसी ने सारी दुनिया को पैदा किया है। पैदा करने की सिफ़त उसे पूजा का हक़दार बना रही है। जिसमें कुछ भी पैदा करने की सिफ़त

नहीं वह इबादत और पूजा का हक़दार भी नहीं है। हक़दार को उसका हक़ न देकर दूसरों को यह हक़ देना बहुत बड़ा ज़ुल्म है और आज के ज़्यादातर इन्सान इस ज़ुल्म में मुब्तला हैं। और ज़ुल्म के उस अंजाम से ग़ाफ़िल हैं जो उन्हें हलाक करके रख देगा। दोज़ख़ की आग में धकेल देगा। लोगों! मौत से पहले पहले इस ज़ुल्म से बाज़ आ जाओ। इसी में तुम्हारी निजात हैं। तुम्हारी मुक्ति हैं। मूर्तियों, मज़ारों, पत्थरों, पेड़ों, मज़हबी पेशवाओं और नफ़्सानी ख़्वाहिशों को पूजना छोड़ दो। याद रखो! शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है। उसे आदमी की वजह से ही जन्नत से निकाला गया था। इसलिऐ वह कुल औलादे आदम को जन्नत में जाने से रोकने की कोशिश करता रहता है। मगर तुम नहीं समझते। जिहालत के अंधेरे से निकलकर इल्म के उजाले में नहीं आते। ग़लत अक़ीदे के चंगुल में फंसे हुए हो। जागो! संभलो! सच्चा रब बड़ा मेहरबान है। तुम्हारी पिछली ग़ल्तियों को माफ़ कर देगा। शर्त यही है कि सबको छोड़कर उसके हो जाओ।

सूरह अन्आम की आयत नम्बर 6 में है,
"वही है जिसने तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर मौत का एक वक़्त मुक़र्रर कर दिया और क़यामत का भी एक वक़्त मुक़र्रर है फिर भी तुम शक में पड़े हुए हो।"

आज के इन्सान का अहम मर्ज़ शक है। शक से वो वहम में मुब्तला हो जाता है। और वहम उसको ऐसी राहों की तरफ़ मोड़ देता है जो कांटों से भरी हुई है। शक की जगह यक़ीन उसको मंज़िल से आशना करता है और उसके दिल को चैन व सुकून से भर देता है। लोगों! शक को छोड़ो। यक़ीन को अपनाओ। सच्चे रब की ज़ात में शक न करो। उसने हमें मिट्टी से पैदा किया है। तुम्हारी मौत का वक़्त मुक़र्रर है और क़यामत भी एक दिन आएगी। यह सब बातें शक से बाला हैं। इन पर यक़ीन तुम्हें अज़्म और यक़ीन अता करेगा। तुम्हें ताक़तवर बना देगा। तुम्हें मग़लूब से ग़ालिब और महकूम से हाकिम बना देगा।

सूरह आराफ़ की आयत नम्बर 189 में है,
"वही है जिसने तुमको एक जान से पैदा किया और उससे उसका जोड़ा बनाया ताकि उसके पास रहकर आराम व सुकून हासिल करो।"

इसी हक़ीक़त को सूरह ज़ुमर की आयत नम्बर 6 में उजागर किया गया था। इन्सान कितना बड़ा एहसान फ़रामोश है कि बीवी की क़ुर्बत से सुकूनो इत्मिनान हासिल कर लेता है मगर जिसने उसकी बीवी को पैदा किया उसी को

भूल जाता है और झूठे मअ़बूदों के गुण गाता रहता है। एक बीवी ही क्या सारी नेअ़मतें उसी की दी हुई हैं। जिन जिनको वह पूज रहा है उनमें से किसी ने उसको कुछ नहीं दिया। न दिल, न दिमाग, न आँखें, न कान, न नाक, न हाथ, न पैर, न माल, न जायदाद। फिर इन्सान आख़िर क्यूँ नहीं सोचता है? क्यूँ ग़ौर नहीं करता? क्यूँ नहीं समझता है? बात वही सच है जो सच्चे रब ने फ़र्माई कि आँखें अंधी नहीं होती बल्कि सीनों में जो दिल हैं वो अंधे हो जाते हैं। लोगों! अपने दिल के अंधेपन को दूर करो। अल्लाह को पहचानो। वही तुम्हारा रब है। उसी की इ़बादत को अपना त़रीक़ा बनाओ। उसी में तुम्हारी नजात हैं। तुम्हारा छुटकारा है। उस आग से जिसका ईंधन इन्सान और पत्थर होंगे।

सूरह नह़ल की आयत 70 में है,
''और अल्लाह ने तुमको पैदा किया और फिर मौत देगा और कोई तुममें से उस निकम्मी उ़म्र तक भी पहुँच जाता है कि जिसमें समझने के बाद भी कुछ नहीं समझता। अल्लाह जानने वाला और कु़दरत वाला है।''

सूरह शोअ़रा की आयत नम्बर 184 में है,
''और डरो उससे जिसने तुमको और तुमसे पहले लोगों को पैदा किया।''

सबका पैदा करने वाला एक ही है। यह नहीं कि हमें तो किसी और ने पैदा किया और तुमसे पहले लोगों को पैदा करने वाला कोई और था। एक रब सबका ख़ालिक़ है। उसी की इ़बादत करो। उसी से दुआ़एँ मांगो। उसी के सामने झुको। उसी के आगे गिड़गिड़ाओ। उसी से मुह़ब्बत करो। उसी को अपने सज्दे का ह़क़दार समझो। वही ह़क़ है। उसके अ़लावा सब बात़िल है। मूर्ति, मज़ार, पत्थर, क़ब्र और अपने ही जैसे इन्सानों को पूजना बेवक़ूफ़ी और नासमझी है। उनमें से कोई भी न तुम्हारे नफ़ा का मालिक है और न ही नुक़सान का। न कोई हमें इ़ज़्ज़त दे सकता है और न कोई ज़लील कर सकता है। इससे पहले कि फ़ैसले का दिन तुम्हारे सरों पर आ पहुँचे। सब दरों को छोड़कर उसी के दर पर आ पड़ो। याद रखो! सिर्फ़ उसको ख़ालिक़ मानने से ही काम नहीं चलेगा, ख़ालिक़ तो उसको सभी मानते हैं कोई यह नहीं कहता कि मुझे किसी मूर्ति ने पैदा किया है या किसी मज़ार वाले ने मुझे बनाया या कोई पत्थर या पेड़ यह ख़ालिक़ है, मगर उससे डरते नहीं। उसका डर दिल में जगाओ। ताकि तुम दूसरों की पूजा से बाज़ आ जाओ। ताकि तुम शैत़ान के चंगुल से निकल जाओ। ताकि तुम नफ़्स के क़रीब में आने से बच जाओ। और इसके नतीजे में तुम्हारे रब का तुम पर करम हो जाए। और तुम दोज़ख़ के दहकते हुए शोलों से मह़फ़ूज़ हो जाओ।

सूरह रूम की आयत नं. 20 से 22 तक सच्चे रब की तख़्लीक़ी सिफ़त का बयान इंतिहाई वाज़ेह़ और मुअस्सर अंदाज़ में किया गया है।
''और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुमको मिट्टी से पैदा किया और अब तुम आदमी बनकर ज़मीन में फेले पड़े हो। और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हारे वास्त़े तुम्हीं में से जोड़े बनाए ताकि उनकी कु़र्बत से तुम चैन ह़ासि़ल करो और उसी ने तुम्हारे बीच में प्यार और मेहरबानी रखी यक़ीनन इसमें ग़ौर करने वालों के लिये निशानी है। और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने आसमानों और ज़मीन को बनाया और तुम्हारी बोलियाँ और रंग मुख़्तलिफ़ रखे। इसमें समझने वालों के लिये निशानियाँ हैं।''

आज का इन्सान रोज़ी रोटी को मक़स़दे ज़िन्दगी तस़व्वुर करने के बजाय सच्चे रब को पहचानकर उसकी रज़ा और ख़ुशनुदी को अपना मक़स़द बना ले तो इस कायनात में उसकी रहनुमाई के लिये निशानियाँ ही निशानियाँ बिखरी पड़ी हैं। तख़्लीक़ात का इतना अ़ज़ीम और इतना ख़ूबसूरत सिलसिला जिसे अल्लाह ने क़ायम किया है बेमिसाल है। आख़िर तुम क्यूँ नहीं सोचते?'' क्या तुम्हारे दिलों पर तुम्हारे बदआ़मालियों की वजह से मुहर लगा दी गई है? इतनी निशानियों के होते हुए तुम सच्चे रब को छोड़कर या उसको मानते हुए दूसरों को रब क्यूँ बनाते हो? आयात में ग़ौर करो। हिदायत पाओगे। तुम्हें वह रास्ता मिल जाएगा जो आज तक तुम्हें किसी ने नहीं दिखाया।

सूरह रूम की आयत 41 में है,
''अल्लाह वही है जिसने तुमको पैदा किया फिर तुमको रोज़ी दी। फिर तुमको मौत देगा। फिर तुमको दोबारा ज़िन्दा करेगा। क्या कोई तुम्हारे शरीकों में ऐसा है, जो इन कामों में कोई एक भी काम कर सके। वह पाक है और तमाम शरीकों में से बुलंद है।''

सच्चे रब की तीन ऐसी सिफ़ात जो किसी दूसरे में नहीं पाई जाएँ। पाई भी कैसे जाएँ, क्योंकि तन्हा वही ख़ालिक़ है, बाक़ी सब उसकी मख़्लूक़ है। पहली बार पैदा करना फिर मौत देना। फिर ज़िन्दा करना। किसी मूर्ति, पत्थर, पेड़, क़ब्र, या मज़ार का काम नहीं है। फिर उनको पूजा का ह़क़दार समझना इन्सान का सबसे बड़ा ज़ुल्म है।

सूरह मरियम आयत 54 में है,
''अल्लाह वही है जिसने तुमको कमज़ोरी से बनाया फिर कमज़ोरी के बाद हमें कुव्वत दी। फिर कुव्वत के बाद हमें कमज़ोर कर दिया। और बुढ़ापे तक पहुँचा दिया। वह जो कुछ चाहता है पैदा करता है। वह सब कुछ जानने वाला और बड़ी कुदरत वाला है।''

इन्सान के बचपन, जवानी और बुढ़ापे की कितनी उ़म्दा तस्वीर इस आयत में खींची गई है, अब इन्सान को इन तीन मराहिल से गुज़ारने वाला सच्चा रब अल्लाह है। उसे दिल की आँख से देखो। उसकी कुदरतों का अंदाज़ा लगाओ। उसी की इबादत करो। उसी को पूजो। वह तुम्हारी पूजा और तुम्हारे सज्दे का मोहताज नहीं। अगर सारी दुनिया उसका इन्कार कर दे और उसका दर छोड़कर दूसरों दरों पर सज्दा लुटाने लगे तब भी उसकी खुदाई, उसकी किब्रियाई, उसकी वहदानियत, उसकी अ़ज़्मत पर कोई फ़र्क़ पड़ने वाला नहीं है। नुक़सान होगा तो उन ही का होगा जो उसका दामन छोड़ देंगे।

सूरह फ़ातिर आयत 11 में है,
''और अल्लाह ने तुमको मिट्टी से। फिर पानी की बूंद से बनाया। फिर तुम्हारा जोड़ा बनाया।''

आदम को मिट्टी से बनाया गया और बाक़ी तमाम इन्सान नुत्फ़े से पैदा हुए हैं। हर नर के लिए मादा का पैदा करना उसका कितना बड़ा एहसान है जिसकी वजह से जानवरों की नस्लें आगे बढ़ती हैं। ज़मीन की तरोताज़गी क़ायम रहती है। वही सच्चा रब है। वही अल्लाह है। उसकी इबादत को उसकी रज़ा को अपनी ज़िन्दगी का मक़्सद बनाओ तुम कामयाब रहोगे। कामयाबी आ़रज़ी कामयाबी नहीं है, बल्कि हमेशा की कामयाबी, जिसमें दिली सुकून होगा, इत्मिनान होगा, परेशानी और बेचैनी न होगी। परेशानी और बेचैनी के साथ तो दुनिया में करोड़ो लोग कामयाब हैं। जो अपने मनगढ़त रब की पूजा में लगे हुए हैं मगर दिली चैन के साथ वही कामयाब हैं जो अल्लाह के सिवा किसी की इबादत का मुस्तहिक़ नहीं समझते। अल्लाह अपने ऐसे वफ़ादार बन्दों को लाज़वाल चैन से नवाज़ता है।

सूरह मरियम की आयत 67 में है,
''वही है जिसने तुमको मिट्टी से, फिर पानी की बूंद से, फिर जमे हुए खून से बनाया। फिर वह तुमको माँ के पेट से बच्चे की शक्ल में निकालता है। फिर तुम अपनी जवानी तक पहुँचते हो। फिर बूढ़े हो जाते

हो और तुममें से कोई पहले ही मर जाता है और तुम मुक़र्ररा मुद्दत तक ही पहुँचोगे और ताकि तुम सोचो।''

सूरह तग़ाबुन की आयत 2 में है,
''वही है जिसने तुमको पैदा किया फिर कोई न मानने वाला है और कोई मानने वाला है। और अल्लाह तुम्हारे कामों को देखता है।''

कोई माने या न माने पैदा करने वाला अल्लाह ही है। मानने का नतीजा अच्छा ही होगा। न मानने का नतीजा ख़राब होगा। ज़हर को ज़हर न मानकर कोई ज़िद्दी इसको पी जाए तो हलाक होकर रहेगा। दूसरों को पूजा करने वाले हलाकत की तरफ़ बढ़ते चले जाते हैं उनकी ज़िद उनकी नासमझी की पैदाकर्दा है जो उन्हीं के लिए नुक़्सान का बाइस होगी। सच्चे रब को छोड़ने से सच्चे रब का कुछ नहीं बिगड़ने वाला वह सबसे बेनियाज़ और ग़नी है। इसके अ़लावा इन्सानों के ज़रिए बनाये गए रब मकड़ी के जाले से भी ज़्यादा कमज़ोर हैं। इन्सान को दुनिया में आज़ादी हा़सिल है चाहे जिधर जाए। चाहे जिसे पूजे। मगर अंजाम सबका एक जैसा नहीं होगा।

सूरह नूर की आयत 14 में है,
''उसी ने तुमको तरह त़रह़ से बनाया।''

एक मुख़्तस़र सी आयत ने कितनी अहम ह़क़ीक़त से पर्दा उठा दिया गया। इन्सान माँ के पेट में तरह़ तरह़ से बनता है। मुख़्तलिफ़ मराह़िल से गुज़रकर बच्चे की शक्ल इख़्तियार करता है। पहले नुत्फ़ा, फिर अ़ल्क़ा, फिर मज़्ग़ा, फिर हड्डियों का बनना और हड्डियों पर गोश्त का चढ़ना और उसमें जान का पड़ना पैदाइश के बाद से मरने तक भी इन्सान मुख़्तलिफ़ मराहिल से गुज़रकर जीता है। कभी ग़म, कभी खुशी, कभी बुलंदी, कभी पस्ती, अमीरी–ग़रीबी, कभी इ़ज़्ज़त, कभी ज़िल्लत। दानिशमन्द आदमी अपनी ह़क़ीक़त को समझकर अपने रब की बन्दगी में लग जाता है। वह रब जिसके हुक्म से ही इन्सान त़रह़ त़रह़ के मराहिल से गुज़रता है। बेवक़ूफ़ आदमी झूठे रबों के चक्कर में पड़कर अपनी ज़िन्दगी का क़ीमती सरमाया बर्बाद कर लेता है। दूसरों की देखा देखी आबा ओ अज्दाद की अंधी पैरवी में उसे यह सोचने का मौक़ा ही नहीं मिलता कि जिस रास्ते पर वह चल रहा है। वह सही भी है या नहीं? लोगों! अपने सच्चे रब की कुदरत को आयत की रोशनी में पहचानो। फिर उसी के हो रहो। वह हर तरह के मरह़ले में तुम्हारी मदद करेगा। तुम्हारी परेशानियों को मिटा देगा। तुम्हें सर बलंद कर देगा।

सूरह बनी इस्राईल की आयत 99 में है, ''क्या इन्होंने नहीं देखा कि जिस अल्लाह ने आसमान व ज़मीन को बनाया वह इन्सानों की तरह और भी चीज़ें पैदा कर सकता है और उनके वास्ते मौत का एक वक़्त मुक़र्रर कर रखा है। इसके बावजूद ज़ालिम लोग इन्कार किये बग़ैर नहीं रहते।'' इन्सान को बनाने के मुक़ाबले में आसमान व ज़मीन को बनाना ज़्यादा मुश्किल था, मगर कुदरत वाले रब ने आसानी से इनको पैदा कर दिया और इन सबकी फ़ना का भी एक वक़्त मुक़र्रर कर दिया। जिस इन्सान की मौत का जो वक़्त मुक़र्रर हो चुका है, उसी वक़्त वह मरेगा। दुनिया के ख़ात्मे का क़यामत तक जो वक़्त मुक़र्रर कर दिया है क़यामत उसी वक़्त क़ायम होगी। सोचो ग़ौर करो। क्या किसी मूर्ति की, किसी मज़ार की, किसी पत्थर की, किसी पेड़ की या किसी इन्सान ने यह सब कुछ काम अंजाम दिये हैं। इल्ज़ाम देते हो तो साबित करो ताकि हम भी अल्लाह को छोड़कर उनको पूजने लगे। तुम हर्गिज़ हर्गिज़ साबित नहीं कर सकते। जो बाप दादा के नक़्शे क़दम पर चलते हैं और जो अपने इर्दगिर्द के माहौल में रंग जाते उनके पास किसी बात का कोई सबूत नहीं होता। वह तो दूसरों की अंधी पैरवी करते हैं। तुम भी अंधे बनकर ऐसा कर रहे हो। दिल की आँखें खोलो। अपनी आत्मा को टटोलो। तुम्हें खुद हक़ीक़त का पता चल जाएगा।

सूरह यासीन की आयत 82 में है,
''क्या जिसने आसमानों व ज़मीन को बनाया वह उन जैसे को नहीं बना सकता, क्यूँ नहीं वह बड़ा बनाने वाला और सब कुछ जानने वाला है।''

सूरह मायदा की आयत 17 में है,
''और अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन की सल्तनत और जो कुछ उनके बीच में है वह जो चाहे पैदा करता है, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।''

सूरह आराफ़ की आयत 191 में है,
''क्या ऐसों को अल्लाह का शरीक बनाते हो जो कुछ भी पैदा नहीं करते बल्कि वह पैदा किये गए है।''

लोगों! इन आयात में ग़ौर करो, तुम्हें मालूम हो जाएगा कि तुम सरासर ग़लती पर हो। ग़लती का एहसास हो जाए तो बहादुरी से उसे तस्लीम करो और अपनी राह बदल लो। ग़लती का एहसास भी न हो तो समझ लो कि तुम्हारा ज़मीर मुर्दा हो चुका है। तुमने अपनी आत्मा को थपक थपक कर सुला दिया। जो

पैदा किये गए उनका पूजना तो क्या। उनको अल्लाह का साझी बनाना भी ग़लत् है। पूजना बहुत ज़ुल्म है तो साझी बनाना भी ज़ुल्म है? जिन महापुर्खों की मूर्तियों को पूजा जा रहा है, महापुरुष खुद ब खुद पैदा नहीं हुए थे। न उन्होंने कुछ बनाया था। न ज़मीन, न आसमान, न चांद, न सूरज, न सितारे, न पेड़, न पौधे, न पहाड़, न दरिया। फिर आख़िर तुम्हारे पास क्या दलील है उनको पूजने की? महापुरुषों को पैदा करने वाला भी वही अल्लाह है, जिसने कायनात की हर चीज़ को बनाया। चींटी से लेकर हाथी तक जो सबका वाहिद ख़ालिक़ है। जिन बुज़ुर्गों के मज़ारों की परसतिश की जा रही है, वह बुज़ुर्ग खुद ब खुद पैदा नहीं हुए थे, न उन्होंने कुछ बनाया था, फिर आख़िर तुम्हारे पास क्या दलील है उनके मज़ारों पर सज्दे लुटाने और उनकी इबादत करने की? बुज़ुर्गों को पैदा करने वाला भी अल्लाह ही है, जिसने कायनात की हर चीज़ को बनाया जो पैदा किया गया है ख़्वाह वह कोई भी चीज़ हो पूजा किये जाने की हक़दार नहीं है। ख़ालिक़ को पूजो, मख़्लूक़ को न पूजो। ऐसा करोगे तो अपने इस इख़्तियार का नाजाइज़ फ़ायदा उठाओगे, जो ख़ालिक़ ने हमें दुनिया भी दे रखी है। और वह नाजाइज़ फ़ायदा भी एक दिन तुम्हारे नुक़्सान का बाइस होगा।

सूरह नह्ल की आयत 17 में है,
''भला जो पैदा करता है उसके बराबर हो सकता है कोई जो कुछ भी पैदा नहीं करता। क्या तुम सोचते नहीं?''

इससे पहले आयत में अल्लाह का शरीक बनाने वालों की ग़लती को उजागर किया गया था। इस आयत में अल्लाह के अ़लावा दूसरों की इबादत करने वालों का ज़िक्र है, जिसने कुछ भी पैदा नहीं किया, न तो उसे अल्लाह का शरीक बनाया जा सकता है। और न ही उसे पूजा जा सकता है जो पूजेंगे वह ग़लती करेंगे जो उसका साझी बनाएगा। वह भी ग़लती करेगा।

सच्चे रब की सिफ़त-ए-कुदरत

सच्चा रब वो है जिसको वह कुदरत हासिल है जो किसी को हासिल नहीं। कुदरत वाला ही इबादत का और हमारे सज्दों का मुस्तहिक़ है। आख़िरी आसमानी किताब में सच्चे रब की कुदरतों का जो बयान किया गया है वह हर इन्सान की आँखें खोलने के लिये काफ़ी है। शर्त यह है कि इन्सान अपने माहौल से उठकर कुरआन की आयात का मुतालआ करे। उनमें ग़ौर करे। इस किताब को अपनी किताब समझे। सिर्फ़ मुसलमानों की किताब न तसव्वुर करे।

सूरह यूनुस की आयत 67 में है,
''वही है जिसने तुम्हारे वास्ते रात को चैन हासिल करने के लिए बनाया और दिन को रोशन बनाया। बेशक उसमें ध्यान से सुनने वालों के लिये निशानियाँ हैं।''

इन्सान की बड़ी बदक़िस्मती है कि वह रात और दिन की तब्दीलियों से मुसलसल फ़ायदा उठाने में लगा हुआ है मगर रात और दिन के ख़ालिक़ से ग़ाफ़िल है। सच्चे रब का करम सारी इंसानियत पर है। रात सबके वास्ते इसलिए बनाई गई ताकि दिन भर के कामों से थककर रात में आराम करके इन्सान ताज़ा दम हो सके और आने वाले दिन के लिए मुस्तइद हो सके। दिन सबके वास्ते इसलिए बनाया गया है ताकि उसकी रोशनी में इन्सान अपने तमाम काम बख़ूबी अंजाम दे सके। क्या रात और दिन से सिर्फ़ मुसलमान ही फ़ायदा उठाते हैं? अगर नहीं और यक़ीनन नहीं तो समझ लेना चाहिए कि सबका रब वही है जिसने सबके फ़ायदे के लिए रात और दिन बनाए। क्या किसी मूर्ति, किसी पत्थर, किसी मज़ार, किसी इन्सान के इशारे पर रात–दिन में, दिन रात में तब्दील होता है। सोचो ग़ौर करो। अक़्ल से काम लो। यह सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की कुदरत है और कितनी ज़बरदस्त कुदरत है। रात दिन में और दिन रात में बदल जाता है। रात और दिन की निशानियाँ अल्लाह की ऐसी निशानियाँ हैं जो एक समझदार इन्सान को दुनिया के तमाम मनगढ़त रबों की पूजा से हटा देने के लिए काफ़ी है। हाँ! मगर नासमझ इन्सान पर किसी निशानी से कोई असर ही नहीं पड़ता है।

सूरह रअ़द की आयत 12 में है,
''वही है तुमको बिजली दिखाता है जिससे डर और उम्मीद पैदा होती है और वह अपनी कुदरत से भारी बादलों को उठाता है।''

बरसात के मौसम में बिजली का चमकना और पानी से भरे हुए बादलों का उठना सब देखते हैं मगर ग़ाफ़िल इन्सानों को दिल में यह मनाज़िर देखकर अपने रब की अ़ज़्मत पैदा नहीं होती। रब की कुदरत के बजाय वह उन सब चीज़ों को इत्तिफ़ाक़ी चीज़ें समझते हैं। यह उनकी नादानी है। इत्तिफ़ाक़ से तो दुनिया में कुछ भी नहीं हुआ। जो कुछ होता है सच्चे रब के हुक्म से होता है। बिजली का चमकना और बादलों का उठना कोई इत्तिफ़ाक़ी अम्र नहीं है, यह अल्लाह की कुदरतों के नमूने हैं। उसकी कुदरत का तसव्वुर करके उसकी इबादत में ग़र्क़ हो जाओ। यही हक़ है।

इसी सूरह की आयत 12 में है,
''और रअ़द नाम का फ़रिश्ता उसकी ख़ूबियां बयान करता है और दूसरे फ़रिश्ते भी उसका डर रखते हैं और बिजलियों की कड़क भेजता है फिर जिस पर चाहता है उस पर गिरा देता है। यह लोग अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं और उसकी आमद सख़्त है।''

बिजली का किसी पर गिरना बिजली का कड़कना सब उसकी कुदरत से है। नासमझ लोग उसकी कुदरत से उसकी अ़ज़्मत का एहसास दिल में जगाने के बजाय उसकी ज़ात व सिफ़ात के बारे में झगड़ा करते हैं हालाँकि उसकी पकड़ शदीद है। ग़फ़ूर और रहीम होने की वजह से वह इन्सान की बेशुमार हिमाक़तों और जिहालतों को माफ़ कर देता है मगर शदीद इल्तिफ़ात होने की वजह से उसके अ़ज़ाब से भी बेख़ौफ़ न होना चाहिए। कुरआने करीम में जिन तबाहशुदा क़ौमों का जगह जगह ज़िक्र किया गया है, उससे इब्रत हासिल करनी चाहिए। अल्लाह की ज़ात व सिफ़ात में झगड़ा करने का अंजाम ख़ुसरान व तबाही के सिवा और कुछ नहीं। अल्लाह के बारे में झगड़ो मत। उसे मानो वही सच्चा रब है। कोई मूर्ति, कोई मज़ार, कोई पत्थर, कोई इन्सान बादलों में बिजलियों को चमकाने और पानी से भरे हुए बादलों को उठाकर उनको इन्सानों के फ़ायदे के लिए बरसाने की कुदरत नही रखता। आख़िर तुम क्यों ग़ौर नहीं करते? आख़िर तुम कहाँ भटके जा रहे हो? क्या शैतान के नक़्शे क़दम पर चलकर दोज़ख़ में जाने का तहैया (निश्चय) तुमने कर लिया है। अगर ऐसा नहीं है तो जागो। सम्भलो। इससे पहले कि मौत आकर तुम्हारी मोहलत को ख़त्म कर दे। तुम अपने सच्चे रब के क़दमों में गिर पड़ो इससे अपने कुफ़्रो शिर्क और गुनाहों की माफ़ी चाहो। वह बड़ा माफ़ करने वाला है, तौबा करने वालों की ख़ताओं को बख़्श देता है।

सूरह नह्ल की आयत 10 और 11 में है,
''वही है जिसने तुम्हारे लिए आसमान से पानी बरसाया जिसको तुम पीते हो। और उसी से पेड़ पैदा होते हैं। जिनमें तुम अपने जानवरों को चराते हो। उसी पानी से वह तुम्हारे लिए ज़ेतून, खजूरें, अंगूर और हर क़िस्म के फल उगाता है। उसमें ग़ौर करने वालों के लिए निशानी है।''

आज के मशीनी दौर की सबसे बड़ी देन यह है कि उसने इन्सानों को ग़ौरो फ़िक्र करने से महरूम कर दिया है। शहरों शहरों एक आपाधापी मची हुई है, माद्दी तरक़्क़ी के दौर में सब अंधे बनकर लगे हुए हैं। जिस्म के तक़ाज़ों को पूरा करने में रूह को टुकड़े टुकड़े कर दिया गया है। ग़ौरो फ़िक्र से महरूम इन्सान जानवरों की ज़िन्दगी जीने के आ़दी हो गए हैं। न माज़ी में इब्रत हासिल की जाती है। न मुस्तक़्बिल की फ़िक्र है। हाल से मज़ा लेने की धुन है। जो बड़ी तबाहकुन है। वह क़ौम जो ग़ौरो फ़िक्र नहीं करती। बारिश के बरसने दरख़्तों के उगने त़रह त़रह के फल पैदा होने को इत्तिफ़ाक़ी बातें समझते हैं। हालाँकि यह सब सच्चे रब की क़ुदरत के बग़ैर होना नामुम्किन है। दुनिया में इत्तिफ़ाक़ी त़ौर पर कुछ भी नहीं होता। यह इन्सान की ग़लत़ सोच है। शैत़ानी सोच है जो उसे सीधे रास्ते से भटका देती है। ऐसी क़ौम हलाकत का शिकार हो जाती है।

सूरह मोमिन की आयत 13 में है,
''वही है जो तुम्हें अपनी क़ुदरत की निशानियाँ दिखाता है और तुम्हारे वास्ते आसमान से पानी बरसाता है। और नसीह़त वही हासिल करता है जो उसकी त़रफ़ रुजूअ़ करता है।''

दुनिया में हर त़रफ़ सच्चे रब की क़ुदरत के नमूने बिखरे पड़े हैं। निशानियाँ मौजूद हैं, मगर आज के माद्दापरस्त फ़ायदों के पुजारी इन्सान आँखें रखते हुए भी अंधे हैं जिनको यह निशानियाँ और नमूने नज़र नहीं आते। जिनको नज़र आते हैं वह उनमें ग़ौर नहीं करते। ग़ौर इसलिए नहीं करते, नसीह़त इसलिए नहीं हासिल करते कि उनके दिल टेढ़े होकर अपने रब के बजाय ख़ुद साख़्ता रबों की तरफ़ झुके हुए हैं। क्या किसी को अल्लाह की तरह़ यह क़ुदरत हासिल है कि अपने हुक्म से तुम्हारे वास्ते आसमान से पानी बरसा दे? तुम बरसात के मौसम में ख़ूब पानी बरसता हुआ देखते हो। उस पानी से अपनी खेती और बाग़ों को सींचते हो। उस पानी से उ़म्र भर तरह़ तरह़ के फ़ायदे उठाते हो मगर पानी बरसाने वाले की अ़ज़्मत का तसव्वुर भी नहीं करते। क्या यह ज़ुल्म नहीं है? क्या यह ज़्यादती नहीं है? सोचो हमें इतनी बड़ी नेअ़मत से नवाज़ने वाला सच्चा रब है या वो जो एक

बूंद भी बरसाने की क़ुदरत नहीं रखते। किसी पत्थर, किसी मूर्ति, किसी मज़ार या किसी और मख़्लूक़ ने एक बूंद पानी भी आसमान से आज तक नही बरसाया। फिर उनको पूजा का ह़क़ कहाँ से ह़ासिल हो गया? तुम्हारे पास उनको पूजने की उनको अ़ज़ीम समझकर उनको सज्दा करने की आख़िर क्या दलील है? अगर तुम यह सोचकर उनके आगे झुकते हो कि उनकी दुआ़ओं से पानी बरसता है तो यह भी तुम्हारा वहम है। जो बेजान हैं। जो दुआ़ करने की त़ाक़त नहीं रखते। सिर्फ़ जानदार इन्सान जो अल्लाह के नेक बन्दे हों, कुफ़्र, शिर्क और गुनाहों से बचने वाले हों उनका दुआ़ का वसीला लिया जा सकता है और उनकी दुआ़ओं से बारिश होती भी हैं। अपना अ़क़ीदा सही करो। पत्थर, मूर्ति, मज़ार, इन्सानों को भटकाने वाली चीज़ें हैं। अल्लाह से रिश्ता जोड़ो। उसी को पूजो। वही तुम्हारा ख़ालिक़ है जो ज़बरदस्त क़ुदरतों का मालिक है।

सूरह मोमिन की आयत 68 में है,
''वही ज़िन्दा करता है और मारता है। फिर जब किसी काम का हुक्म करता है यही कहता है कि हो जा! तो वो हो जाती है।''

ज़िन्दा करने और मौत देने की क़ुदरत उसी को ह़ासिल है। 'हो जा' कहकर चीज़ों को मौजूद कर देने की क़ुदरत का भी तन्हा वही मालिक है, इसीलिए इ़बादत और पूजा का मुस्तह़िक़ भी वही तन्हा है। दुनिया में इन्सान को यह इख़्तियार दिया गया है कि वह जिसे चाहे पूजे। मगर उसके इख़्तियार में उसका अन्जाम नहीं है। जो ह़क़दार का ह़क़ पहचानेगा वही कामयाब होगा। जिन चीज़ों के पूजने का कोई ह़क़ किसी दलील से क़ायम नहीं होता उन्हें पूजने वालों का अन्जाम दर्दनाक होगा। दुनिया में वह अगर अपने जुर्म की सज़ा से बच भी गए तो मौत के बाद भड़कती हुई आग उनका इस्तिक़्बाल करेगी। लोगों! आग से बचना चाहते हो तो सिर्फ़ अल्लाह की इ़बादत करो। इ़बादत और पूजा उसी का ह़क़ है। यह ह़क़ उसकी मख़्लूक़ को देकर अपने ऊपर ज़ुल्म न करो।

सूरह मुल्क की आयत 15 में है,
''वही है जिसने ज़मीन को तुम्हारे लिए पस्त कर दिया। तो तुम उसके कंधों पर चलो। और उसकी दी हुई रोज़ी खाओ और उसकी त़रफ़ जी उठना है।''

इन्सान कितना नाशुक्रा है जिसकी बनाई हुई ज़मीन पर चलता है उसी से बग़ावत करता है। उसका ह़क़ इ़बादत दूसरों को देता है। उसी को भूल जाता है।

बाक़ी सब याद रखता है। मगर इन्सान यह भी याद रखे कि इतनी बड़ी नाशुक्री की सज़ा भी बहुत बड़ी है। ज़मीन तो क्या, उसके अ़लावा ज़मीन का एक ज़र्रा भी किसी ने पैदा नहीं किया। न कोई उसके अ़लावा उसकी कोई क़ुदरत रखता है। इसी ज़मीन से हमें रिज़्क़ देता है जिसे तुम खाकर राज़िक़ को भूल जाते हो और मूर्तियों, मज़ारों पर अपनी अ़क़ीदतें न्यौछावर करते हो। क्या इससे बड़ी नादानी और नासमझी भी क्या हो सकती है? उसकी पैदा की हुई ज़मीन पर उसका रिज़्क़ खाकर सिर्फ़ उसी की इबादत नहीं करोगे फिर लौटकर मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होकर जब उसके सामने तुम्हारी पेशी होगी। सिवा शर्मिन्दगी के तुम्हारे हाथ कुछ न आएगा, इसलिए सोचो गौ़र करो। साफ़ दलाइल साबित कर रहे हैं कि हर इन्सान का रब एक है। वह अल्लाह है और कोई नहीं। महापुरुषों, वलियों, बुज़ुर्गों, फ़रिश्तों और पैग़म्बरों को भी उसने ही पैदा किया था जो हमें अच्छी बातें बताकर सीधी राह दिखाकर अल्लाह के पैग़ाम सुनाकर इस दुनिया से चले गए। तुम उनकी मूर्तियों, मज़ारों और क़ब्रों और दूसरी अ़लामात को न पूजो। उसी अल्लाह को पूजो जिसके वह वफ़ात पाकर चले गए जिसके पास तुम्हें भी जाना है और अपने अच्छे बुरे कामों का हिसाब देना है।

सूरह अन्आ़म की आयत 95 में है,
"बेशक अल्लाह अपनी क़ुदरत से दाना और गुठली को फाड़ देता है। मुर्दा से ज़िन्दा को और ज़िन्दा से मुर्दा को निकालने वाला वही अल्लाह है फिर तुम किधर बहके जा रहे हो।" सच्चे रब की क़ुदरत का कोई ठिकाना है। दानों और गुठलियों को फाड़ उनसे पौधे निकाल देना और किसी के बस की बात नहीं। जो इतनी बड़ी क़ुदरत रखता है, वही पूजा के क़ाबिल है। इबादत के लायक़ है।

सूरह यूनुस की आयत 31 में है,
"तुम पूछो इन लोगों से कि तुमको रोज़ी कौन देता है? ज़मीन या आसमान से या कौन तुम्हारी आँख और कान का मालिक है? और कौन ज़िन्दा से मुर्दा को और मुर्दा को ज़िन्दा से निकालता है? और कौन कामों की तदबीर करता है? तो वह कहेंगे कि यह सब अल्लाह की क़ुदरत है। तो इनसे कहो कि फिर उससे डरते क्यों नहीं?"

आज के इन्सान निडर और बेख़ौफ़ हो गए हैं। सच्चे रब का डर इनके दिल से निकल चुका है। इसीलिए मनगढ़त रबों की इबादत में लगे हुए हैं और रिज़्क़े हराम खाने में लगे हुए हैं। वरना इस बात को तो मानते हैं कि ज़मीन व आसमान

से उनको रोज़ी देने वाला उनको कान, नाक, आँखें देने वाला जानदार को बेजान से और बेजान को जानदार से निकालने वाला और हर काम की तदबीर करने वाला सिर्फ़ अल्लाह है। साबित हुआ कि सिर्फ़ अल्लाह को मानने से इन्सान की ज़िन्दगी नहीं बदलती बल्कि उसके एहकाम पर चलने, उसकी फ़र्मांबरदारी इख़्तियार करने से उसे सही रास्ता मिलता है उसका डर इन्सान को उसके एहकामात से मुँह मोड़ने से बचाता है। उससे बेख़ौफ़ी, कुफ़्र, शिर्क और गुनाहों में मुलव्विस कर देती है। इसलिए लोगों! अल्लाह के डर को अपने अंदर जगाओ। उसके सिवा दूसरों को पूजना छोड़ दो। बेहयाई और बेशर्मी की तमाम बातों से दूर रहो, इसी में तुम्हारी निजात है।

इसी सूरह की आयत 32 में है,
"सो यह अल्लाह ही तुम्हारा सच्चा रब है फिर सच के बाद भटकने के अ़लावा और क्या है? सो तुम कहाँ से लौटे जाते हो।"

आयत 31 में सच्चे रब की क़ुदरतों को बयान करने के बाद उसी सूरह में वाज़ेह कर दिया कि बेइंतिहा क़ुदरतों का मालिक अल्लाह ही है और वह ही सच्चा रब है जो सच्चे रब की इबादत इख़्तियार नहीं करेगा वह भटक जाएगा, गुमराह हो जाएगा और शैत़ान उसे उचक लेगा। लोगों! अपने रब की क़ुदरतों को उसके आइने में देखो और उसे पहचानो। वही तुम्हारे दिलों की गहराई में छुपा हुआ है मगर अपने दिल पर ग़फ़लत के पर्दे डाल रखे हैं इसलिए जगह जगह भटकते फिर रहे हो। जागो! सम्भलो! हक़ीक़त को पहचानो। इसी में तुम्हारी नजात है।

सूरह रूम की आयत 29 में है,
"वह ज़िन्दा को मुर्दा से निकालता है और मुर्दा को ज़िन्दा से निकालता है और ज़मीन को उसके मरने के बाद ज़िन्दा करता है और उसी क़ब्रों से तुम निकाले जाओगे।"

सच्चे रब की एक भी क़ुदरत किसी फ़र्ज़ी रब में नहीं पाई जाती, जिसे इन्सानों ने अपने बाप दादा की देखा देखी या अपने इर्द गिर्द के माहौल से मुतास्सिर होकर अपना रब बना लिया हो और उसको मअ़बूद बनाकर उसी की इबादत और पूजा में लगे हुए हो। ज़िन्दा को मुर्दा से निकालना यानी नुत्फ़े से इन्सान और अण्डे से मुर्ग़ी के बच्चे को और बीज से पौधे को पैदा करना। मुर्दा को ज़िन्दा से निकालना इन्सान से नुत्फ़े और मुर्ग़ी से अण्डा और पौधे से बीज को

पैदा करना उसी अल्लाह की क़ुदरत है। वही सच्चा रब है। लोगों! तुमसे रब के इंतिख़ाब में बड़ी ग़लती हो रही है जिसकी वजह से तुम्हारी पूरी ज़िन्दगी ग़लत रुख़ पर मुड़ गई है। सोचो ग़ौर करो दुनिया के भटके हुए इन्सानों के पीछे अंधे बनकर न भटको। उनकी आरज़ी ख़ुशहाली से धोखा न खाओ। अल्लाह दुनिया की नेअ़मतों का दरवाज़ा किसी पर बन्द नहीं करता जो उसको मानता है उसे भी देता है। जो उसे नहीं मानता है उसके हुक्मों को तोड़ता है, उसे भी देता है। बल्कि उसका तरीक़ा यह है कि वह अपने न मानने वालों को दुनिया की नेअ़मतें बढ़ा चढ़ाकर देता है ताकि वह गुमराही के अंधेरे में भटकते फिरे। नादानों! नेअ़मतें मिलने पर इतराओ मत। यह तुम्हारा इम्तिहान है। अगर तुमने नेअ़मतों के दाता अल्लाह को न पहचाना। उसके शुक्रगुज़ार न बने, उसकी पूजा से मुँह मोड़ा तो तुम इम्तिहान में फेल हो जाओगे। बारिश बरसाकर उसके पानी से ज़मीन को जो मुर्दा हो जाती है, दोबारा ज़िन्दा करना सच्चे रब की कितनी बड़ी क़ुदरत है। यह दलील है इस बात की कि मरने के बाद क़यामत के दिन मुर्दे अपनी क़ब्रों से निकाले जाएँगे और जिनको जलाकर उनकी राख को हवा में उड़ा दिया गया था। उनको ज़िन्दा करना भी अल्लाह के लिए मुश्किल नहीं। तुम यक़ीन करो या न करो, यह होकर रहेगा।

सूरह ज़ुमर की आयत 21 में है, '
'क्या तुमने नहीं देखा अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा। फिर ज़मीन को चश्मों में जारी कर दिया। फिर वह उससे खेती निकालता है। जो कई कई रंग बदलती है। फिर जब पूरी तैयारी के बाद उसका रंग पीला पड़ जाता है फिर वह उसको चूरा चूरा कर देता है। बेशक इसमें अ़क्लमंदों के लिए नसीहत है।''

आसमान से पानी का बरसना सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की क़ुदरत के नमूने हैं। उसी पानी से खेतियां लहलहाती हैं। तरह तरह के फल और सब्ज़ियाँ पैदा होती हैं जिनको इन्सान जानवरों की तरह रात दिन इस्तेमाल करता है, मगर उन नेअ़मतों के पैदा करने वाले का शुक्र अदा नहीं करता। तुफ़ है इन्सानों पर जो इतने बड़े मुन्इम, इतने अ़ज़ीम मुहस्सिन की पूजा करने की बजाय मूर्तियों और पत्थरों, मज़ारों और अपने ही जैसे इन्सानों को पूजने की हिमाक़त में मुब्तला हैं। जिस तरह बाग़ की सरसब्ज़ी चंद दिनों की होती है। जिस तरह खेती का लहलहाना चंद दिनों का होता है। फिर वह ज़र्द होकर चूरा चूरा हो जाती है, इसी तरह इन्सान की ज़िन्दगी है। एक थोड़े से वक़्त के लिए इन्सान ज़िन्दा रहता है, तरक़्क़ी करता है, फलता फूलता है और फिर फ़ना के घाट उतर जाता है। ऐसी

फ़ानी ज़िन्दगी पर जान देना अ़क़्लमंदों का काम नहीं। अ़क़्लमंद लोग उस ज़िन्दगी में कामयाबी हासिल करने के लिये इस्तेमाल करते हैं जो ख़त्म न होगी।

सूरह रूम की आयत 50 में है,
''सो अल्लाह की रहमत की निशानियों पर नज़र डालो कि आसमान से पानी बरसाकर वह किस तरह मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा करता है। बेशक वही मुर्दों को ज़िन्दा करेगा और वही हर चीज़ पर क़ादिर है।''

अल्लाह ने अपनी किताब में मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा करने का बयान जगह जगह किया है ताकि लोग इसमें ग़ौर करके सही नतीजे पर पहुँचने की कोशिश करें। जो समझदार लोग मरने के बाद दुनियावी जिस्म के साथ क़यामत के दिन दोबारा ज़िन्दा होने को नहीं मानते, उनके लिए यह वाज़ेह दलील है। अगर वह खुले दिमाग़ व दिल से सोचें। जो मुर्दा ज़मीन को दोबारा ज़िन्दा कर सकता है, उसके लिए मुर्दा इन्सान को दोबारा ज़िन्दा करना कुछ भी मुश्किल नहीं। जो एक बार पैदा करने की क़ुदरत रखता है वह उसी काम पर नहीं हर काम पर क़ादिर है।

सूरह शोअ़रा की आयत नं. 9 मे है,
''क्या इन्होने अल्लाह को छोड़कर दूसरे काम बनाने वाले को पकड़ रखे हैं सो इनको जानना चाहिए कि अल्लाह ही सबके काम बनाने वाला है और वह मुर्दा को ज़िन्दा करता है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।''

पत्थर, पेड़, मज़ार, मूर्ति और तुम जैसे दूसरे इन्सान तुम्हारी तक़्दीरों का फ़ैसला नहीं करते। तुम्हारे बिगड़े हुए काम नहीं बनाते। यही तुम्हारा वहम है। ग़लत ख़्याल है। तक़्दीरें बनाने वाला तो सिर्फ़ सच्चा रब है जो क़यामत के दिन तमाम मरे हुए इन्सानों को ज़िन्दा करके उनके कामों का हिसाब लेने पर भी क़ादिर है।
सूरह हदीद आयत 17 में है,
''जान लो अल्लाह ज़मीन को मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा करता है, हमने खोल खोलकर अपनी निशानियों को बयान कर दिया है ताकि तुम अ़क़्ल से काम लो।''

बे अ़क़्ली से ज़िन्दगी गुज़ारने वाले अपने बाप दादा के तरीक़े पर चलने वाले, भेड़ो की तरह दूसरे लोगों का रास्ता अपनाने वाले सच्चे रब की बताई हुई

निशानियों से कोई फ़ायदा नहीं उठाते। बाप पत्थरों का पुजारी था, बेटा भी ऐसा ही किये चला जाता है। बाप मज़ारों पर सज्दे लुटाता था, उस पर चादरें चढ़ाता था, उनसे मिन्नतें मांगता था, तो बेटा भी उस त़रीक़े को छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। क्या इसे अन्धी तक़्लीद नहीं कहेंगे, क्या इसे बेअ़क़्ली के सिवा कोई और नाम भी दिया जा सकता है। मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा करने वाले की क़ुदरत को समझो और उसी को पूजना अ़क़्लमंदी की बात है।

सूरह तौबा आयत 116 में है,
''बेशक आसमानों और ज़मीन में अल्लाह ही की हुकूमत है, वही ज़िन्दा करता है और मारता है और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई कारसाज़ और मददगार नहीं है।''

ज़मीनो आसमान का इंतिज़ाम करना कोई आसान काम नहीं है। ज़िन्दा करना और मौत देना कोई हंसी खेल नहीं है। इन्सानों! ऐसी क़ुदरतों के मालिक को नज़रअंदाज़ करके तुम कौनसी अ़क़्लमंदी का मुज़ाहिरा कर रहे हो। दुनिया के आ़रज़ी फ़ायदों के लिए तुम मूर्तियों और मज़ारों पर ऐसे गिर रहे हो जैसे बच्चे टॉफ़ियों पर गिरते हैं। तुमने आ़ला को छोड़कर अदना से अपना रिश्ता जोड़ लिया। याद रखो तुम्हारा कारसाज़ और मददगार अल्लाह के सिवा और कोई नहीं। बच्चे टॉफ़ियां खाकर अगर बाप को नज़रअंदाज़ करने लगें तो क्या यह नाशुक्री नहीं होगी? दुनिया की नेअ़मतें इस्तेमाल करके अगर नेअ़मतें अ़ता करने वाले रब को तुम नज़रअंदाज़ करोगे और उसको छोड़कर या उसके साथ दूसरों को भी पूजोगे तो बच्चो की तरह़ नादान कहलाओगे।

सूरह यूनुस की आयत 56 में है,
''वही ज़िन्दा करता है और मारता है और उसी की तरफ़ लौटकर जाना है और अपने अच्छे बुरे कामों का ह़िसाब देना है।''

यह तसव्वुर दिमाग़ों से निकल जाने की वजह से ही आज के इन्सान बेख़ौफ़ी की ज़िन्दगी गुज़ार रहे है। बुराइयों में मुब्तला हो गए हैं। और एक अच्छे समाज की तश्कील में रुकावट बने हुए हैं।

सूरह मोमिनून की आयत 80 में है,
''और वही ज़िन्दा करता और मारता है। रात दिन को बदलना उसी का काम है। क्या तुम अ़क़्ल से काम नहीं लेते।''

सूरह रूम की आयत 24 में है, ''और उसकी निशानियों में से यह है कि वह तुमको बिजली दिखाता है। जिससे डर और उम्मीद पैदा होती है। इसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो अ़क़्ल से काम लेते हैं।''

बेअ़क़्ल बनकर बाप दादा की राह पर चलते रहना और उसके सही या ग़लत़ होने के बारे में ग़ौर न करना। अपने माहौल की रस्मों और त़रीक़ों के पीछे पड़े रहना और उनके ह़क़ या बात़िल होने के बारे में न सोचना दानिशमन्दों का काम नहीं है।'' दानिशमन्द अपनी फ़हम और अ़क़्ल से काम लेकर कायनात में बिखरी हुई सच्चे रब की निशानियों से नसीह़त हासिल करता है। बिजली की चमक जो दिलों में डर और उम्मीद के मिले जुले जज़्बात पैदा करती है। आसमान से बरसने वाला पानी जो मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा करता है। सूखी हुई ज़मीन को सरसब्ज़ बना देता है। यह और ऐसी कई निशानियाँ उसके दिलो दिमाग़ को रोशन करके उसे वहमो गुमान के अंधेरे से निकाल देती है और वह समझ लेता है कि उन निशानियों को ज़ाहिर करने वाला उन क़ुदरतों का मालिक वही उसका सच्चा रब है जो अल्लाह है।

सूरह मोमिन की आयत 68 में है,
''वही है जो ज़िन्दा करता और मारता है फिर जब किसी काम का फ़ैसला करता है तो कहता है कि 'हो जा' वह हो जाता है।''

जानदारों को एक तयशुदा वक़्त तक ज़िन्दा रखना और फिर मौत देना उसी के इख़्तियार में है। उसी की क़ुदरत है, 'हो जा' कहने से चीज़ों को मौजूद कर देना उसी की क़ुदरत है। ऐसी क़ुदरत वाले को छोड़कर दूसरों को पूजना कहां की अ़क़्लमंदी है। सोचो और ग़ौर करो, तुम्हारा दिल ख़ुद गवाही देगा कि वही हमारी पूजा का मुस्तह़िक़ है।

सूरह दुख़ान की आयत 8 में है,
''उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं है, वही जिलाता है और मारता है। वही तुम्हारा और तुम्हारे बाप दादा का रब है।''

आयत से यह ह़क़ीक़त खुलकर सामने आ जाती है कि, सबका रब एक ही है और वह अल्लाह है। तमाम जानदार और बेजान चीज़ों का ख़ालिक़ अल्लाह ही है। जिलाना और मारना उसी की क़ुदरत है। इसलिए वही मअ़बूद बनने के लायक़ है। उसके सिवा दूसरों की इबादत करना या उसको मानकर उसके साथ दूसरों को भी पुकारना दोनों त़रीक़े ग़लत़ हैं। वही सिर्फ़ और सिर्फ़ वही पूजा के क़ाबिल

है। वह एक सब पर भारी है। वह अकेला ताक़तवर है। सब उसके मुक़ाबले में कमज़ोर हैं।

सूरह हदीद की आयत 2 में है,
"आसमान व ज़मीन की सल्तनत सब उसी के लिए है, वही जिलाता और मारता है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।"

सूरह फ़ातिर की आयत 13 में है,
"वह रात को दिन में और दिन को रात में दाख़िल करता है और उसने सूरज और चांद को काम में लगा दिया है। हर एक अपने मुक़र्ररा वक़्त तक चलता है। यह अल्लाह है जो तुम्हारा रब है। उसी के लिए बादशाहत है और जिनको तुम उसके सिवा पुकारते हो, वो खजूर के गुठली के छिल्के के बराबर भी इख़्तियार नहीं रखते।"

सच्चे रब की कितनी हैरतअंगेज़ कुदरत का इज़्हार इस आयत में किया गया है। क्या अल्लाह के सिवा किसी पत्थर, किसी मूर्ति, किसी मज़ार या किसी इन्सान में यह कुदरत है कि वह आने वाले दिन या आने वाली रात को रोक ले? क्या कोई दिन के उजाले को रात के अंधेरे में या रात के अंधेरे को दिन के उजाले में तब्दील कर सकता है? क्या कोई सूरज को रात में और चांद को दिन में निकलने पर मजबूर कर सकता है? अगर नहीं। और यक़ीनन नहीं कर सकता। तो समझ लेना चाहिए कि अल्लाह को छोड़कर मूर्ति, मज़ार की पूजा करना बेवकूफ़ी के सिवा और कुछ नहीं है। सच्चा रब अल्लाह ही है जो तमाम इन्सानों का रब है। वही ज़मीनो आसमान में अपनी कुदरत का सिक्का जमाये हुए है। तुम जिन्हें अल्लाह का हक़ देकर दोज़ख़ के ख़रीदार बन रहे हो। हमेशा के अ़ज़ाब मोल लेने पर तुले हुए हो। वो कितने कमज़ोर हैं। कितने बेबस है। इस हक़ीक़त से पर्दा उठाने के लिए भी यह आयत काफ़ी है। तुम समझते हो हमें जो रिज़्क़ मिल रहा है, तुम पर जो बारिशें बरसाई जा रही है। हमें जो मुख़्तलिफ़ क़िस्म के फ़ायदे पहुंच रहे हैं तुम जिस सेहत। तंदुरुस्ती और ख़ुशहाली के लुत्फ़ शब व रोज़ उठा रहे हो वह किसी मूर्ति की पूजा करने या किसी मज़ार पर चादर चढ़ाने और उसकी अ़क़ीदत दिल में रखने की वजह से है। तो ऐसा समझना तुम्हारा वहम है। तुम्हारी भूल है। शैतानी वस्वसा है जो उसने तुम्हें सीधी राह से हटाने के लिए तुम्हारे दिल में डाल दिया है। क्योंकि तुम्हारे सच्चे रब ने जो तुम्हारा ख़ैरख़्वाह है, तुम्हारा हमदर्द है, तुम्हें दोज़ख़ की आग से बचाकर जन्नत के बाग़ों में ले जाना चाहता है, उस सच्चे रब ने फ़र्मा दिया है कि उसके सिवा पूजे जाने वालों को

खजूर के छिल्के की गुठली के बराबर भी इख़्तियार हासिल नहीं। इस आयत की रोशनी में सोचो और ग़ौर करो कि एक इन्सान होने के नाते तुम कितनी बड़ी ग़लती का शिकार हो रहे हो। छोड़ दो मूर्तियों और मज़ारों को, जो बिलकुल बेइख़्तियार है। तुम्हारे ही हाथों के बनाये हुए हैं। बढ़ो! उस रब की तरफ़ जो मुकम्मल इख़्तियार रखता है।

सूरह हदीद की आयत 6 में है,
"वह रात को दिन में और दिन को रात में दाख़िल करता है और उसको सीनों में छुपी हुई बातों का भी इल्म है।"

सूरह हज्ज की आयत 61 में है,
"हक़ाइक़ इस वास्ते बयान किये गए हैं ताकि तुम समझ लो कि अल्लाह रात को दिन में और दिन को रात में दाख़िल करता है और वह सुनने वाला और देखने वाला है।"

सूरह इब्राहीम आयत 19 में है
"अगर वह चाहे तो हमें हटाकर हमारी जगह दूसरी क़ौम को ले आए।"

सच्चे रब की यह बहुत बड़ी कुदरत है कि वह एक नाफ़र्मान कुफ़्र मअ़सियत में मुलव्विस डूबी हुई क़ौम को जो इंसानियत के लिये ख़तरा बन जाए, वहाँ से हटाकर फ़ना करके किसी दूसरी क़ौम को उसका क़ायम मक़ाम बना दे। यह इतना बड़ा काम है कि जो सच्चे रब के सिवा किसी के बस का नहीं है। उसकी मशिय्यत के आगे कोई दम मारने की जुर्रात नहीं कर सकता तो फिर ऐसे साहिबे इक़्तिदार को छोड़कर किसी और को अपना रब बनाकर उसकी पूजा करना कहाँ की अ़क़्लमंदी और कहां की दानिशमन्दी है। तुम ख़ुद ही ग़ौर करो! फ़ैसला तुम्हें ही करना है। तुम्हारे किये गए फ़ैसले का असर भी तुम्हारी ही ज़िन्दगी पर पड़ने वाला है। जैसा फ़ैसला करोगे उसी के मुताबिक़ नतीजा तुम्हारे सामने आएगा। तुम दुनिया में किसी को भी अपना रब बना लो। किसी की भी पूजा करने के लिए आज़ाद हो। मगर याद रहे कि यह आज़ादी तुम्हारे लिए नुक़्सान का बाइस न बन जाए। इस तरह कि तुम अपनी आज़ादी के ज़ुअ़म/घमण्ड में किसी ग़लत फ़ैसले की वजह से ग़लत राह पर मुड़कर अपनी ज़िन्दगी तबाह कर डालो। सच्चे रब के कलाम कुरआने अ़ज़ीम की रोशनी में कोई फ़ैसला करोगे तो हर ख़तरे से मेहफ़ूज़ रहोगे, क्योंकि उसी का कलाम बरहक़ है।

सूरह हज्ज की आयत 63 में है,
''क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा, फिर उससे ज़मीन हरी भरी हो जाती है। बेशक अल्लाह बेहतरीन तदबीरों का जानने वाला और हर चीज़ से बाख़बर है।''

आज का इन्सान, ग़ाफ़िल इन्सान, नफ़सानी ख़्वाहिशों में अंधा बन जाने वाला इन्सान, जानवरों की तरह ज़िन्दगी गुज़ारने वाला इन्सान, आसमान से बरसते हुए पानी को देखता है। उससे फ़ायदा उठाता है, मगर कभी नहीं सोचता है कि इतनी अहम चीज़ कि जिसके बग़ैर ज़मीन का वजूद ही नहीं रह सकता, उसके फ़ायदे के लिए किसने उतारी? क्या किसी मूर्ति और मज़ार की मेहरबानी से ऐसा हुआ? अगर तुम ऐसा यक़ीन रखते हो तो इसका सबूत पेश करो? तुम यक़ीनन कोई सबूत नहीं पेश कर सकते। तुम दिल से समझते हो कि बारिश बरसाने का काम सिर्फ़ उसी का है जो एक है मगर अपने नफ़्स की ग़लत रहनुमाई से तुम उस पानी बरसाने वाले को भूलकर दूसरों की पूजा में लगे हुए हो। उस एहसान फ़रामोशी को छोड़कर ही तुम कामयाब हो सकते हो। सच्चे रब के इस अ़ज़ीम एहसान को याद रखकर उसी की पूजा करो, उसकी इबादत में अपना वक़्त लगाओ। तुम्हारे सिर की इज़्ज़त उसी में है कि वह सिर्फ़ अल्लाह के आगे झुके। हर दर पर उसे झुकाकर उसकी ज़िल्लत का सामान मुहैया न करो।

सूरह नूर की आयत 43 में है,
''क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह बादल को उठाता है। फिर उनको आपस में मिला देता है। फिर एक के ऊपर एक करके रखता है। फिर तू देख कि उनके बीच में से पानी निकलता है। और वह आसमान में पाये जाने वाले ओलों के पहाड़ ज़मीन पर उतारता है। फिर जिस पर चाहे उस पर डाल देता है। और जिसको चाहे उनको बचा लेता है। बिजली चमकती है तो ऐसा लगता है कि आँखों को उचक ले जाएगी। अल्लाह रात और दिन को बदलता है। उसमें आँखों के लिए ध्यान का मौक़ा है।''

सच्चे रब की क़ुदरतों को पहचानने के लिए इन्सान को चाहिए कि इस आयत को बार बार पढ़े, समझे और ग़ौर करे। बरसात के मौसम में मुसलसल बादलों को उठना छोटे छोटे बादलों का बड़े बड़े बादलों में बदल जाना, एक के ऊपर एक बादलों का दिखाई देना, बादलों से पानी का बरसना, ओलो का गिरना, उनका कहीं गिरना और कहीं न गिरना, बिजली का चमकना और उसकी चमक से आँखों का चुंधिया जाना तुम हर साल देखते हो मगर ग़ाफ़िल बनकर देखते

हो। इसलिए तुम्हारे दिल में अपने रब की अ़ज़्मत का एहसास बेदार नहीं होता और तुम उसकी इतनी अ़ज़ीम कारीगरी और क़ुदरत का कोई असर नहीं लेते और झूठे और मनगढ़त रबों की पूजा में लगे रहते हो। याद रखो इसमें तुम्हारा ही नुक़्सान है। रब का कुछ बिगड़ने वाला नहीं है। वह क़दीर भी है और ग़नी भी है, वह सबसे बेनियाज़ है, अगर सारी दुनिया के लोग मूर्ति और मज़ारों के पुजारी बन जाएँ तो भी उसकी अ़ज़्मत में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ने वाला है। तुम उसके दर को छोड़कर ज़रूर अपना नुक़्सान करोगे।

सूरह फ़ातिर की आयत 27 में है,
''क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा फिर हमने उनसे मुख़्तलिफ़ रंगों के फल निकाले और पहाड़ों में सफ़ेद सुर्ख़ और काले मुख़्तलिफ़ रंगों की घाटियाँ हैं और इसी तरह इन्सानों, कीड़ों, चौपायों के भी मुख़्तलिफ़ रंग हैं, समझदार लोग ही अल्लाह का डर रखते हैं, यक़ीनन अल्लाह ज़बरदस्त भी है और बख़्शने वाला भी है।''

सच्चे रब की क़ुदरतों का कोई ठिकाना है, एक से एक ज़बरदस्त क़ुदरत, मूर्तियों, मज़ारों और सितारों को तो इन्सान अपनी ग़फ़लत, ला इल्मी और नादानी की वजह से पूज रहा है और ख़ुद को दोज़ख़ के शोलों का हक़दार बना रहा है। इन्सान ग़ौरो फ़िक्र से काम लेना शुरू कर दे तो हक़ीक़त उसके दिल पर ज़ाहिर हो जाए। दुनिया में पाई जाने वाली मुख़्तलिफ़ चीज़ों के मुख़्तलिफ़ रंग हैं, एक ही पानी से पैदा होने वाले फलों के रंग मुख़्तलिफ़ हैं, पहाड़ों में पाई जाने वाली घाटियों के रंग मुख़्तलिफ़ हैं, इन्सानों, कीड़ों और चौपायों के रंग मुख़्तलिफ़ हैं। ग़ौर करो कि आसमान से बरसने वाला पानी तो एक ही रंग का है जिसकी वजह से तरह तरह के फल और सब्ज़ियाँ पैदा होती हैं। इसी तरह ज़मीन पर पाये जाने वाले तरह तरह के इन्सानों का ख़ालिक़ भी एक ही है। जो लोग महापुरुषों और मूर्तियों की पूजा कर रहे हैं वह मूर्तियों को अपनी क़िस्मत का मालिक समझ बैठे हैं, जो सही नहीं हैं। जो लोग बुज़ुर्गों की मज़ारों पर सज्दे लुटा रहे हैं। वह मज़ारों में दफ़न बुज़ुर्गों को अपनी क़िस्मतों का मालिक समझ बैठे हैं। एक रब को छोड़कर किसी ने अपना रब मूर्तियों को बनाया, किसी ने अपना रब मज़ारों को बनाया और सब सीधी राह से भटक गए। उतारो अपने सच्चे रब की अ़ज़्मत अपने दिल में। निकाल दो सबका ख़ौफ़ अपने दिल से। वहम व जिहालत के अंधेरों से यक़ीन व इल्म की रोशनी में आओ। इसी में तुम्हारी नजात है।

सूरह ज़ुमर की आयत 21 में है,
''क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा फिर उसे ज़मीन पर पाये जाने वाले चश्मो पर चलाए, फिर उसकी मदद से कई रंगों की खेती उगाता है, फिर वह खेती तैयारी पर आए फिर तू उसे ज़र्द होता हुआ देखे फिर वह उसको चूरा चूरा कर डालता है। बेशक उसमें अ़क्लमंदों के लिए नसीहत है।''

सच्चे रब की कुदरत से आसमान से पानी बरसता है। उस पानी की मदद से तरह तरह की सब्ज़ियाँ और अनाज पैदा होता है। इन्सान सब्ज़ियों और अनाज को तो इस्तेमाल करता है मगर उस रब को भूल जाता है, यह उसकी सबसे बड़ी नादानी है। अ़क्लमंदों का काम तो सिर्फ़ अपने रब की इबादत करना होता है। वह चूरा चूरा हो जाने वाली खेती से नसीहत हासिल करता है और ज़िन्दगी के नशे में मौत से ग़ाफ़िल नहीं होते। दुनिया की चंद रोज़ा बहार खेती की आरज़ी बहार की तरह उनकी आंखों पर पर्दा नहीं डालती। वह हर हाल में अपने रब की रहमतों के मुंतज़िर रहते हैं। उसके इन्आ़मात और एहसानात को याद करके उसके शुक्रगुज़ार बन्दे बनकर ज़िन्दगी गुज़ारते हैं।

सूरह अन्आम की आयत 99 में है,
''और उसी ने आसमान से पानी उतारा फिर उससे हमने हर उगने वाली चीज़ निकाली। फिर उसमें से सब्ज़ खेती निकाली जिससे हम एक पर एक जड़े हुए दाने निकालते हैं और खजूर के गाभे में से फल के झुके हुए गुच्छे अंगूर, अनार और ज़ेतून के मिलते जुलते और अलग अलग बाग़ पैदा करते हैं। देखो हर एक दरख़्त के फल को जब वह फल देता है और फलों के पकने को भी देखो, इन चीज़ों में यक़ीन करने वालों के लिये सच्चे रब की निशानियाँ हैं।''

बारिश के पानी का बादलो से बरसना और उसके ज़रिये से हरी भरी सब्ज़ियों और फलों का पैदा होना सच्चे रब की बड़ी ज़बरदस्त कुदरत है। रब का हुक्म न हो तो पानी की एक बूंद आसमान से न गिरे। कोई सब्ज़ी कोई फल न पैदा हो। दूसरों की पूजा में अपना वक़्त ज़ाया करने वालों सोचो और समझो। आँखें रखते हुए अन्धे न बनो। दिमाग़ रखते हुए बेवकूफ़ी का मुज़ाहिरा न करो। अल्लाह ने तुम्हें क्या क्या नेअ़मतें बख़्शी हैं।

सूरह अन्आ़म की आयत 141 में है,
''और वही है जिसने ऐसे बाग़ पैदा किये जो टटियों पर चढ़ाए जाते हैं और जो टटियों पर नहीं चढ़ाए जाते हैं और खजूर के पेड़ और खेती जिसके फल मुख़्तलिफ़ हैं और पैदा किया ज़ेतून को और अनार को एक दूसरे से मिलते जुलते भी और जुदा जुदा भी, उनके फलों में से खाओ जिस वक़्त वह फल लाएँ और उनका हक़ अदा करो जिस दिन उनको काटो और बेजा ख़र्च न करो, क्योंकि बेजा ख़र्च करने वाले उसको पसंद नहीं है।''

(मअ़रूशात तो वो बेले हैं जो टटियों पर चढ़ाई हुई हों जैसे अंगूर वग़ैरह और ग़ैर मअ़रूशात वो फल व दरख़्त हैं जो जंगलों और पहाड़ों में उग आते हैं, जो यक्सा भी होते हैं और जुदागाना भी यानी देखनें में एक जैसे और ज़ायक़े में जुदागाना) लोगों! उसकी कुदरत का अंदाज़ा तो लगाओ, जिसने ज़मीन से तुम्हारे लिए तरह तरह की चीज़ें उगाई, तुम उन चीज़ों को इस्तेमाल तो करते हो, उनसे फ़ायदा तो उठाते हो, मगर उसका शुक्र अदा नहीं करते जिसकी कुदरत से यह तमाम चीज़ें पैदा हुई है। क्या कोई मूर्ति, मज़ार या इन्सान ऐसा है जो खजूर, ज़ेतून, अनार या किसी और फल को पैदा कर दे? आख़िर तुम्हें हो क्या गया है? तुम तमाम चीज़ों के पैदा करने वाले को छोड़कर अपने हाथों से बनाई हुई मूर्तियों, मज़ारों को क्यूँ पूजते हो? अपने ही जैसे इन्सानों में क्यों लगे हुए हो? जागो, सम्भलो! इससे पहले कि मौत तुम्हारी ज़िन्दगी की रही सही मोहलत को भी ख़त्म कर डाले और तुम अपने सच्चे सबसे अ़ज़ीम रब के सामने इस हालत में पहुँचों कि तुम उसके साथ शिर्क और कुफ़्र में मुब्तला थे और इस जुर्म में हमें मुख़्तलिफ़ अ़ज़ाबों का सामना करना पड़े।

सूरह आ़राफ़ की आयत 57 में है,
''और वही है जो बारिश से पहले बारिश की खुशख़बरी लाने वाली हवाएँ चलाता है। यहाँ तक कि जब वह हवाएँ भारी बादलों को उठा लाती हैं, हम उस बादल को एक मुर्दा शहर की तरफ़ हाँक लाते हैं फिर उससे पानी उतारते हैं, फिर उससे सब तरह के फल निकालते हैं। इसी तरह हम मुर्दा को क़ब्रों से निकालेंगे ताकि तुम ग़ौर करो। और जो ज़मीन पाकीज़ा है। वह अपने रब के हुक्म से अच्छा सब्ज़ा उगाती है, और जो ख़राब है उससे नाक़िस सब्ज़ा निकालता है। इस तरह हम अपनी आयतों को फेर फेरकर समझाते हैं उन लोगों के लिए, जो हमारा शुक्र अदा करते हैं।''

नाशुक्रे इन्सान के लिए इस दुनिया में हिदायत का दरवाज़ा बंद है। सच्चे रब की किसी निशानी से वह कोई असर कुबूल नहीं करता। वह खुशगवार हवाओं को चलता हुआ मेहसूस करता है। बादलों को बरसते हुए देखता है। तरह तरह के फलों को दरख़्तों पर उगते हुए देखता है। ज़रखेज़ ज़मीन से उगता हुआ सब्ज़ा उसे नज़र आता है मगर वह देखते हुए भी कुछ नहीं देखता, क्योंकि उसका दिल ग़फ़लत का शिकार है। वह उन तमाम नेअ़मतों से ग़ाफ़िल होकर अपनी ज़िन्दगी बर्बाद कर रहा है। शुक्र करने वाला अपने रब के सिवा किसी को नहीं पूजता। किसी से अपने दिल का तअ़ल्लुक़ नहीं बढ़ाता। सारी दुनिया भी अगर मूर्तियों को पूजने में लग जाए, मज़ारों के चक्कर काटने लगे, दरख़्त, सूरज, चांद और सितारों की इबादत करने लगे, अपने जैसे इन्सानों को भगवान का दर्जा देने लगे तो भी वह तन्हा अपने रब के अ़लावा किसी की पनाह में जाने के लिए तैयार नहीं होता। उसका दिल अपने पैदा करने वाले रब की तरफ़ मुत्मइन रहता है। लोगों! शुक्र करने वाले बनो। अपने रब के साथ या अपने रब को छोड़कर किसी और को न पूजो। इसी में तुम्हारी निजात है, तुम्हारी मुक्ति है। सूरह अम्बिया की आयत 30 से 33 तक सच्चे रब की कुदरतों का दिल को छू जाने वाला बयान है बशर्तेकि दिल दुनिया की मुहब्बत में फंसकर बिलकुल ही मुर्दा और बेबस न हो गए हो।

आयत 30 से 33 में है,

"और क्या इन इन्कार करने वालों ने नहीं देखा कि आसमान व ज़मीन के मुँह बंद थे, फिर हमने उनको खोल दिया और हमने हर जानदार चीज़ को बनाया। फिर भी क्या यह ईमान नहीं लाते। और हमने ज़मीन में भारी बोझ रख दिये ताकि ज़मीन उनको लेकर झुक न पड़े। और ज़मीन में कुशादा राहें बनाई, ताकि वह राह पाये। और हमने आसमान को एक महफ़ूज़ छत बनाया और वह आसमान की निशानियों पर ग़ौर नहीं करते और वही है जिसने रात दिन चाँद सूरज को बनाया। सब अपने दायरे में फिरते रहते हैं।"

सच्चे रब की कुदरतों का अन्दाज़ा लगाओ, जिसने बंद आसमान और बंद ज़मीन को तुम्हारे फ़ायदे के लिए खोल दिये। आसमान से बारिश होने लगी और ज़मीन से पैदावार का सिलसिला शुरू हुआ। तो अगर वह उन दोनों को बंद ही रहने देता और यह आपस में पहले ही की तरह जुड़े रहते तो क्या तुम्हारा वुजूद यहाँ नज़र आता? यह उसी की कुदरत है कि हर जानदार को पानी से पैदा किया। ज़मीन पर पहाड़ों का बोझ रख दिया ताकि ज़लज़लों से ज़मीन हिल न

जाए। ज़मीन पर खुले हुए रास्ते बना दिये जिन पर चलकर तुम अपनी मंज़िल तक पहुँचते हो। दिन रात चांद सूरज सब उसी की कुदरत के करिश्मे हैं और सब उसी के हुक्म के पाबन्द है। अफ़सोस के ऐसे क़ादिर और मुहसिन रब के साथ तुम दूसरों को शरीक करते हो और अपने हाथों से बनाई हुई मूर्तियों और मज़ारों की पूजा करते हो। अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात में डूबे रहते हो। आख़िर तुम इन्सान होकर जानवर क्यूँ बने रहते हो बल्कि यह तो जानवर से भी बदतर होना है क्योंकि जानवर भी अपने मालिक को पहचानता है और उसका वफ़ादार होता है तुम अपने मालिक ही से बेवफ़ाई करते हो। न उसके एहसानात को यद करते हो न नेअ़मतों को। मालिक को भूलने वाले मालिक का कुछ नहीं बिगाड़ सकते अपना ही नुक़्सान करते हैं। मालिक को छोड़कर दूसरों के तारीफ़ों के पुल बांधकर दूसरों के आगे सिर झुकाकर उसकी नाराज़गी मोल लेते हो। दुनिया और आख़िरत के ख़सारे के हक़दार बनते हो।

सूरह रअ़द की आयत 3 और 4 में है,

"और वही है जिसने ज़मीन को फैलाया, उसमें पहाड़ और नदियां बनाई और हर तरह के फल पैदा किये जिनके दो दो क़िस्म के जोड़े हैं। वह रात को दिन पर ढाँपता है इसमें ग़ौर करने वालों के लिए निशानियाँ हैं और ज़मीन में खेत हैं एक दूसरे से मिले हुए और अंगूर के बाग़ हैं। खेतियाँ और खजूरें हैं। एक की जड़ दूसरे से मिली हुई भी है और नहीं मिली हुई भी है। उनको पानी एक ही दिया जाता है और हम उन फलों में एक को एक से बढ़ा देते हैं। इन चीज़ों में अ़क़्ल वालों के लिए निशानियाँ हैं।"

दुनिया में दो तरह के लोग पाये जाते हैं एक तो वह जो अ़क़्लो फ़िक्र से काम न लेकर सिर्फ़ फ़ायदों और ख़्वाहिशों के पुजारी बनकर ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। उनके लिए कोई फ़र्क़ नहीं, ख़्वाह पत्थरों को पूजें, मज़ारों पर सज्दा करें या किसी को भी न पूजें। दूसरे वह जो अ़क़्लो फ़िक्र से काम लेकर सही और ग़लत में तमीज़ करते हैं। फ़ायदों और ख़्वाहिशों को ठुकराकर हक़ को अपनाते हैं। बातिल की तरफ़ रुख़ नहीं करते। उनके लिए अहमियत की चीज़ है कि वह किसी की पूजा कर रहे हैं, मूर्ति, पत्थर, मज़ार या अंधे रब में फ़र्क़ करके वह अपने रब की इबादत में गुम हो जाते हैं। अ़क़्लो फ़िक्र से काम लेने वाले गुमराही और भटकाव से खुद बचा लेते हैं। जब वह ग़ौर करते हैं तो उन्हें मालूम हो जाता कि जिसने ज़मीन को फैलाने में अपनी कुदरत का ज़बरदस्त काम अंजाम दिया। ज़मीन को ज़लज़ले से बचाने के लिए उस पर पहाड़ जमा दिये। इन्सानों के फ़ायदे के लिए

नहरें जारी कर दीं। तरह तरह के खेत, किस्म किस्म के बाग़ात जिनमें मुख़्तलिफ़ फल पैदा होते हैं उसने बना दिये। फलों के रंग और ज़ायके में खुशगवार इख़्तिलाफ़ रखा। जिसने अपनी कुदरत से यह सब किया वही सच्चा रब है। वही हमारी पूजा का मुस्तहिक़ है जो अक़्लो फ़िक्र से काम नहीं लेते। वो कभी किसी मूर्ति को पूजते हैं तो कभी किसी मज़ार से अपनी उम्मीदें लगाते हैं, कभी अपने ही जैसे इन्सानों के आगे झुककर खुद को ज़लील करते हैं, कभी अपने नफ़्स को ही अपना मअ़बूद बनाकर उसके इशारों पर नाचने लगते हैं। लोगों! सोचो, ग़ौर करो! जिस तरह आसमान से बरसने वाले एक ही पानी से मुख़्तलिफ़ किस्म के फल और सब्ज़ियाँ वग़ैरह पैदा होती है उसी तरह एक ही रब तमाम इन्सानों का रब है और वो रब अल्लाह है। मुख़्तलिफ़ रब होते तो ज़मीनो आसमान में बिगाड़ पैदा हो जाता, इसलिए हर इन्सान को उसी सच्चे रब की इबादत करनी चाहिए।

सूरह नहल की आयत 14 और 15 में है,
''और वही है जिसने दरिया को काम में लगा दिया ताकि तुम उसमें से ताज़ा गोश्त खाओ और उसमें से पहनने वाला गहना निकालो और तू कश्तियों को देखता है जो पानी को फाड़कर दरिया में चलती है। इसलिए कि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो और ताकि तुम उसका शुक्र करो। और ज़मीन पर उसने पहाड़ बना दिये कि कहीं तुमको लेकर झुक न पड़े और नदियाँ बना दी और रास्ते बना दिये ताकि तुम राह पाओ। और मुख़्तलिफ़ किस्म की अ़लामतें बनाई और सितारों से लोग राह पाते हैं।''

अक़्लमंद और ज़ी शऊर इन्सान सिर्फ़ सिर्फ़ फ़ायदों और फ़ानी लज़्ज़तों में खो जाने वाला इन्सान न तो किसी में ग़ौरो फ़िक्र करके हक़ीक़त का पता लगा लेता है बेवकूफ़ और बेशऊर इन्सान सिर्फ़ फ़ायदों और फ़ानी लज़्ज़तों में खो जाने वाला इन्सान न तो किसी निशानी को बग़ौर देखता है और देखता है तो उससे कोई नसीहत हासिल नहीं करता। अल्लाह ने ज़मीन और आसमान को इन्सान के लिए मुसख़्ख़र कर दिया ताकि वह उनको तरह तरह के फ़ायदे पहुँचा सके। इन्सान की नजात का दारोमदार इस बात पर है कि वह फ़ायदा उठाकर अपने रब का शुक्र अदा करे। और शुक्र की अ़मली सूरत यह है कि वह सिर्फ़ उसी की पूजा करे। अपने जैसे इन्सानों, पत्थरों, मज़ारों, मूर्तियों और अपने नफ़्स के हुक्म पर न चले और न उनकी इबादत करे वह रब कितना अ़ज़ीम है, कैसा रहीम है, जिसने दरिया तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया ताकि तुम उसमें से ताज़ा गोश्त और मोती निकालकर उनसे फ़ायदा उठाओ। वह रब कितना बड़ा मुन्इम है, कैसा ज़बरदस्त

मुहसिन है, जिसने कश्तियों और जहाज़ों को तुम्हारे क़ाबू में कर दिया ताकि तुम अपनी रोज़ी तलाश करो। ज़मीन को न सिर्फ़ उसने बिछा दिया बल्कि उस पर पहाड़ों को गाड़ा। नहरें निकाल दीं। और तुम्हारी रहनुमाई के लिए राहें बना दीं। लोगों! पहचानों अपने रब्बे अ़ज़ीम को और पूजो उसी को, अ़क़ीदत पैदा करो उसी की, आस्था के क़ाबिल सिर्फ़ वही है, बाक़ी जो कुछ है वह बातिल और वहम है। वहम के अंधेरों से निकलकर उजाले की तरफ़ बढ़ो। चमकती हुई सेहर तुम्हारी मुंतज़िर है।

सूरह हज्ज की आयत 66 में है,
''उसी ने तुमको ज़िन्दा किया फिर मौत देता है और फिर दोबारा ज़िन्दा करेगा, बेशक इन्सान नाशुक्रा है।''

इन्सान की हर दौर के इन्सान की सबसे बड़ी नाशुक्री जो उसी के हक़ में नुक़्सानदेह है यही रही है कि वह अपने सच्चे रब ख़ालिक़ व मालिक व राज़िक़ को छोड़कर दूसरों की पूजा में खो जाता है। ग़ौर नहीं करता है कि उसको ज़िन्दगी की नेअ़मत देने वाला एक मुक़र्ररा वक़्त तक ज़िन्दगी से मेहरूम करके उसको मौत के हवाले करने वाला और फिर मौत के बाद क़यामत के दिन उसे दोबारा ज़िन्दगी देकर उसके आ़माल का हिसाब लेने वाला कौन है? कोई देवी देवता, कोई मूर्ति, साहिबे मज़ार या कोई इन्सान? कोई पेड़ या कोई और चीज़? अगर वह अपने आबा व अज्दाद और इर्द गिर्द के माहौल से मुतास्सिर हुए बग़ैर सोचेगा तो उसे मालूम हो जाएगा कि अल्लाह के सिवा कोई और ऐसा नहीं है जिसमें इतनी कुदरतें एक साथ जमा हो गई हो। ज़िन्दगी मौत और दोबारा ज़िन्दगी किसी के इख़्तियार में नहीं है सिवाय उस सच्चे रब के जिसे तुम अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात में भूल जाते हो और जिसे छोड़कर न जाने कहाँ कहाँ अपनी पेशानियों को झुकाकर खुद को ज़लील करते हो। हिम्मत से काम लो। उस एक के लिए सबको छोड़ दो। वही मज़बूत सहारा है। बाक़ी सारे सहारे कमज़ोर हैं ख़्वाह वह तुम्हें मज़बूत लगते हो।

सूरह मोमिनून की आयत 78 से 80 में है,
''और वही है जिसने तुम्हें अपनी कुदरत से कान, आँख, नाक और दिल दिए। तुम बहुत कम शुक्र अदा करते हो और वही है जिसने तुमको ज़मीन पर फैला दिया और उसी की तरफ़ जमा होकर जाओगे। वही जिलाता और मारता है। रात दिन का बदलना उसी का काम है तो क्या तुम अ़क़्ल से काम नहीं लेते।''

आज के माद्दी दौर के इन्सान सिर्फ़ माल व दौलत और जाहे शोहरत को ही अहमियत के क़ाबिल समझते हैं इसलिए उनकी ज़िन्दगी का मक़्सद उनको हासिल करने के सिवा और कुछ नहीं होता। यह चीज़ें उनको मिल जाती है तो खुश होते हैं नहीं मिलती है तो उदास व ग़मगीन हो जाते हैं। बेवकूफ़ नहीं समझते कि उनसे बड़ी नेअ़मतें वह हैं जो उनके सच्चे रब ने उनको सिर्फ़ अपनी कुदरत और अपने फ़ज़्ल से अ़ता कर रखी है और वह उनके जिस्म के तमाम हिस्से हैं। आयत में सिर्फ़ कान आँख और नाक और दिल का ज़िक्र है क्योंकि हिदायत व गुमराही का इंहिसार ज़ाहिरी तौर पर इनके सही और ग़लत इस्तेमाल पर है। कानों से सही और सच्ची बात सुनकर, आँखों से इब्रत के साथ देखकर और दिल से ग़ौरो फ़िक्र करके इन्सान हिदायतयाब हो सकता है। लोगो! आज तुम ज़मीन पर बिखरे हुए हो, कल तुम उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे, मरने के बाद क़यामत के दिन तुम्हें जमा होकर उसी की तरफ़ लौटना है। बेहतर यही है कि ज़िन्दगी में ही तुम उसके एहसानात और इन्आ़मात का शुक्र करते हुए उसकी तरफ़ पलट जाओ। ज़िन्दगी तुम्हें उसी की कुदरत से मिलेगी, उसी के हुक्म से तुम मरोगे, उसी की कुदरत से रात दिन में और दिन रात में बदलता है। यह किसी देवी देवता या उनकी मूर्तियों का काम नहीं, न किसी मज़ार वाले को यह इख़्तियार है। सोचो और ग़ौर करो! हक़ीक़त का पता तुम्हें खुद ही मिल जाएगा।

सूरह फुरक़ान की आयत 48 से 50 में है,
''और वही है जिसने खुशख़बरी लाने वाली हवाएँ चलाई और हमने आसमान से पाकी हासिल करने वाला पानी उतारा ताकि उससे मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा करे और अपने पैदा किये हुए बहुत से आदमियों और चौपायों को पिलाए और उस पानी से हमने उनके दरम्यान तरह तरह से तक़्सीम कर दिया ताकि वह सोचें। फिर भी बहुत से लोग नाशुक्री किये बग़ैर नहीं रहते।''

दुनिया में अक्सर इन्सान नाशुक्री करने वाले हैं क्योंकि अपने सच्चे रब को छोड़कर वह देवी देवताओं की मूर्तियों, बुजुर्गों के मज़ारों, पेड़ों, पत्थरों और अपने जैसे इन्सानों को पूजने में लगे हुए हैं जबकि उनमें से किसी को भी कोई इख़्तियार हासिल नहीं, और न ही कोई इन कुदरतों का मालिक है, जो सच्चे रब को हासिल है। तुम देखते हो कि बारिश होने से पहले खुशगवार हवाएँ चलती है जो तुम्हें खुशख़बरी सुनाती हैं कि अब बारिश होगी। फिर तुम बारिश होते हुए देखते हो और उस बारिश के पानी से तरह तरह से फ़ायदे उठाते हो उस पानी से मुर्दा ज़मीन ज़िन्दा होती है। खेतियां लहलहाने लगती है। हर तरफ़ हरियाली

छा जाती है। यह पानी ज़मीन के चश्मों में, दरियाओं में और समुन्द्रों में इकट्ठा हो जाता है। उस पानी को पीकर तुम खुद भी ज़िन्दा रहते हो और हैवान भी उसे पीकर ज़िन्दगी हासिल करते हैं। तुम बारिश के पानी की तक़्सीम को अपनी आँखों से देखते हो। कहीं कम बारिश होती है, कहीं ज़्यादा। इसके बावजूद तुम अन्धे बनकर अपने उस रब को भूल जाते हो, जिसके इशारे और जिसकी कुदरत से यह सब कुछ होता है। आख़िर तुम जानते बूझते नासमझ क्यूँ बन जाते हो। आयत की रोशनी में समझदारी हासिल करो। हक़ीक़त में इन्सान वही है जो अपने रब का हो जाए वरना हैवान से भी बदतर है।

सूरह फुरक़ान की आयत 53 और 54 में है,
''और वही है जिसने मिले हुए दो दरिया चलाए, एक मीठा है प्यास बुझाने वाला और दूसरा खारी और कड़वा है। और उन हिस्सों के बीच एक पर्दा रखा जो रोकने वाली आड़ की तरह है और वही है जिसने पानी से इन्सान को बनाया फिर उसका नसब और ससुराल मुक़र्रर किया और तेरा रब बड़ी कुदरत वाला है।''

लोगो! सच्चे रब की कुदरतो का अंदाज़ा तो लगाओ, एक ही दरिया में कड़वे और मीठे दो तरह के पानी पैदा करने वाला उसके लिए नसब और ससुराल मुक़र्रर करने वाला कितना अ़ज़ीम है। तुम उस अ़ज़ीम की इबादत न करके हक़ीर चीज़ों को अपना मअ़बूद बनाते हो, क्या यह दानिशमन्दी है? क्या यह वफ़ादारी है? क्या यह इंसानियत है? हक़ीक़त को पहचानो जो उसके सिवा कुछ नहीं कि तुम हिन्दू हो या मुसलमान, सिक्ख हो या जैनी, यहूदी हो या ईसाई, तुम्हारा रब एक ही है और वो है अल्लाह। उसी को पूजो, वही इबादत के लायक़ है, वही मस्जूद है, वही मक़्सूद है, वही मौजूद है। उसी से जुड़कर तुम इंसानियत के दर्जा–ए–कमाल तक पहुँच सकते हो वरना ज़वाल ही ज़वाल तुम्हारा मुक़द्दर होगा।

सूरह फुरक़ान की आयत 62 में है,
''वही है जिसने अदलते बदलते दिन रात बनाए उस इन्सान के लिए जो ध्यान करना चाहे या शुक्र करना चाहे।''

ग़ौर करने के बाद मालूम होता है कि आज के मस़रूफ़ तरीन इन्सानों के भटकने, बहकने और सच्चाई से दूर चले जाने की वजह यह है कि वह अपनी मस़रूफ़ियात और तरह तरह के मशाग़िले हयात में घिरे रहने की वजह से न तो

कायनात में बिखरी हुई निशानियों पर ध्यान देते हैं और न ही उस रब का शुक्र अदा करते हैं जिसकी दी हुई नेअ़मतों से फ़ायदा हर लम्हा उठाने में लगे हुए हैं। ध्यान और शुक्र का जज़्बा उनके दिलों से निकल जाने की वजह से वह इंसानियत के बुलंद मक़ाम से गिरकर हैवानियत की पस्ती में चले गए और वह रात और दिन के आने जाने में, उनके घटने बढ़ने में, उनके सर्द व गर्म होने में ग़ौर कर लेते तो अपने रब के अ़लावा किसी और की पूजा न करते। रात और दिन अल्लाह की कुदरत की कितनी बड़ी निशानी है। तुम उस अ़ज़ीम को छोड़कर किस किसके कमज़ोर दामन को पकड़े हुए हो? किस किसके आशताने पर अपना सिर झुकाए हुए हो? किस किससे उम्मीदें लगाए हुए हो? नादानी छोड़ो! दाना बनो! बेवक़ूफ़ी छोड़ो, अ़क्लमंद बनो। बेहिसी छोड़ो, अपने अंदर एहसास पैदा करो। तुम मेहसूस करोगे कि अब तक तुमने देवी देवताओ, मज़ारों की पूजा करके अपना वक़्त भी ज़ाया किया और दौलत भी। तुम्हारे नज़राने और चढ़ावे सब बेकार गए। तुमने उन्हें पूजा जो न नफ़ा दे सकते हैं और न नुक़्सान। न तुम्हारी इ़ज़्ज़त व दौलत के मालिक है और न बुलंदी व पस्ती के। न तुम्हारी ज़िन्दगी उनके हाथों में है और न मौत। न वह रात को दिन में बदल सकते हैं और न दिन को रात में। उसी अल्लाह को पहचानो और पूजो, जो इन तमाम तब्दीलियों और तसर्रुफ़ात पर कुदरत रखता है और हर चीज़ पर ग़ालिब व हुक्मरान है।

सूरह शूरा की आयत 27 में है,
''और वही है जो बारिश उतारता है उसके बाद कि लोग मायूस हो चुके होते हैं, और अपनी रहमत को फैलाता है। और वही काम बनाने वाला और सब तारीफ़ों के मुस्तहि़क़ है।''

शदीद गर्मी में लोग मायूसी का शिकार होकर ज़ुबानों से उल्टी सीधी बातें निकालने लगते हैं। नाशुक्री के अल्फ़ाज़ बोलने लगते हैं। अचानक सच्चा रब बारिश बरसा देता तो बजाय शुक्र करने के नाचने कूदने लगते हैं। ग़ौर नहीं करते कि बारिश न होना कितनी बड़ी मुसीबत है और उस मुसीबत को दूर करने वाला सिर्फ़ अल्लाह है। वह बारिश रोक दे तो क़हत़ पड़ जाए और इन्सान भूख से मरने लगे। बारिश की सूरत में वह अपनी रहमत ज़मीन में बिखेर देता है। यह इस बात की दलील है कि वही तमाम इन्सानों के बिगड़े हुए काम बनाता है और इसीलिए वह तमाम तारीफ़ों का मुस्तहि़क़ है। शुक्र का ह़क़दार है। और शुक्र की अ़मली सूरत यह है कि इन्सान सिर्फ़ उसी की पूजा करे, उसी से मुरादें मांगें, उसी के आगे सिर झुकाए।

सूरह निसाअ की आयत 87 में है,
''अल्लाह के सिवा किसी की इ़बादत नहीं। बेशक वह तुमको क़यामत के दिन जमा करेगा। इसमें कोई शुब्हा नहीं और अल्लाह से ज़्यादा किसकी बात सच्ची हो सकती है।''

कायनात में बिखरी कई निशानियों में ग़ौर करने के बाद यह ह़क़ीक़त आपसे आप अ़याँ हो जाती है कि अल्लाह के सिवा कोई इ़बादत के लायक़ नहीं। कोई पूजा का मुस्तहि़क़ नहीं है। यह और बात है कि नादान इन्सान अल्लाह का ह़क़ दूसरों को देकर ज़ालिम बन जाते हैं। अपने हाथों अपना नुक़्सान कर बैठते हैं। अल्लाह ही हमारा मअ़बूद है। और उसे यह कुदरत ह़ासिल है कि दुनिया के तमाम इन्सानों को क़यामत के दिन जमा करके उनके आ़माल का हि़साब ले। यह उसके लिए इन्तिहाई आसान है। मरे हुए तमाम इन्सानों को क़यामत के दिन ज़िन्दा होना कोई शक व शुब्हा की बात नहीं। इन्सान को चाहिए कि वह कुफ़्र शिर्क गुनाहों को छोड़कर उस होलनाक दिन के अ़ज़ाब से बचने की तैयारी शुरू करे। अल्लाह ने तमाम इन्सानों को मौत के बाद दोबारा ज़िन्दा करने की बात कही है तो वह ग़लत़ कैसे हो सकती है।

सूरह ह़ज्ज की आयत 69 में है,
''अल्लाह क़यामत के दिन तुममें फ़ैस़ला करेगा उन बातों का जिनमें तुम इख़्तिलाफ़ करते हो।''

आज दुनिया में तमाम इन्सानों को इस बात की आज़ादी ह़ासिल है वह अपनी ज़िन्दगी जिस तरह़ चाहे गुज़ारे। किसी को कोई ख़ास़ त़रीक़े पर ज़िन्दगी गुज़ारने पर मजबूर नहीं किया जा सकता। मज़हबी हैसियत से भी इन्सान आज़ाद है। चाहे वह देवी देवताओं की मूर्तियों को पूजे, चाहे बुज़ुर्गों की मज़ारों की पूजा करे, चाहे वह पत्थरों, पेड़ों, सूरज और सितारे को पूजे, चाहे वह अपनी नफ़सानी ख़्वाहिशात को ही अपना मअ़बूद बना ले, चाहे वह अपने ही जैसे इन्सानों और अपनी ही जैसी दूसरी मख़्लूक़ को सज्दे करे, उस पर कोई पाबन्दी नहीं। मगर ज़ाहिर है कि हर काम के नतीजे का भी वह ख़ुद ही ज़िम्मेदार है और क़यामत का दिन भी इसीलिए रखा गया है ताकि इन मुख़्तलिफ़ कामों में मसरूफ़ इन्सानों का फ़ैसला ह़क़ व अ़दल के साथ कर दिया जाए और यह फ़ैसला सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह ही करेगा। जो इतना बड़ा फ़ैस़ला करने की कुदरत रखता है वही सच्चा रब कहलाये जाने का मुस्तहि़क़ है। लोगो! ख़ूब समझ लो कि क़यामत के दिन तुम किसी और के सामने पेश नहीं किये जाओगे इसलिए तुम्हारी भलाई इसी

में है कि तुम आज खुद ही उसकी बारगाह में अपनी तमाम अक़ीदतों, न्याज़मंदियों के साथ पेश हो जाओ। अपने सज्दे उसी को वक़्फ़ कर दो। अपनी पूजा और इबादत का तोहफ़ा उसी को नज़्र करो।

सूरह रूम की आयत 11 में है,
''अल्लाह पहली बार बनाता है और फिर वह दोहराएगा फिर उसी की तरफ़ तुम लौटकर जाओगे।''

आज के लज़्ज़त परस्त इंसान, नफ़्स की ख़्वाहिशात में अंधे बन जाने वाले इन्सान। ग़ौरो फ़िक्र से महरूम हो जाने वाले इन्सान, सिर्फ़ इसी ज़ाहिरी ज़िन्दगी को सब कुछ समझने वाला इन्सान, मौत जैसी हक़ीक़त से ग़ाफ़िल हो जाने वाला इन्सान, कितनी बड़ी हक़ीक़त को फ़रामोश किये हुए हैं। इसका उन्हें एहसास भी नहीं। यह बेहिसी उन्हें एक दिन तबाही व बर्बादी के तारीक ग़ारों में धकेल देगी। अपने ख़ालिक़ व मालिक व राज़िक़ की कुदरतों से आँख बन्द करके ज़िन्दगी गुज़ारना जीते जी मर जाने के बराबर है। अल्लाह की यह कितनी बड़ी कुदरत होगी। वह जिस पैदाइश का आग़ाज़ कर चुका उसे क़यामत के दिन दोहराकर दुनिया के तमाम इन्सानों को दोबारा ज़िन्दा कर दे और उनको अपनी तरफ़ लौटाकर उनके कामों का हिसाब ले। जो एक बार तख़्लीक़ का आग़ाज़ कर सकता है। दोबारा भी पैदा कर सकता है। क़यामत के दिन दोबारा ज़िन्दा होने का इन्कार करने वालों को इस आयत पर ग़ौर करना चाहिए और तमाम झूठे और गढ़े हुए मअ़बूदों को छोड़कर उसी रब को पूजना चाहिए जो सबको दोबारा ज़िन्दा करने की कुदरत रखता है। न किसी और ने अपने अन्दर ऐसी कुदरत होने का दावा किया है और न किसी और में ऐसी कुदरत है।

सच्चे रब की सिफ़त-ए- रज़्ज़ाक़ियत

सच्चा रब वह है जो अपने तमाम बन्दों को रोज़ी देता है। देवी देवताओं, मूर्तियों और बुज़ुर्गों की मज़ारों, पत्थरों, पेड़ों और किसी इन्सान में किसी दूसरे को रिज़्क़ पहुँचाने की कोई सलाहियत, कोई कुदरत नहीं है। उनकी अक़ीदत में उनको पूजने वाले लोग या तो अपने नफ़्स के पुजारी हैं कि जिधर नफ़्स उनको खींच कर ले जाता है, चले जाते हैं और या फिर शैतान ने उनको बहकाकर दोज़ख़ की आग का हक़दार बना दिया है। लोगो! अपने रब को पहचानो। जो रात दिन, ज़मीन और आसमान से तुम पर रिज़्क़ बरसाता है, अपने मानने वालों को और न मानने वाले सबको रोज़ी दिये चला जा रहा है। उसकी रहीमी और करीमी का ठिकाना क्या है? आख़िर तुम सोचते क्यों नहीं? आख़िर तुम ग़ौर क्यों नहीं करते? तुम तो वह हो जिनके लिए सच्चे रब ने फ़रिश्तों को सज्दा करने का हुक्म दिया और तुम किस किस के दर पे सज्दा करके अपने रब की नाशुक्री करने में लगे हुए हो बल्कि यह तो एहसान फ़रामोशी है। इंसानियत दुश्मनी है आदमियत के बुलंद दर्जे से गिर जाना है। गिरने वाले उठ भी सकते हैं बशर्ते कि वह अक़्लो शऊर से काम लेकर अ़हद कर लें कि हम अल्लाह के सिवा किसी की पूजा नहीं करेंगे क्योंकि वही हमारा ख़ालिक़ है, मालिक और राज़िक़ है। कुरआने करीम की

सूरह ज़ारियात में अल्लाह ने फ़र्माया है,
''अल्लाह वो है जो रोज़ी देने वाला, कुव्वत वाला है और ताक़तवर है।''

एक छोटे से जुम्ले में मअ़नी का समुन्द्र ठाठें मार रहा है। कुरआन ही कुरआन का ऐजाज़ है जो दिलों को मसख़्ख़र कर देता है बशर्ते कि दिल पत्थर के न हो गए हों। अल्लाह ही राज़िक़ है दुनिया के तमाम इन्सानों, हैवानों और दूसरे जानदारों को रोज़ी पहुँचाता है। कुव्वत और ताक़त वाला है इसलिए वह जिसको ज़्यादा रिज़्क़ देना चाहे दे सकता है, उसके इरादे में कोई चीज़ हाइल नहीं हो सकती है। इसके अ़लावा सब बेताक़त, बेकुव्वत, और कमज़ोर हैं। किसी को गेहूँ का एक दाना भी नहीं अ़ता कर सकते। इतने ज़बरदस्त रब को छोड़कर दूसरों की पूजा में लग जाना इन्सान की सबसे बड़ी नादानी है जिसका वबाल खुद उसके ऊपर ही पड़ता है।

सूरह रअ़द की आयत 26 में है,
''अल्लाह जिसकी रोज़ी चाहता कुशादा करता है और तंग करता है और इन्सान तो दुनिया की ज़िन्दगी पर फ़रेफ़्ता हैं और दुनिया की ज़िन्दगी

आख़िरत के मुक़ाबले में हक़ीर दौलत है।''

दुनिया के इन्सानों में कोई अमीर है, कोई ग़रीब, यह सच्चे रब की हिक्मत है कि किसको ज़्यादा रिज़्क़ देना है और किसको कम। बहरहाल रिज़्क़ देने वाला वही है। कितने शर्म की बात है कि हम खाएँ रिज़्क़ तो उसका और पूजा करे किसी दूसरे की। सज्दे लुटाएँ दूसरों के दर पर, मुरादें मांगें दूसरों से, क्या यह इन्सान के लिए डूबकर मर जाने का मक़ाम नहीं कि वह रिज़्क़ देने वाले को नज़र अंदाज़ करके उनकी तारीफ़ों के पुल बांधे, उनकी इबादत करे, जो ख़ुद रिज़्क़ के मोहताज हैं? नादानों! तुम मूर्तियों पर चढ़ावे चढ़ाते हो, मज़ारों पर चादरें चढ़ाते हो, तअज़ियों पर फूल बरसाते हो, सच्चा रब तुमसे कुछ नहीं मांगता है। यह तुमने झूठे रब बना रखे हैं जो चढ़ावों, फूलों और चादरों के मोहताज हैं। सच्चा रब ग़नी है जो तुमसे कुछ नहीं लेता है। तुम्हें देता ही देता है। इसलिए इबादत का मुस्तहिक़ वही है।

सूरह बनी इस्राईल आयत 30 में है,
''बेशक तेरा रब जिसके वास्ते चाहता है, रिज़्क़ कुशादा कर देता है और तंग भी वही करता है। बेशक वही अपने बन्दों को जानने वाला और देखने वाला है।''

इन्सान जो मूर्तियों और मज़ारों की पूजा में लगा हुआ है उनमें न जानने की स़लाहियत है और न देखने की। वह महापुरुष, वह बुज़ुर्ग, जिनको कोई इख़्तियार नहीं है। अगर तुम ऐसा समझते हो तो यह तुम्हारा वहम और ख़्याल है जिसकी तुम्हारे पास कोई दलील नहीं। समझदार इन्सान बग़ैर दलील के कोई रास्ता इख़्तियार नहीं करता। सच्चे रब ने अपनी सच्ची किताब में दावा किया है और दलील के साथ किया है। वही अपने बन्दों को जानने वाला और उनके कामों को देखने वाला है। उनकी ज़रूरतों से ख़बरदार है। उनकी निय्यतों और इरादों को समझता है। इसलिए अपनी हिक्मत के मुताबिक़ जिसको चाहता है ज़्यादा रिज़्क़ देता है और जिसको चाहता है कम रोज़ी देता है। रिज़्क़ की ज़्यादती और कमी किसी और की देन नहीं। किसी और का करिश्मा नहीं।

सूरह अन्कबूत की आयत 17 में है,
''तुम जो अल्लाह के सिवा दूसरों की इबादत करते हो और झूठी बातें बनाते हो। बेशक जिनको तुम अल्लाह के अ़लावा पूजते हो वह तुम्हारी रोज़ी के मालिक नहीं है। तो तुम अल्लाह के यहाँ अपनी रोज़ी ढूँढ़ो और

उसकी इबादत करो और उसका शुक्र अदा करो। तुम्हें उसी की त़रफ़ लौटकर जाना है।''

एक आयत में कितनी बड़ी बड़ी हक़ीक़तों से पर्दा उठा दिया गया है। सच्चे रब के कलाम का यही कमाल है। दुनिया में जो लोग अल्लाह के अ़लावा मूर्तियों, मज़ारों या जिस किसी को भी रब बनाकर पूजते हैं तो उसके बारे में त़रह़ त़रह़ के झूठे अफ़साने गढ़ लेते हैं। यह अफ़साने समाज में फैलाये जाते हैं और इस त़रह़ अफ़सानों में हक़ीक़त गुम हो जाती है। हक़ीक़त यह है कि अल्लाह के सिवा दूसरों को पूजने वाले झूठे के पीछे भाग रहे हैं। उनका नफ़्स उन्हें धोखा दे रहा है। सच्चाई से उनको दूर फेंक रहा है। सच्चे रब ने फ़र्माया है जिन जिनको अल्लाह के सिवा पूजा जा रहा है उनमें कोई भी अपने पूजने वालों की रोज़ी का इख़्तियार नहीं रखता है। रोज़ी ह़ासिल करना हो तो अल्लाह के दरबार में तलाश करो। रोज़ी देने वाला तन्हा राज़िक़ है। उसी को पूजो उसी की इबादत करो। मौत के बाद उसी की त़रफ़ तुम लौटाये जाओगे। मौत के बाद न मूर्ति पूजा है, न मज़ारों की परसतिश, न कोई मूर्ति हमें उसके अ़ज़ाब से बचा सकती है, न कोई स़ाहिबे मज़ार। रब की इबादत करके, उसकी नेअ़मतों का शुक्र अदा करके, उसको राज़ी कर लोगे तो यही तुम्हारे लिए फ़ायदेमंद होगा।

सूरह बक़रह की आयत 60 में है,
''अल्लाह के दिये हुए रिज़्क़ से खाओ पियो और ज़मीन पर फ़साद मचाते हुए न फिरो।''

सच्चा रब फ़सादियों को पसंद नहीं करता। सबसे बड़ा फ़साद तो यह है कि अपने सच्चे रब की इबादत को छोड़कर दूसरों की पूजा की जाए और दूसरों को पूजा की दावत दी जाए। कुफ़्र और शिर्क करने वाले फ़सादी हैं। इन्सानों पर ज़ुल्मो सितम ढाना, उन पर ज़्यादती करना भी फ़साद में दाख़िल है। सच्चे रब का हुक्म है कि उसके दिये हुए रिज़्क़ में से खाओ पियो मगर ज़मीन के अम्नो अमान को ग़ारत न करो। उस पर फ़साद बरपा न करो। आयत ने वाज़ेह़ कर दिया कि इन्सानों और तमाम जानदारों को रोज़ी देने वाला उनका सच्चा रब अल्लाह ही है। वही पूजा का हक़दार है। जो लोग इस वहम में हैं कि रोज़ी उन्हें मूर्तियों और मज़ारों पर चढ़ावा चढ़ाने से मिलती है। वह ग़लती पर है। देखो दुनिया में ऐसे भी बेशुमार इन्सान हैं जो न एक रब को मानते हैं, न देवी देवताओं में यक़ीन रखते हैं, न मज़ारों को पूजते हैं। सच्चा रब उनको भी रिज़्क़ देता है। रोज़ी रसां उसके अ़लावा कोई नहीं। अब अगर तुम उसको न पूजोगे तो फ़सादी और ज़ालिम

कहलाओगे ख़्वाह तुम अपने आपको हिदायत याफ़्ता ही समझो।

सूरह सबा की आयत 15 में है,
''अपने रब की दी हुई रोज़ी में से खाओ और उसका शुक्र अदा करो।''

जो इन्सान रिज़्क़ तो खाते हैं अपने रब का और पूजते हैं दूसरी चीज़ों को, वो अपने रब के शुक्रगुज़ार नहीं है और नाशुक्री की सज़ा उसके सिवा कुछ नहीं कि वह भी पत्थरों की तरह जहन्नम की आग का ईंधन बना दिये जाए और दुनिया में त़रह त़रह के अ़ज़ाब में मुब्तला कर दिये जाएँ। आयत साबित कर रही है कि रिज़्क़ देने की क़ुदरत रब को ही ह़ासिल है और रब सबका एक ही है। अल्लाह के सिवा कोई रब नहीं। कोई मअ़बूद नहीं। दूसरों को पूजने वाले अस़ल में अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात के पुजारी हैं।

सूरह बक़रह आयत 21 और 22 में है,
''ऐ लोगो! अपने उस रब की इबादत करो जिसने हमें और तुमसे पहले इन्सानों को पैदा किया ताकि तुम परहैज़गार बन जाओ। वह रब ऐसा है कि जिसने तुम्हारे वास्ते़ ज़मीन को बिछौना और आसमान को छत बना दिया और आसमान से पानी बरसाया। फिर उसके ज़रिये मेवे निकाले। जो तुम्हारे लिए रिज़्क़ की तरह़ है, सो तुम जानते बूझते किसी और को अल्लाह के बराबर न ठहराओ।''

सच्चा रब दुनिया के तमाम इन्सानों से मुख़ात़ब है, कह दीजिए जो उसके बन्दे हैं, जिसने उनको और उनसे पहले लोगो को पैदा किया, जिसने ज़मीन को फ़र्श और आसमान को छत बनाया। जिसने आसमान से पानी बरसाकर रिज़्क़ का बन्दोबस्त किया। आसमान से पानी न बरसे तो ज़मीन में कुछ भी पैदा न हो। तमाम जानदार भूखे मर जाएँ। इन्सानों की नासमझी यह है कि वह पानी से और पानी से पैदा होने वाली चीज़ों से फ़ायदा तो उठाते हैं लेकिन ग़ौर नहीं करते कि जिसके करम से यह सब कुछ मुम्किन हो सका। उसी की इबादत भी करे। लोगो! बड़े शर्म की बात है। बड़े अफसोस की जगह है तुम अपने रब के बराबर उन बेजान मूर्तियों को ठहराते हो जो आसमान से पानी का एक क़त़रा नहीं टपका सकती। रब दूसरों को ठहराना सबसे बड़ा जुर्म है, सबसे बड़ी बग़ावत है, सबसे बदतर गुनाह है, जब तुम दूसरों की पूजा करते हो, जब तुम दूसरों के आगे अपना सिर झुकाते हो, जब तुम दूसरों से अपने दिल की मुरादें मांगते हो, जब तुम दूसरों को अ़क़ीदत के साथ पुकारते हो तो गोया तुमने उनको अपने रब के बराबर ठहरा

लिया। चाहे तुम ज़ुबान से यह ही कहते रहो कि हम उनको अपना रब नहीं मानते। पूजा सि़र्फ़ उसी की करो जो सबका ख़ालिक़ व राज़िक़ है। मख़्लूक़ परस्ती छोड़ दो। उसके सिवा सब उसकी मख़्लूक़ हैं। सोचो ताकि तुम्हें सही रास्ता दिखाई दे।

सूरह आले इमरान की आयत 27 में है,
''बेशक अल्लाह जिसको चाहता है बेहिसाब रोज़ी देता है।''

एक छोटे से जुम्ले में कितने बेहतरीन अल्फ़ाज़ की मदद से कितनी बड़ी ह़क़ीक़त को आश्कारा कर दिया गया है। जिस बात का यक़ीन दिलो दिमाग़ में उतर जाना चाहिए उस पर आज का इन्सान यक़ीन नहीं रखता। शक में मुब्तला हैं यक़ीन करता तो इधर उधर भटकने के बजाय सीधी राह पर चलता, मूर्तियों, मज़ारों, तअ़ज़ियों, पत्थरों, लकड़ियों, सांपों और इन्सानी जिस्म के गंदे हि़स्सों की पूजा न करता। इनमें से कोई भी ऐसा नहीं जो किसी को गेहूँ का एक दाना या पानी का एक क़त़रा भी दे सके, रिज़्क़ देने वाला सिर्फ़ अल्लाह है। ज़मीन पर रिज़्क़ के लिए सब मेह़नत करते हैं, मगर हर शख़्स़ को उतना ही रिज़्क़ मिलता है जितना अल्लाह देना चाहता है। इसमें भी उसकी हिक्मत पोशीदा है। लोगो! दूसरों को पूज कर अपने इतने बड़े मुहसिन और मुनइम की तौहीन न करो जो तुम्हारा ख़ैरख़्वाह है। दूसरों की पूजा से उसका कुछ नहीं बिगड़ता। वह ग़नी है, बेनियाज़ है। तुम ऐसा करके ख़ुद अपने ही ह़क़ में कांटे बोते हो।

सूरह नह़ल की आयत 73 में है,
''और लोग अल्लाह के सिवा ऐसों को पूजते हैं जो आसमान और ज़मीन से उनको रिज़्क़ नहीं पहुँचा सकते और ऐसा करने की उनमें क़ुदरत नहीं।''

इन्सान दुनिया में आज़ाद है कि वह किसी को भी अपना रब बनाकर उसे पूजने लगे मगर यह आज़ादी उसके लिए ख़त़रनाक और नुक़्स़ानदेह भी हो जाती है। जब वह ग़लत़ चीज़ को अपना रब बनाकर अपनी ज़िन्दगी उसी की पूजा में खपा देता है और अपनी दुनिया व आख़िरत को तबाह कर लेता है, सच्चे रब को पहचानना हर इन्सान के लिए ज़रूरी है। सच्चा रब वही है जो सबका ख़ालिक़ है और सबको रोज़ी देने वाला है। अल्लाह के सिवा कोई सच्चा रब नहीं है। अल्लाह के सिवा ज़मीन पर जिस जिसको भी पूजा जा रहा है वह ज़मीनो आसमान से किसी को भी रिज़्क़ देने की क़ुदरत नहीं रखते।

सूरह मोमिन की आयत 13 में है,
"वही है जो तुमको अपनी निशानियाँ दिखलाता है और तुम्हारे वास्ते आसमान से रोज़ी उतारता है। और नसीहत वही हासिल करता है जो रुजूअ़ करता है।"

नसीहत का असर उन ही लोगो पर होता है, जो अपने रब की तरफ़ रुजूअ़ करते हैं। दुनिया में इन्सान की हिदायत और नसीहत के लिए हज़ारों निशानियाँ हैं। उन निशानियों में से इन्सान अगर रिज़्क़ की निशानी पर ही ग़ौर कर लें तो अल्लाह के सिवा किसी और को न पूजे। आसमान से हर इन्सान का रिज़्क़ उतरता रहता है। बारिश होने से फ़स्ले लहलहाती है। फल और सब्ज़ियाँ पैदा होती है। जो इन्सानी रिज़्क़ है। बारिश सिर्फ़ अल्लाह की कुदरत से होती है तो इन्सानी रिज़्क़ का इंतिज़ाम करने वाला सिर्फ़ अल्लाह ही हुआ। इसलिए वही और सिर्फ़ वही इन्सान की पूजा का हक़दार हुआ। तुम किसी का हक़ किसी को देकर ज़ालिम कहलाते हो। अपने सच्चे रब का हक़ दूसरों को देकर ज़ालिम ही कहलाओगे बल्कि सबसे बड़े ज़ालिम।

सच्चे रब का सिफ़त-ए-इल्म

सच्चा रब वह है जिसका इल्म हमागीर है। ला महदूद है। सच्चे रब के सिवा दुनिया के लोग जिनको भी इबादत के क़ाबिल जानकर पूज रहे हैं उनमें से कुछ का इल्म तो सिफ़र 0 के बराबर है। कुछ का इल्म नाक़िस और मेहदूद है और रब का ही अ़ता किया हुआ है। पत्थर, पेड़, सितारे, मूर्ति, मज़ार कुछ भी इल्म नहीं रखते। मूर्तियाँ जिन महापुरुषों की है, मज़ार जिन बुज़ुर्गों के हैं, उन महापुरुषों और बुज़ुर्गों का इल्म मेहदूद था और वह उतना ही जानते थे जितना उनके रब ने उनको अ़ता किया था। वफ़ात पा जाने के बाद उनका इल्मी एअ़तिबार से कोई दर्जा नहीं रहा। सच्चा रब हमेशा से है और हमेशा रहेगा। इसलिए उसका इल्म भी लासानी और उसी की तरह बेमिसाल और ला ज़वाल है। तमाम इन्सान की हिदायत व रहनुमाई के लिए सच्चे रब ने जो किताब नाज़िल की है, यानी कुरआने करीम, उसकी मुख़्तलिफ़ सूरतों की मुख़्तलिफ़ आयात ने अल्लाह के इल्म–ए–अज़्ली और क़दीमी के सरबस्ता राज़ को खोलकर रख दिया है। रब के मुक़ाबले में दूसरों का इल्म किस क़द्र नाक़िस है, कितना अधूरा है, कुरआन में ग़ौरो फ़िक्र किये बग़ैर समझ में नहीं आ सकता। इन्सानों! तुम अपनी ही किताब से आख़िर क्यूँ दामन बचा रहे हो। साइन्स और टेक्नोलॉजी से ज़्यादा कुरआनी इल्म इसका हक़दार है कि उसे हासिल किया जाए। क्योंकि यह इल्म इन्सान को उसकी हक़ीक़त से आगाह करता है। कायनात की तख़्लीक़ के मक़सद से रुशनास कराता है। छोड़ो दुनिया भर की किताबों को जो इन्सानों के ज़रिये लिखी गई है। पकड़ो मज़बूती से उस किताब को जो तुम्हारे, तुम सबके सच्चे रब ने तुम्हारे फ़ायदे के लिए नाज़िल की है। आख़िर तुम खुद ही अपना नुक़सान करने पर क्यूँ तुले हुए हो?

सूरह बक़रह की आयत 77 में है,
"क्या ये लोग इतना भी नहीं जानते कि यह जो कुछ छुपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं उसके बारे में अल्लाह को मालूम है।"

सच्चे रब के ला मेहदूद इल्म का इज़्हार इससे अच्छे अल्फ़ाज़ और इससे उ़म्दा पीराये में नहीं हो सकता कि, तमाम चीज़ें दो ही त़रह़ की होती है, या तो उनको ज़ाहिरी आँखो से देखा जा सकता है या उनको देखना हमारे लिए मुम्किन नहीं। इन्सानी चेहरे हमें दिखाई देते हैं, इन्सानी दिल जो सीनों में छुपे हुए हैं और उनमें जो इरादे और ख़्यालात हैं उनसे कोई भी वाक़िफ़ नहीं हो सकता। इन्सानी सिर हमें दिखाई देते हैं, सिरों में छुपे हुए दिमाग़ और उनमें जो फ़िक्रें और अ़ज़्म

हैं उनसे कोई भी वाक़िफ़ नहीं हो सकता, जिस मूर्ति को पूजा जाता है उसे इल्म नहीं होता कि उसे कौन किस इरादे से पूज रहा है, जिस मज़ार का तवाफ़ किया जाता है, जिस पर चादर चढ़ाई जाती है, वह मज़ार या साहिबे मज़ार यह इल्म नहीं रखता कि तवाफ़ करने वाला और चादर चढ़ाने वाला कौन है और किस इरादे से यह काम अंजाम दे रहा है। यही मिसाल उन तमाम कामों पर सादिक़ आती है जिनको अल्लाह के सिवा पूजा जाता है। यह इल्म सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह ही को है कि, कौन उसकी इबादत किस नियत से और किस इरादे से कर रहा है। ऐसे अज़ीम खुली और छुपी तमाम चीज़ों का इल्म रखने वाले रब को छोड़कर दूसरों की इबादत करना, उस पढ़े लिखे इन्सान की सबसे बड़ी जिहालत है। इसकी सबसे बड़ी वजह है बाप दादा के रास्ते पर बग़ैर सोचे समझे चलना और अपने जैसे इन्सानों की अन्धी पैरवी करना, जैसा हमारे ख़ानदान वाले करेंगे, हमारे साथी करेंगे, वैसा ही हम भी करेंगे। यह ख़्याल एक अक़्लमंद इन्सान के लिए फ़ायदेमंद नहीं हो सकता।

इसी सूरह की आयत 216 के इख़्तिताम पर फ़र्माया,
''अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।''

न जाने कितनी ऐसी बातें हैं जो इन्सान नहीं जानते मगर उनका रब उन बातों से वाक़िफ़ है। किस इन्सान को दुनिया में कब कितना रिज़्क़ देना है? किसको कब पैदा होना है? किसकी मौत कब आएगी? कब बादल उठेंगे? कब बारिश होगी? बारिश रहमत वाली होगी या तबाही वाली? क़यामत कब आएगी? किस रास्ते पर इन्सान कामयाब होगा? और कौनसा रास्ता हलाकत का सबब बनेगा? यह और इस जैसी न जाने कितनी बातें हैं जो अल्लाह के सिवा किसी को मालूम नहीं। अगर कोई ऐसा दावा करता है तो वह अपने दावे में झूठा क़रार पाएगा क्योंकि इन्सानी क़ौल के मुक़ाबले में रब का क़ौल ही क़ाबिले एअ़तिबार है जो किसी क़िस्म का भी दावा नहीं करते, जैसे मूर्ति, मज़ार, पेड़, सितारे, उनके बारे में यह तसव्वुर करना कि यह भी सब कुछ जानते हैं, इंतिहाई दर्जे की बेवक़ूफ़ी है। जब दावा करने वाले ही झूठे हैं, दावा न करने वालों की ला इल्मी और बेचारगी और बेइल्मी का ठिकाना ही क्या है? आख़िर तुम ग़ौर क्यूँ नहीं करते? क्या तुम्हारी सोच मफ़लूज होकर रह गई है, क्या तुम्हारी अक़्लें मुअ़त्तल हो गई हैं? सोचो और ग़ौर करो, तुम्हें ख़ुद अपनी ग़लती का एहसास हो जाएगा कि, कितने ज़बरदस्त इल्म रखने वाले रब को छोड़कर कैसी हक़ीर चीज़ों की पूजा में लगे हुए हो।

सूरह बक़रह की आयत 220 में रब्बे अ़ज़ीम ने फ़र्माया,
''अल्लाह जानता है कि कौन फ़साद फैलाने वाला और कौन इस्लाह़ करने वाला है।''

मौजूदा दौर में इन्सान क़दम क़दम पर इसलिए ठोकरे खा रहे हैं, दूसरों के फ़रेब के इसलिए शिकार हो रहे हैं, रहबरों के हाथों इसलिए लुट रहे हैं, मंज़िल से इसलिए दूर है क्योंकि वह अपने सच्चे रब की किताब में ग़ौर नहीं करते, जिसमें दुनिया के तमाम इन्सानों की नफ़्सियात बयान कर दी गई है। तमाम इन्सानों को पैदा करने वाला वही अल्लाह है इसलिए वही इन्सानों की नफ़्सियात और उनके दिलों में छुपे हुए इरादों और नियतों से बख़ूबी वाक़िफ़ है। जो शख़्स उसकी पनाह में आ जाएगा, उसकी किताबे अ़ज़ीम से अपना रिश्ता जोड़ लेगा, वह कभी किसी के मकर व फ़रेब का शिकार नहीं हो सकता। आज ज़मीन पर फैले हुए ज़्यादातर लोग ख़्वाह मज़हबी रहनुमा हों, सियासी क़ाइद हों, समाजी रहबर हों, सब ही अपने मुस्लह होने का दावा करते रहते हैं मगर उनके अहवाल के बरअ़क्स उनके अफ़आ़ल और उनका किरदार बिल्आख़िर यह साबित कर देता है कि ये लोग सख़्त क़िस्म के मुफ़्सिद हैं। दावा तो इस्लाह़ का करते हैं ताकि अपने इर्द गिर्द भीड़ इकट्ठी कर उससे फ़ायदा उठाएँ। मगर हक़ीक़त में उनकी नियत फ़साद बरपा करने की होती है, हम उनके नापाक इरादों से बेख़बर रहकर उनके धोखे में आ जाते हैं और नुक़्सान उठाते हैं मगर सच्चा रब उन झूठे मुस्लिहीन की हक़ीक़त को भी बख़ूबी जानता है अगर तुम सच्चे रब और उसकी नाज़िलकर्दा किताब से जुड़ जाओ, इसी में तुम्हारी भलाई है, इसी में तुम्हारा फ़ायदा है।

सूरह बक़रह की आयत 235 में है,
''और तुम जान लो अल्लाह तआ़ला तुम्हारे दिलों की छुपी हुई बातों को भी जानता है, सो उससे डरते रहो।''

मुख़्तसर अल्फ़ाज़ में जामेअ़ बात कहना क़ुरआन की एक मिसाली ख़ुसूसियत है। अल्लाह से डरे रहने की बहुत सी वुजूहात हैं एक अहम वजह यह है कि वह हमारे ज़ाहिर के साथ हमारे बातिन पर भी नज़र रखता है। अल्लाहु अकबर। कितना अ़ज़ीम है किस क़द्र आ़ला है। दुनिया के तमाम इन्सानों का रब जिसे छोड़कर या जिसके साथ शरीक करके वह न जाने कैसी कैसी हक़ीर और अदना मख़्लूक़ की पूजा में लगे हुए हैं। दुनिया के अ़रबों खरबों इन्सानों के दिलों में झाँकने की सिफ़त क्या अल्लाह के सिवा किसी और में है? कोई इन्सान ज़िन्दा या मुर्दा कोई मूर्ति, कोई मज़ार, कोई पत्थर, कोई सितारा, क्या यह ख़ूबी रखता है?

बेजान चीज़ें तो बेजान ही हैं। किसी जानदार के बारे में भी यह नहीं कहा जा सकता है कि वह दूसरों की नियतों का भेद जानता है। किसी ने खुद अपने बारे में ऐसा दावा किया है तो वह भी झूठा है और अंधी अ़क़ीदत के ज़ोम में कोई किसी दूसरे के बारे में ऐसा अ़क़ीदा रखता हो तो वह भी झूठा है। क्योंकि रब्बे अ़ज़ीम ने अपने सच्चे क़ौल से सबके अक़्वाल की तर्दीद फ़र्माई है। नियतों को जानने वाला दिलों की बातों से बाख़बर सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला है, तो चाहिए कि सब उसका ख़ौफ़ रखें क्योंकि खुद ही हमें ग़लत़ कामों से रोकेगा। आज जो ज़मीन के चप्पे चप्पे पर अल्लाह के सिवा दूसरों को पूजा जा रहा है, दूसरों को पुकारा जा रहा है, दूसरों से उम्मीदें वाबस्ता की जा रही है, बेशर्मी और बेहयाई के काम खुले त़ौर पर किये जा रहे हैं तो उसकी एक ही वजह है और वह यह है कि आज के इन्सान अपने रब के ख़ौफ़ से बिलकुल ख़ाली हो चुके हैं। मुआ़शरे में फैली हुई तमाम बुराइयों को ख़त्म करने का एक ही त़रीक़ा है कि इन्सानों के दिलों में अपने रब का ख़ौफ़ पैदा किया जाए। लोगो! इससे पहले कि मौत आकर तुम्हें दबोच ले, डरो अपने रब से जो तुम्हारे अच्छे–बुरे कामों के साथ साथ तुम्हारी उस नियत से भी वाक़िफ़ है जिस नियत से तुम वह काम अंजाम देते हो। तुम्हारी भलाई इसी में है तुम उसकी नाराज़गी से डरकर कुफ़्, शिर्क, बिदअ़त और दूसरे गुनाहों को छोड़ दो और उसकी रज़ा ह़ासिल करने के लिए नेकी के काम अंजाम दो।

सूरह बक़रह की आयत 255 में है,
''वह उनके तमाम ह़ाज़िर व ग़ायब ह़ालात को जानता है।''

इन्सानी इ़ल्म की एक ह़द है, एक इंतिहा है रब्बे अ़ज़ीम के इ़ल्म की कोई इंतिहा नहीं, कोई ह़द नहीं। इन्सान उसी चीज़ को देखता है जो उसके सामने मौजूद हो। ग़ैर मौजूद चीज़ों से वह लाइ़ल्म रहता है। रब्बे अ़ज़ीम मौजूद चीज़ों के साथ साथ ग़ैर मौजूद चीज़ों का भी इ़ल्म रखता है जो इतना ज़बरदस्त इ़ल्म रखता है उसी का ह़क़ है उसी की इ़बादत की जाए। हमारे सज्दे उसकी अमानत हैं। यह इन्सानी सिर की तौहीन है कि उसे अपने रब के अ़लावा किसी और के आगे झुकाया जाए। लोगो! अपने सिर की इ़ज़्ज़त क़ायम रखो, उसे मूर्ति, मज़ार, पेड़, सूरज या अपने जैसे किसी इन्सान या अपने से ज़्यादा बेहतर इन्सान के आगे झुकाकर उसे ज़लील न करो।

सूरह आले इ़मरान की आयत 29 में है,
''इनसे कह दो कि तुम ख़्वाह कोई भी बात अपने सीनों में छुपाकर रखो

या उसे ज़ाहिर करो अल्लाह उसे जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीनों में है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।''

सीनों में छुपी हुई आसमानों व ज़मीन और ज़मीन की हर बात को जानने वाले की कुदरत का एह़सास न करने वाले इन्सान कहाँ कहाँ भटक रहे हैं और किस किसकी पूजा में लगे हुए हैं। काश वह समझ पाते। काश! इन्हें अ़क़्ल आए। काश वह अपने रब की किताब का इ़ल्म ह़ासिल करें ताकि ह़क़ीक़त उन पर वाज़ेह़ हो जाए। कुरआनी इ़ल्म से मह़रूम रहने की वजह से ही उनको सही रास्ता नहीं मिल पा रहा है।

सूरह माइदा की आयत 99 में है,
''अल्लाह जानता है जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ तुम छुपाते हो।''

रब्बे अ़ज़ीम की इसी सिफ़त के बारे में सूरह बक़रह की आयत 77 में दूसरे अल्फ़ाज़ में बयान किया गया था,
''ज़ाहिर और पोशीदा बातों का जानने वाला ही तुम्हारा सच्चा रब है।''

जिन बेजान और जानदार चीज़ों को पूजा जा रहा है, वह हमारी पूजा के ह़क़दार नहीं है। उनकी पूजा तो ला इ़ल्मी और नासमझी की वजह से की जा रही है। जिस दिन इन्सानों को समझ और इ़ल्म ह़ासिल हो जाएगा उसी दिन सारी ज़मीन पर सिर्फ़ सच्चे रब ही की इ़बादत होगी। अभी शैत़ान बहुत खुश है कि वह लोगों को दोज़ख़ के भड़कते हुए शोलों की तरफ़ हंकाये जा रहा है।

सूरह अन्आ़म की आयत 3 में है,
''आसमानो और ज़मीन में वही अल्लाह मअ़बूद है, वह तुम्हारे ज़ाहिर और पोशीदा अह़वाल को जानता है और तुम्हारे कामों से भी बाख़बर है।''

सच्चे रब, अ़ज़ीम रब, आ़ला रब, अल्लाह की अ़ज़्मत का कोई ठिकाना है? ज़मीन पर तो तुम अपने नफ़्स और शैत़ान के फ़रेब में आकर पेड़ों, मूर्तियों, मज़ारों, सितारों और इन्सानों को पूजने की ह़िमाक़त कर सकते हो, मगर आसमान पर ऐसे अह़मक़ाना काम का कोई तस़व्वुर भी नहीं हो सकता। वहाँ तो फ़रिश्ते हर वक़्त उसी के आगे सर ब सुजूद रहते हैं। ज़मीन पर चाहे तुम जिसकी पूजा कर लो मगर ह़क़ीक़त तो यही है कि तुम अपने रब के ह़क़ को दूसरे तक पहुँचाकर

ज़ालिम कहलाने के मुस्तहिक़ बन रहे हो क्योंकि आसमान हो या ज़मीन हो, दोनों जगह का हक़ीक़ी रब वही है। बाक़ी सारे रब झूठे हैं और इसकी दलील यह है कि उस सच्चे रब के अ़लावा इन्सानों के ज़ाहिरी अहवाल, पोशीदा हालात और आ़माल का बख़ूबी जानने वाला कोई नहीं।

सूरह अन्आ़म की आयत 59 में है,
"और छुपे ख़ज़ाने अल्लाह ही के पास है, जिनको उसके अ़लावा कोई नहीं जानता। वह उन तमाम चीज़ों को जानता है जो ज़मीन की ख़ुश्की और दरियाओं में हैं और कोई पत्ता किसी पेड़ से नहीं गिरता मगर वह उसे जानता है और कोई दाना किसी तारीक हिस्से में नहीं डाला जाता और न कोई तर और ख़ुश्क चीज़ ऐसी है जिसके बारे में वाज़ेह किताब (लोहे महफ़ूज़) में न लिख दिया गया हो।"

सुब्हानल्लाह! अल्लाहु अकबर! सच्चे रब के इल्म का कोई ठिकाना है। लोगो! इसी ज़बरदस्त आयत की रोशनी में अपने आ़माल का जायज़ा लो ताकि तुम्हें ख़तरनाक ग़लती का पता चल जाए, मूर्तियों, मज़ारों और इन्सानों को पूजने वालो! इनमें से कोई भी छुपी हुई चीज़ों के ख़ज़ाने अपने पास नहीं रखता। उन पर तो सिर्फ़ सच्चे रब का क़ब्ज़ा है। उनमें से जितना कुछ जिस किसी को देना चाहता है, वह देता है। तुम अपनी जिहालत और बेवक़ूफ़ी से ऐसा समझ लेते हो कि मज़ारों और मूर्तियों की पूजा करने से तुम्हें फ़ायदे हासिल हो रहे हैं। शैतान तुम्हारे दिलों में ऐसा ख़्याल डालकर तुम्हें सीधे रास्ते से हटाये रखता है ताकि तुम्हें भी अपने साथ दोज़ख़ में धकेल दे। इसी ज़मीन के ऊपर या अंदर, दरिया की गहराई में क्या छुपा हुआ है। उसे भी सच्चे रब के अ़लावा कोई नहीं जानता। सच्चे रब ने तो इस हक़ीक़त को खोल खोलकर बयान कर दिया है जिस महापुरुष की मूर्ति को तुम पूजते हो, जिस बुज़ुर्ग की मज़ार की इबादत में तुम लगे हुए हो, क्या उसने भी कोई किताब लिखकर तुम्हें दी है जिसकी इबारत को तुम दलील के तौर पर पेश कर सको। सच्चाई यह है कि तुम अपने वहम और गुमान में पड़े हुए हो। तुम्हारे पास अल्लाह को छोड़कर या अल्लाह के साथ किसी दूसरे की इबादत करने की कोई इल्मी और अ़क़्ली दलील नहीं है। जागो! संभलो! वरना यह तरीक़ा तुम्हें ऐसे नुक़्सान से दो चार करेगा कि जिसकी तलाफ़ी भी मुम्किन न होगी। दौड़ो अपने हक़ीक़ी रब की तरफ़ जो हमें सलामती वाले घर में पहुँचाने का ख़्वाहिशमंद है। याद रखो! उस घर के हक़दार सिर्फ़ वही लोग होंगे जो सच्चे रब की किताब के एहकाम पर चलकर कुफ़्र। शिर्क और गुनाहों से दूर रहकर अपनी ज़िन्दगी गुज़ारेंगे। किसी पेड़ से गिरने वाले पत्थर को देखो उसके

गिरने का इल्म भी सच्चे रब को है ज़मीन में किसान जो दाना बोता है और हर तरह की हरी और सूखी चीज़ों के बारे में अल्लाह ने अपनी वाज़ेह किताब में लिख दिया है। यह उसके इल्म की इंतिहा है। ऐसे बेइंतिहा और ला महदूद इल्म वाले को छोड़कर क्या तुम कामयाब हो सकते हो? क्या तुम्हारे दिल चैन पा सकते? क्या तुम्हारी आत्माएँ तुम्हारी रूहें मुत्मइन हो सकती है? ग़ौर करो और सोचो तुम्हें अपनी ग़लती का खुद एहसास हो जाएगा।

इसी सूरह की आयत 60 में है,
"और वह ऐसा ज़बरदस्त है कि रात के वक़्त तुम्हारी रूह को अपने क़ब्ज़े में ले लेता है और जो कुछ तुम दिन में करते हो उसको जानता है फिर तुमको जगा उठाता है ताकि एक मुक़र्ररा मुद्दत पूरी कर दी जाए फिर उसी की तरफ़ लौटना है फिर वह तुमको बता देगा कि तुम दुनिया में क्या काम करते थे?"

दुनिया के ग़ाफ़िल इन्सान, अपने अंजाम से बेपरवाह इन्सान, ख़्वाहिशों के जंगल में भटकते रहने वाले इन्सान, फ़ानी लज़्ज़तों पर फ़रीफ़्ता इन्सान इस सच्चाई से मुँह न मोड़ें कि उनका रब उनके तमाम करतूतों से वाक़िफ़ है। यह उसकी रहीमी और करीमी है कि ऐसे गुनाहगार इन्सानों को फ़ौरन ही अपनी पकड़ में नहीं लेता बल्कि उनको अपनी करनी का मौक़ा देता रहता है। ज़मीन पर ऐसे वाक़ियात बरपा करता रहता है, जिनको देखकर इन्सान इब्रत हासिल करें। सच्चे रब के सिवा दूसरों की पूजा करने वाले और बुराइयों में ज़िन्दगी गुज़ारने वाले यह भी न भूलें कि क़यामत के दिन दोबारा ज़िन्दा होकर उनको अपने तमाम कामों का हिसाब देना है। रब के ला मेहदूद इल्म और मौत के बाद दोबारा ज़िन्दा होकर अपने कामों की जवाबदेही का एहसास ही इन्सान को बुरी राहों पर भटकने से रोक सकता। काश! आज के मुस्लिहीन और रहनुमाए क़ौम इस सच्चाई को समझ सकें। जब ज़मीन का क़ानून मुज्रिमों को पनाह देने लगे ता आसमानी क़ानून को लागू किये बग़ैर एक मुंसिफ़ाना मुआ़शरा और निज़ाम इन्सानों के लिए नहीं बनाया जा सकता। इंसानियत इसी तरह रोती रहेगी। जुदा तुम इसी तरह होते रहोगे। अ़स्मतों का कारोबार इसी तरह फलता और फूलता रहेगा। लोगो! उठो और कुरआनी एहकाम को सीखो और उन पर खुद भी अ़मल करो और दूसरों को भी सिखाओ और उन्हें इन्सानी मुआ़शरे में नाफ़िज़ करो। इसी में हम सबकी भलाई है।

सूरह तौबा की आयत 78 में है,
''क्या इनको ख़बर नहीं अल्लाह तआ़ला इनके दिल की ख़बर और राज़ और इनकी सरगोशियों से बख़ूबी वाक़िफ़ है और यह कि अल्लाह तआ़ला तमाम ग़ेब की बातें जानता है।''

अल्लाह के सिवा जिस किसी को भी पूजा जा रहा है वह एक शैत़ानी फ़ेअ़ल के अ़लावा कुछ नहीं। शैत़ान ने लोगों को फ़रेब में मुब्तला कर रखा है ताकि वह पेड़ों और मूर्तियों, मज़ारों के चक्कर काटते काटते दोज़ख़ के ईंधन बन जाएँ और ज़िन्दगी भर इसी ग़लतफ़हमी में मुब्तला रहें कि वह कोई ग़लत़ काम नहीं कर रहे हैं। पूजा के क़ाबिल वही है जिसको हर चीज़ का खुली और छुपी चीज़ का इ़ल्म हो। ग़ेब की तमाम बातों से जो वाक़िफ़ हो। जो जानता हो कि कल क्या होगा। इतना ला मेह़दूद इ़ल्म न किसी मूर्ति को ह़ासिल है, न मज़ार को, जिन महापुरुषों की मूर्ति पूजी जा रही है, जिन बुज़ुर्गों के मज़ारों पर चादरें चढ़ाई जा रही हैं, वह महापुरुष और बुज़ुर्ग भी इन्सानों के दिलों में छुपे हुए राज़ उनकी सरगोशियों और ग़ीबत की तमाम बातों का इ़ल्म नहीं रखते थे। नादानों! तुम किस मअ़क़ूल और मज़बूत़ दलील की बुनियाद पर उनको पूजते हो? उनकी इ़बादत करते हो? उनसे अपनी उम्मीदें वाबस्ता करते हो? मूर्ति और मज़ारों की मुख़ालिफ़त हमारा मक़्स़द नहीं है, हमारा मक़्स़द उस ह़क़ को उजागर करना है जिससे हमें शैत़ान ने दूर कर दिया है। उस सच्चाई तक तुम्हें पहुँचाना है जिसकी त़रफ़ से तुम्हारे नफ़्स ने तुम्हें ग़ाफ़िल कर रखा है। उस उजाले से तुम्हें हमकिनार करना है जो तुम्हारे ज़हनी और दिमाग़ी वहम ने कहीं गुम कर दिया है और तुम ज़ुल्मतों के समुन्द्र में हाथ पैर मारने पर मजबूर हो। तुम्हारे सच्चे रब की बात ही सबसे सच्ची है। उसने अपनी किताब में ख़ुद ही वाज़ेह़ कर दिया है कि वही ह़क़ है और उसके सिवा जो कुछ भी है बात़िल है। ह़क़ को अपनाओ और बात़िल को ठुकराओ। इसी में तुम्हारी भलाई है, तुम्हारा फ़ायदा है।

सूरह यूनुस की आयत 18 में है,
''और यह लोग अल्लाह को छोड़कर ऐसी चीज़ों की इ़बादत करते हैं जो न उनको नुक़्स़ान पहुँचा सकती है और न ही नफ़ा, और कहते हैं कि यह तो अल्लाह के पास हमारे सिफ़ारिशी है, इनसे कह दो कि क्या तुम अल्लाह को ऐसी बात की ख़बर देते हो जो आसमान और ज़मीन में उसको मालूम नहीं है।''

इस ज़बरदस्त आयत में उन लोगों की नफ़्सियात को बयान किया गया है

जो अल्लाह के सिवा दूसरों की इ़बादत उनको मअ़बूद समझकर नहीं करते। बल्कि उनको अल्लाह की बारगाह में अपना सिफ़ारिशी समझकर करने से भी रोक दिया गया है। इसकी वजह यह है कि अल्लाह तो सबके अच्छे बुरे अ़मल से ख़ुद ही बाख़बर है। ज़मीन में आसमान में, कौनसी ऐसी चीज़ है जो उससे छुपी हुई है। फिर किसी के बारे में उसकी जनाब में सिफ़ारिश की कोई ज़रूरत हीं नहीं रह जाती। अल्लाह से रिश्ता जोड़कर उसकी किताब से गहरा तअ़ल्लुक़ क़ायम करके उसके एह़कामात पर अ़मल करके हर इन्सान उसके रह़मो करम का ह़क़दार बन सकता है। इ़बादत का ह़क़दार सिर्फ़ वही है, सिफ़ारिशी जानकर भी किसी और की इ़बादत करना जुर्म है और सबसे बड़ा जुर्म। याद रखो नुक़्स़ान और नफ़ा हमें कोई नहीं दे सकता, अगर तुम यह समझते हो कि किसी मूर्ति की पूजा करके या किसी मज़ार से राब्त़ा क़ायम करके या किसी त़ाक़तवर इन्सान से तअ़ल्लुक़ पैदा करके ख़ुद को दुनियावी नुक़्स़ानात से बचा सकते हो या हर त़रह़ के फ़ायदे ह़ासिल कर सकते हो तो तुम्हारा वहम है। तुम्हारा सच्चा रब तुम्हें नुक़्स़ान पहुँचाना चाहे तो कोई तुमसे दूर नहीं कर सकता। तुम्हारा सच्चा रब तुम्हें फ़ायदा पहुँचाना चाहे तो कोई तुम्हें नुक़्स़ान से दो चार नहीं कर सकता।

सूरह हूद की आयत 5 में है,
''लोग जो बातें छुपाकर कहते हैं और जो ज़ाहिर करते हैं, वह उन सबको जानता है। बेशक वह तो दिलों में छुपी हुई बातों से भी वाक़िफ़ है।''

रब के हमागीर इ़ल्म का जो बयान सूरह बक़रह की आयत 77 में किया गया था, मौजूदा आयत में कुछ अल्फ़ाज़ के इज़ाफे के साथ उसी को दोहराया गया है। तकरार का मक़्सद है अल्लाह के इ़ल्म की सिफ़त को अच्छी त़रह़ लोगों के दिलों में उतारना ताकि वो ग़फ़लत के अंधेरों से निकलकर बेदारी के उजाले में आ जाएँ। उस रब से ग़ाफ़िल होकर ज़िन्दगी गुज़ारना जो खुली छुपी सब बातों को जानता हो और जो दिलों के राज़ों से भी वाक़िफ़ हो इन्सान को ग़लत़ राहो पर मोड़ सकता है। लोगो! सूरह बक़रह की आयत 77 और मौजूदा सूरत की आयत 5 के मफ़्हूम को अच्छी तरह ज़हन में जमा लो। अपने आ़माल का जायज़ा लो। अगर तुम सच्चे रब के सिवा किसी और की पूजा में लगे हुए हो तो अपने आपको उससे बचाओ। अगर तुम्हारे दिलों में बुरे ख़्यालात हैं तो उन्हें बाहर निकाल फेंको। लग जाओ एक अल्लाह की इ़बादत में ताकि दुनिया में भी बरकतें ह़ासिल हो और आख़िरत में भी राह़त मिले।

सूरह हूद की आयत 6 में है,
''वह हर एक की ज़्यादा रहने की जगह और चंद रोज़ रहने की जगह को जानता है।''

सच्चे रब के इल्मे हमागीर का मुख़्तसर अल्फ़ाज़ में इससे अच्छा बयान मुम्किन नहीं। हर इन्सान के दुनिया में ज़्यादा दिन रहने और चंद दिन रहने से वही वाक़िफ़ है। उसके सिवा कोई नहीं जानता कि कौन कब तक कहाँ क़याम करेगा? कहाँ ठहरेगा? जिस रब का इल्म इतना ला मेहदूद है, उसे छोड़ किसी और को पूजना कहाँ की अ़क़्लमंदी है। सोचो और ग़ौर करो ताकि तुम्हें सही रास्ता मिल जाए।

सूरह रअ़द की आयत 8 में है,
''अल्लाह को सब मालूम रहता है जो कुछ किसी औ़रत को ह़मल रहता है और जो कुछ रह़मों में कमी ज़्यादती होती है और अल्लाह के नज़दीक हर चीज़ का एक अंदाज़ा मुक़र्रर किया गया है।''

ग़ौर करो कि अल्लाह के इल्म की क्या वुस्अ़त है, ऐसे इल्म वाले से बेख़ौफ़ हो जाना और उनको पूजना जिनका इल्म नाक़िस़ और मह़दूद है। बेवक़ूफ़ी के सिवा और कुछ भी नहीं।

इसी सूरह की आयत 9 में है,
''वह तमाम ज़ाहिरी और पोशीदा चीज़ को जानने वाला है सबसे बड़ा आ़ली शान वाला है।''

सबसे बड़े और आ़ली शान को छोड़कर और ह़क़ीर चीज़ों को पूजने वालो! आख़िर तुम्हारी अ़क़्ल कहाँ खो गई? आख़िर तुम्हारी सोच को ज़ंग क्यों लग गया है? दुनियावी मामलात में तो तुम उसका दामन छोड़ने में कोताही नहीं करते जो किसी फ़न और हुनर का माहिर होता है, मगर दीन के मामले में इतने नादान हो जाते हो कि ईंट, पत्थर और इन्सानी जिस्म के गंदे हिस़्सों को भी पूजने लगते हो और उसको भूल जाते हो जिसने अपनी क़ुदरत से उन सबको तुम्हारे ही फ़ायदे के लिए पैदा किया है। तुम ख़ालिक़ को छोड़कर मख़्लूक़ की इबादत करने लगते हो। यह तुम्हारी इतनी बड़ी नादानी है जो तुम्हें बहुत बड़े नुक़सान में मुब्तला करने वाली है।

इंसान अपने रब को पहचान

सूरह रअ़द की आयत 42 में है,
''वह हर शख़्स़ के कामों को जानता है।''

सच्चे रब के इल्म की वुस्अ़त का तस़व्वुर तो कीजिए। ज़मीन पर बिखरे हुए अरबों खरबों इन्सानों के किये गए कामों से बाख़बर रहता है। वह कब, कहाँ, किस तरह, कौन, क्या काम करता है, वह सबसे वाक़िफ़ है। आज इन्सान की सबसे बड़ी नासमझी और नादानी यही है। वह इतने ज़बरदस्त इल्म रखने वाले से ग़ाफ़िल होकर अपनी ज़िन्दगी बुराईयों और गुनाहों में लथपत होकर गुज़ार रहा है। यह तस़व्वुर कि मेरा ख़ालिक़, मेरा मालिक, मेरे कामों पर नज़र रखता है, चाहे मैं उन्हें खुले तौ़र पर अंजाम दूँ या लोगों की निगाहों से छुपकर यह तस़व्वुर ही उसे बुराईयों से बचा सकता है। इस तस़व्वुर की मह़रूमी की वजह ही यह है कि आज हमारे मुआ़शरे में छुपकर तो क्या खुले आ़म बुराईयाँ बढ़ती जा रही हैं। इन्सानों के बनाये हुए क़ानून नाकाम साबित हो चुके हैं, जब तक सच्चे रब की नाज़िल की हुई आख़िरी आसमानी किताब क़ुरआन के मुत़ाबिक़ क़वानीन ज़मीन पर नाफ़िज़ नहीं होंगे, बेख़ौफ़ इन्सान इसी तरह क़ानून तोड़ते रहेंगे और मुआ़शरे को गंदा करते रहेंगे। इससे पहले कि तबाही मुकम्मल तौ़र पर तुम्हें घेर ले, रब का ख़ौफ़ इन्सानों के दिलों में जगाने के लिए उठ खड़े हो।

सूरह नह़ल की आयत 19 में है,
''और अल्लाह तुम्हारे ज़ाहिर और पोशीदा अह़वाल को जानता है।''

अल्लाह तआ़ला ने अपनी सि़फ़त को क़ुरआने करीम में मुख़्तलिफ़ त़रीक़ो से बयान किया है, रब की यह एक ऐसी सि़फ़त है जो किसी भी ऐसी चीज़ में नहीं पाई जाती। जिसे रब के अ़लावा पूजा जा रहा हो। रब्बे ह़क़ीक़ी की इसी सि़फ़त से बेइल्म होने ही का नतीजा है कि आज इन्सान खुले और छुपे तौ़र पर गुनाहों और बुराईयों में मुब्तला है, बल्कि अगर यह कहा जाए तो मुबालग़ा न होगा कि वह इंसानियत के दायरा से निकलकर हैवानियत के दायरे में दाख़िल हो गया है। बेशर्मी और बेह़याई इसे अच्छी मालूम होने लगी है। इन्सान को अच्छी त़रह़ जान लेना चाहिए कि इस रविश का अंजाम भी बुरा है। जो क़ौमें गुज़िश्ता ज़मानों में अपने बुरे आ़माल की वजह से हलाक हुई है उनका ज़िक्र अल्लाह ने अपनी किताबे अ़ज़ीम क़ुरआने करीम की मुख़्तलिफ़ सूरतों में बार बार किया है, उनकी हलाकत के भी वही अस्बाब थे, जो मौजूदा और आइन्दा क़ौमों की हलाकत के अस्बाब होंगे। इस ग़लत़ ख़्याल में न रहो कि वो अपने करतूतों की वजह से हलाक कर दिये गए मगर तुम बचा लिए जाओगे। तुम्हारी ह़रकतों को नज़रअंदाज़

कर दिया जाएगा। आख़िर तुम भी उसी तरह उसके बन्दे हो जिस तरह वो उसके बन्दे थे। उन पर तो वह अपना क़ानून नाफ़िज़ कर दे और तुम पर न करे। यह कैसे मुम्किन है? अगर तुम आज के इन्सान शिर्क करोगे, उसके अलावा दूसरों को पूजोगे या उसको भी पूजोगे और दूसरों की भी इबादत करोगे, उसकी किताब के एहकाम पर न चलोगे तो याद रखो। उसे कुदरत हासिल है और मुकम्मल कुदरत हासिल है। वह तुम्हें हलाक करके तुम्हारी जगह ऐसी क़ौम खड़ी कर देगा जो उसकी फ़र्मांबरदार हो और उसके बन्दों को दोज़ख़ की बजाय जन्नत का रास्ता दिखाने वाली हो।

इसी सूरह की आयत 23 में इसी मज़्मून को और भी ज़्यादा पुरज़ोर अल्फ़ाज़ में बयान किया गया है,
"और इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह तआ़ला लोगों की खुली और छुपी बातों को जानता है।"

अगर कोई सीधी सच्ची बात में शक करने लगे तो अपना ही नुक़्सान करेगा। सच्ची बात सच्ची ही रहेगी। इसमें कोई शक करने की वजह से शक करने वाले का अ़मल बिगड़ जाएगा और उसकी ज़िन्दगी ग़लत राहों पर मुड़ जाएगी, इन्सानों! इसमें रत्ती बराबर भी शक न करना तुम्हारा रब तुम्हारी खुली और छुपी हर तरह की बातों और कामों से ग़ाफ़िल नहीं है। उसका क़ानून ढ़ील का क़ानून है ताकि बन्दे अपनी इस्लाह करके उसके अ़ज़ाब से खुद को बचा ले। उसकी मोहलत का नाजाइज़ फ़ायदा न उठाओ वरना ऐसे नुक़्सान में पड़ जाओगे, जिसकी तलाफ़ी भी मुम्किन न हो सकेगी। पूजो तो उसी को पूजो, डरो तो उसी से डरो, पुकारो तो उसी को पुकारो, मांगो तो उसी से मांगो। यही सीधा रास्ता है। यह कामयाबी और नजात का राज़ है।

सूरह ताहा की आयत 7 में है,
"और अगर तुम पुकारकर बात कहो तो वह चुपके से कही हुई और उससे भी ज़्यादा छुपी हुई बात को जानता है।"

सच्चे रब की बेमिसाल और ग़ैर महदूद इल्म को जानने वाले किसी दूसरे की इबादत तो क्या करेंगे उसका तसव्वुर करना भी गुनाह समझते हैं, जिसके इल्म की यह शान हो, जो आयत में बयान की गई है। उसके अलावा कोई रब हो ही नहीं सकता, जो लोग दूसरों की पूजा में ग़र्क़ हैं वह उनके नफ़्स का धोखा है, शैतानी फ़रेब है। बाप दादा के तरीक़े पर चलने का जुनून है। आज के तरक़्क़ी

याफ़्ता ज़माने में अगर कोई शख़्स वक़्त देखने के लिए घड़ी का इस्तेमाल न करे और धूप की मदद से वक़्त का अंदाज़ा लगाने पर इस़रार करे और यह कहे कि बाप दादा ने कभी घड़ी का इस्तेमाल ही नहीं किया था, वह भी सूरज की धूप से ही वक़्त का अंदाज़ा लगाते थे। मैं भी ऐसा ही करूँगा और बाप दादा के तरीक़े से एक इंच भी न हटूँगा, क्या तुम ऐसे शख़्स को बेवक़ूफ़ नहीं समझोगे? अगर कोई शख़्स आज की फ़ौरी ख़बर को दूसरे तक पहुँचाने के लिए दूर दराज़ के मक़ामात पर फ़ोन करने की बजाय टेलीग्राम का इस्तेमाल करने पर इस़रार करे और यह कहे कि मेरे माँ–बाप, दादा ने तो कभी कोई ख़बर किसी को टेलीफोन से नहीं दी थी वह भी ऐसा करने के लिए टेलीग्राम का ही इस्तेमाल करते थे इसलिए मैं भी वैसा ही करूंगा और बाप दादा के तरीक़े से एक इंच भी नहीं हटूँगा। क्या तुम ऐसे शख़्स को बेवक़ूफ़ नहीं समझोगे? आज के साइन्सी और इल्मी ज़माने की बहुत सी जदीद और मुफ़ीद ईजादों के बारे में भी इसी तरह की मिसाल दी जा सकती है। क़ुरआने करीम जो न सिर्फ़ आज के दौर के लिए साइन्स और इल्म का सूरज है बल्कि आने वाले सभी ज़माने में सूरज की तरह दिमाग़ों और दिलों को रोशनी अ़ता करने वाला इल्मी सूरज है। इसकी बात को नज़रअंदाज़ करके बाप दादा के तरीक़े को इख़्तियर करना भी ऐसी ही नादानी है जैसी नादानी घड़ी, टेलीफ़ोन या जदीद मुफ़ीद साइन्सी ईजादात को तर्क करने की है। लोगो! आँखें रखते हुए अंधे न बनो, दिमाग़ रखते हुए बेअ़क़्ल न बनो, दिल रखते हुए नासमझ न बनो, आँखों, कानों, दिमाग़ और दिल का सही इस्तेमाल ही तुम्हें तुम्हारे उस रब तक पहुँचा सकता है, जिसे भूलकर तुम ज़िल्लत के साथ हर जगह अपना सिर झुकाने के लिए तैयार हो।

सूरह अम्बिया की आयत 110 में है,
"बेशक वह तुम्हारी पुकारकर कही हुई बात और दिलों में छुपी हुई बात को भी जानता है।"

आज के बेख़ौफ़ और कम इल्म इन्सान चिल्ला चिल्लाकर भी बुरी बातें अपनी जुबान से निकाल रहे हैं, और दिल में भी गंदे ख़्यालात रखते हैं तो इसकी वजह यह है कि वह सच्चे रब की उस सिफ़त का इल्म नहीं रखते जो आयत में बताई गई है। लड़ना, झगड़ना, गाली गुफ़्तार, दिलों में छुपे हुए नफ़रतों के गुबार किस लिए हैं? जुबानें ग़लत बातों की आ़दी क्यूँ बनी हुई है? और दिल बुग्ज़ व हसद की बुनियाद पर क्यूँ डूबे हुए हैं? रब्बे हक़ीक़ी के अ़लावा दूसरों की इबादत ने ही हमें ऐसी ग़लत राहों पर डाल दिया है। इबादत ग़लत चीज़ों की होगी तो दिल भी ग़लत रास्ता इख़्तियार करेगा। दिल में नर्मी पैदा होने की बजाय सख़्ती

पैदा होगी। फ़हम उजागर होने के बजाय वहम पैदा होगा। हिदायत के बजाय गुमराही मिलेगी। आज हमारे समाज में ज़्यादातर इन्सान उन चीज़ों को पूजने में लगे हुए है जो न ज़ोर से कही हुई बात को सुनते हैं और न दिलों में छुपी हुई बातों से वाक़िफ़ हैं। फिर आख़िर उनको पूजा का हक़ कहाँ से हासिल हो गया है? सोचो! तुम्हें ख़ुद अपनी ग़लती का एहसास हो जाएगा।

सूरह हज्ज की आयत 70 में है,
''क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह आसमानों और ज़मीन की हर चीज़ का इल्म रखता है बेशक यह बात किताब में दर्ज है, बेशक अल्लाह के लिए यह आसान है।''

आसमानों और ज़मीन की हर चीज़ का इल्म रखने वाला ही इस बात का मुस्तहिक़ है कि उसकी बजाय इबादत की जाए जो अपने दाएँ बाएँ का इल्म भी नहीं रखते और जिनको अपने पूजने वालों की पूजा की भी ख़बर नहीं उनको पूजना ऐसी बचकाना हरकत है जो अ़क्लमंद आदमी से कभी सरज़द हो नहीं सकती। लोगो! यह न देखो कि तुम्हारे समाज के अक्सर लोग किसको पूज रहे हैं। यह न देखो कि तुम्हारे बाप दादा किसको पूजते थे। उसको पूजो जिसको पूजे जाने का हक़ हासिल है और यह हक़ उसी को हासिल हो सकता है जिसका इल्म बेइंतिहा हो, बेपाया हो, और ऐसी ज़ात सिर्फ़ सच्चे रब अल्लाह तआ़ला ही की है।

सूरह नूर की आयत 64 में है,
''याद रखो कि जो कुछ आसमानो और ज़मीन में है, सब अल्लाह का है। अल्लाह उस हालत को जानता है जिस पर तुम अब हो और उस दिन को भी जानता है जब तुम उसके पास लौटकर जाओगे। फिर वह तुम्हारे किये गए कामों के बारे में तुम्हें बताएगा और अल्लाह तआ़ला को हर चीज़ का इल्म है।''

नासमझ इन्सानों की आँखें खोल देने, दिल को जगाने वाली कुरआने पाक की यह आयत इस क़ाबिल है। इसमें बार बार ग़ौर किया जाए। ज़मीन पर चलने फिरने वाला हर इन्सान हर वक़्त दूसरे इन्सानों के मुक़ाबले में मुख़्तलिफ़ हालत में होता है। क़ौल के एअ़तिबार से भी और फ़ेअ़ल के एअ़तिबार से भी। क़ौल के एअ़तिबार से कोई अपनी ज़ुबान से बुरी बातें करने में मशग़ूल है और कोई अच्छी बातों में लगा हुआ है। कोई नेकी की तरफ़ बुला रहा है तो कोई बदी की तरफ़

दावत दे रहा है। फ़ेअ़ल के एअ़तिबार से कोई चोरी, बदकारी, बेहयाई, बेशर्मी और हरामख़ोर में मुब्तला है, तो कोई ईमानदारी, पाकबाज़ी, हयादारी और हलाल रिज़्क़ हासिल करने में मसरूफ़ है। किसी की नियत जायज़ और नाजायज़ के ख़्याल से ऊपर उठकर हर तरफ़ से दुनिया समेटकर यहाँ ऐशो आराम से ज़िन्दगी गुज़ारने की है और किसी की नियत हलाल और हराम की तमीज़ करके बक़द्रे ज़रूरत दुनिया हासिल करने की है, ताकि उसे आख़िरत की पायदार कामयाबी हासिल हो। अल्लाह की रज़ामन्दी और दीदार का लाज़वाल तौहफ़ा मिल जाए। इन्सानों की इन तमाम हालतों का जानना कोई मामूली बात नहीं है। आपाधापी की मौजूदा ज़िन्दगी में इन्सान अहम बातों के बारे में ग़ौर करने के क़ाबिल ही नहीं रह गया है। वह झूठे, मनगढ़त रबों और सच्चे रब में फ़र्क़ करके सिर्फ़ सच्चे रब की ही इबादत को अपना शआ़र बनाए। जो इबादत के क़ाइल नहीं, जिन्होंने जानवरों की तरह खाने पीने और सोने को ही ज़िन्दगी का मक़सद बना रखा है, उनकी तो बात ही जाने दो तुम जो ऐसा नहीं समझते किसी के आगे झुकना भी चाहते हो, किसी की बन्दगी के ख़्वाहिशमन्द हो, किसी को अपना मअ़बूद बनाकर उसकी पूजा करके दिल को मुत्मइन करना चाहते हो, आख़िर क्यूँ नहीं सोचते कि हर एक के आगे झुक जाना, हर एक की बन्दगी करना, हर एक को मअ़बूद बनाना अ़क्लमंदी नहीं है। इतने बड़े बड़े काम उसी सबसे बड़े रब के लिए होने चाहिए जो सबकी हालतों से पूरी तरह बाख़बर है। वह सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह ही है। उस एक बड़े का बन्दा बनकर देखो। वह तुम्हारे क़दमों में दुनिया और आख़िरत के ख़ज़ाने बिखेर देगा। वरना याद रखो कि कल क़यामत के दिन उसके सामने तुम्हें उसी तरह मौत के बाद ज़िन्दा होकर पेश होना है, जिस तरह वह तुम्हें रात की गहरी नींद के बाद सुबह को जगा देता है। तुम उसके सिवा जिस जिसकी इबादत में अपना वक़्त ज़ाया कर रहे हो और जिन बुरे कामों में मुब्तला हो। वह सबसे बाख़बर है। अपने कामों के मुताबिक़ तुम्हें जज़ा व सज़ा के लिए भी तैयार रहना चाहिए।

सूरह फ़ुरक़ान की आयत 6 में है,
''लोगों से कहो कि कुरआन उसने नाज़िल किया है जो आसमानों और ज़मीन की छुपी हुई चीज़ों को जानता है।''

तुम आसमान और उस पर चमकने वाला सूरज, चांद, सितारे को देखते हो। बादलों को उठते हुए, बारिश की बूंदों को गिरते हुए देखते हो। बिजली को चमकते हुए, ज़मीन पर उगने वाले पौधों और पेड़ों को देखते हो। डालियों पर खुलने वाले फूलों और निकलने वाले फलों को देखते हो। ज़मीन पर बिखरी हुई

हज़ारों क़िस्म की चीज़ों को देखते हो। मगर आसमानों के ऊपर और ज़मीन के नीचे क्या क्या छुपा हुआ है? वह तुम्हें नज़र नहीं आता। तुम्हारा सच्चा रब उनको देखता है और उनके बारे में मुकम्मल इल्म रखता है। तुम आख़िर उसे छोड़कर उनकी पूजा में क्यों लगे हुए हो जिनका इल्म सिफ़र के बराबर है? सोचो! जब कोई अपने रब के आगे झुकता है तो वह ज़रूर उसे जान लेता है, उसका इल्म रखता है, जहाँ तक सीनों में छुपी हुई बातों और ख़्यालात का तअ़ल्लुक़ है उन्हें तो वह इन्सान भी नहीं जानते जो हमारे काम और हर फ़ेअ़ल को जो ज़ाहिर में दिखाई देता है, जान लेते हैं। मूर्ति, मज़ार, पत्थर, पेड़ या किसी और का तो ज़िक्र ही क्या जो सरासर बेजान हैं। इन्सानों! ग़ाफ़िल इन्सानों! पहचानो अपने उस ज़बरदस्त रब को, अ़ज़ीम मालिक को जो तुम्हारे हर फ़ेअ़ल और हर क़ौल का इल्म रखता है। ख़्वाह तुम उसे ज़ाहिर करो या अपने दिल में छुपाओ। सोचोगे तो पता चलेगा कि तुम अब तक जिनकी पूजा करते रहे हो, वह पूजा के मुस्तहिक़ है ही नहीं। सोचोगे तो पता चलेगा कि तुम अपने रब की इबादत न करने की वजह से, उसका हक़ दूसरों को देने की वजह से, कितना बड़ा ज़ुल्म करते रहे हो। रब पर नहीं खुद अपनी जानों पर, अपने नफ़्सों पर, अपनी रूहों पर। सोचोगे तो हक़ीक़त खुल जाएगी, सीधा रास्ता दिखाई देगा और तुम आइन्दा गलियारों में भटकने से बचा जाओगे। रोशन राहें तुम्हारा इस्तिक़्बाल करेगी।

सूरह अ़न्कबूत की आयत 44 में है,
''जिस जिसको लोग उसके अ़लावा पुकारते हैं, अल्लाह उसे जानता है और वह ज़बरदस्त हिक्मतों वाला है।''

यह आयत ज़बरदस्त इल्म व उसकी हिक्मत को अ़याँ करने वाली आयत है उनके लिए जो अ़क़्लो फ़हम से काम ले करके सही और ग़लत राह के फ़र्क़ को समझना चाहते हों। आज की दुनिया में बसने वाले इन्सान अपनी मुरादों को पूरा होने की ग़र्ज़ से न जाने किस किसको पुकार रहे हैं। सैंकड़ों दर हैं जिन पर सज्दे लुटाये जा रहे हैं। सच्चे रब की करीमी और रहीमी देखिए कि वह सबको रिज़्क़ दिये चले जा रहा है। रिज़्क़ उनका भी बन्द नहीं है जो उसके सिवा दूसरों को पुकारने में, दूसरों की इबादत में, दूसरों की तारीफ़ व तौसीफ़ में लगे हुए हैं मगर वह जानता उनको भी है और उनके ग़लत अफ़कार पर भी उसकी नज़र है। क़यामत के दिन जब दुनिया के तमाम इन्सान दोबारा ज़िन्दा करके उठाये जाएँगे। उस वक़्त उनको अपनी ग़लतकारी का नतीजा ज़रूर भुगतना पड़ेगा। सच्चे रब की इबादत को तर्क करके दूसरों की इबादत करने के जुर्म में उन्हें भड़कते हुए शोलों और तरह तरह की तक्लीफ़ों का सामना करना पड़ेगा। अपने हक़ीक़ी रब

को छोड़कर दूसरों की इबादत करने वाले इस ग़लतफ़हमी में मुब्तला न हों कि वह जिस किसी को पूजें, उनका कुछ बिगड़ने वाला नहीं है। उनका रब उनके आ़माल से वाक़िफ़ है मगर क्योंकि वह हकीम भी है इसलिए वह अपनी हिक्मत से ऐसे लोगों को फ़ौरी तौर पर अपनी गिरफ़्त में नहीं लेता जो उसके हक़ को दूसरों में तक़्सीम करने की जसारत और गुस्ताख़ी कर रहे हैं। नादानो! सोचो जिसने तुमको पैदा किया है और जिस्मानी नेअ़मतों की ला ज़वाल नेअ़मतों से नवाज़ा है। ऐसे एअ़ज़ा जिनकी मदद से ही तुम दुनिया की हर चीज़ें इस्तेमाल करके उनसे फ़ायदा उठाने के क़ाबिल बने हो। जो तुम्हें आसमान और ज़मीन से बराबर रिज़्क़ दिये चले जा रहा है। ऐसे अ़ज़ीम रब को छोड़कर तुम उनकी इबादत करते हो, उनको पूजते हो, उनके आगे झुकते हो, उन पर नज़राने चढ़ाते हो, जो न तुम्हारे ख़ालिक़ हैं और न राज़िक़ हैं। इससे पहले कि मौत तुम्हें आहिनी पंजों में जकड़कर तुम्हारी सलाहियतों को छीन ले। अपने रब की अ़ज़्मत को पहचानकर उसी की इबादत में मशग़ूल हो जाओ। वरना याद रखो! उसकी इबादत में तो फ़रिश्ते रात दिन लगे हुए हैं। वह तुम्हारी इबादत का मोहताज नहीं है। उसकी इबादत से मुँह मोड़कर दूसरे के आगे सज्दे लुटाकर तुम अपने बुरे अंजाम को खुद दावत दे रहे हो।

सूरह लुक़्मान की आयत 34 सच्चे रब की ला ज़वाल और बेमिसाल इल्म की निशानदेही करती है। इर्शादे इलाही है,
''बेशक क़यामत की ख़बर अल्लाह ही को है और वही बारिश बरसाता है और वही जानता है जो कुछ रहमों में है और कोई शख़्स नहीं जानता कि वह कल क्या अ़मल करेगा और कोई नहीं जानता कि वह किस ज़मीन में मरेगा, बेशक अल्लाह इन सब बातों का जानने वाला और बाख़बर है।''

लोगो! इस आयत को बार बार पढ़ो और इसमे छुपे हुए हक़ाइक़ और तालीमात पर ग़ौर करो। तुम्हें खुद मालूम हो जाएगा कि उस ज़बरदस्त इल्म वाले को छोड़कर तुमने अपनी हक़ीक़ी ज़िन्दगी पत्थरों, मूर्तियों, मज़ारों और खुद अपने जैसे इन्सानों की पूजा करने में बर्बाद कर ली। ज़ाया कर दिया उन बेश बहा लम्हों को जो रब की इबादत के लिए तुम्हें अ़ता किये गए थे। हक़ीक़त यह है कि जो क़यामत के बारे में पूरी पूरी मालूमात रखता है वह कब और किस वक़्त आएगी। जो बारिश बरसाकर तुम्हारी फ़सलों को रौनक़ बख़्शता है और तुम्हारे लिए रिज़्क़ फ़राहम करता है। जो माओं के रहमों में छुपे हुए बच्चों की हरकात व सक्नात से बाख़बर है, उनकी जिंस से वाक़िफ़ है जो इन्सानों के ज़रिये अंजाम

दिये जाने वाले मुस्तक़्बिल के कामों से ख़बरदार है। जो हर शख़्स की मौत के सही मक़ाम को जानता है। वही उसका मुस्तहिक़ है कि उसे पूजा जाए, उसके एहकाम पर अ़मल किया जाए, उसके अ़लावा या उसके साथ दूसरों को भी मअ़बूद बनाना। इतनी स़रीह़ ग़लत़ी है जो इन्सान को दोज़ख़ की आग का ही ह़क़दार बनाती है।

सच्चे रब की सिफ़त-ए-तालीम

सच्चे रब की बेमिसाल सिफात का तज़किरा करने के बाद हम देखेंगे कि उसकी तालीम क्या है, सच्चे रब की तालीम से उसकी सच्ची किताब क़ुरआने करीम की आयात हमें वाक़िफ़ कराती है, उसकी अहम तालीम यह है कि इन्सान ज़मीन पर जानवरों की त़रह़ ज़िन्दगी न गुज़ारे कि सिर्फ़ खाने पीने सोने और दूसरी ज़रूरियात ही में खोकर रह जाए, न कुछ सोचे न समझे, बल्कि वह ग़ौरो फ़िक्र से काम ले, इस त़रह़ वह जानवरों की सत़ह़ से बुलंद हो सकेगा, अ़क़्लो शऊ़र की रहनुमाई में वह अपनी ज़िन्दगी का सफ़र तै करेगा, तो राहें उसके लिए रोशन हो जाएगी और मंज़िल तक रसाई आसानी से हो जाएगी, वह ग़लत़ कामों को करने से बचेगा, सही आ़माल अंजाम देगा।

सूरह आले इमरान की आयत 190 में है,
''बिलाशुब्हा आसमानों और ज़मीन की तख़्लीक़ में और रात दिन के आने जाने में, अ़क़्लमंदों के लिए निशानियाँ और दलाइल हैं।''

आज के मशीनी दौर में इन्सान उन सामने के ह़क़ाइक़ तक पहुँचने से भी मह़रूम हो गया है जिन तक थोड़े ग़ौरो फ़िक्र के बाद भी रसाई हो सकती है। आसमान, ज़मीन, दिन रात का आना जाना हमारी सोच में कोई तब्दीली नहीं लाता ह़ालाँकि यही सामने की चीज़ें और उनके बारे में ग़ौरो फ़िक्र सच्चे रब की अ़ज़्मत से हमें रुशनास कराने में अहम किरदार अदा कर सकता है, हम बेह़िस बनकर आसमान, उस पर चमकने वाला सूरज, चांद और सितारों को देखते रहते हैं, रात को दिन में और दिन को रात में बदलते हुए देखते रहते हैं, मगर नहीं सोचते कि इतने बड़े बड़े इंक़िलाबात बरपा करने वाली ज़ात कितनी अ़ज़ीम होगी, दिन रात और रात दिन में उसके बनाये हुए क़ानून के तह़त बदलते हैं। सूरज, चांद और सितारे उसी के तक्वीनी क़ानून के बन्दे है तो फिर क्या इन्सान को उसी की इबादत नहीं करनी चाहिए? यक़ीनन उसी की इबादत करनी चाहिए मगर जो क़ुरआन के मुत़ाबिक़ ग़ौरो फ़िक्र से काम नहीं लेते, वह न जाने किस किस दर पर भटकते फिरते हैं और किस किसको पूजने में लगे हुए हैं, अफ़सोस स़द अफ़सोस! सच्चे रब की तालीम के रंग में रंग जाओ, और ग़ौर फ़िक्र को आ़दत बनाओ।

सूरह बक़रह की आयत 164 में इर्शादे रब्बानी है,
''बिला शुब्हा आसमानों और ज़मीन को बनाने में और रात दिन के आने

जाने में और कश्तियों में जो कि दरिया में चलती है, ताकि आदमियों को नफ़ा पहुँचाए और बारिश के पानी में जिसको अल्लाह ने आसमान से बरसाया फिर उसी पानी से ज़मीन को तरोताज़ा किया जबकि वह ज़मीन खुश्क हो चुकी थी और हर क़िस्म के हैवानात उसमें फैला दिये और हवाओं के बदलने में, और बादलों में जो ज़मीन व आसमान के दरम्यान मुअ़ल्लक़ रहते हैं। अ़क़्लमंदों के लिए निशानियाँ हैं।''

इन्सान हक़ीक़त में वही इन्सान है जो हर मामले में अपनी अ़क़्ल को इस्तेमाल करके किसी नतीजे तक पहुॅंचने की कोशिश करे, दूसरों की देखा देखी किसी काम को करते रहना बेवक़ूफ़ी की अ़लामत है, सच्चे रब की पहचान में भी अ़क़्ल का इस्तेमाल ही सही नतीजे पर पहुँचाता है और जो अपने बड़े बूढ़ों के तरीक़े पर ही बिला सोचे समझे चलते रहते हैं मूर्तियों, मज़ारों के चक्कर काटते रहते हैं, वह राह से भटक जाते हैं। क़ुरआन अ़क़्ल से काम लेने की हिदायत करता है, अ़क़्ल से काम लेने वाले जब ग़ौरो फ़िक्र को अपना तरीक़ा बना लेते हैं और कायनात पर नज़र डालते हैं तो उन्हें पता चल जाता है कि सच्चा रब वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को बनाया है जिसकी क़ुदरत से रात दिन में और दिन रात में बदलता है, कश्तियाँ दरिया में चलती है, और हमारे लिए मुख़्तलिफ़ फ़ायदे हासिल करने का ज़रिया बनती हैं जो आसमान से पानी बरसाकर हमारी खेतियों को हरा भरा कर देता है जिसने ज़मीन पर तरह तरह के जानवर बिखेर रखे हैं, जिसके हुक्म से हवाएँ चलती है और बादल उठते हैं, तुम सच्चे रब के अ़लावा जिस किसी को भी पूजते हो क्या उसने कभी कोई ऐसा काम अंजाम दिया है या अंजाम देने का दावा किया है, फिर दावा करने के बाद अपनी दलील भी पेश की है, अगर नहीं यक़ीनन ऐसा नहीं किया तो समझ लो कि तुम अ़क़्ल से दूर होकर सिर्फ़ औरों की तक़्लीद में दूसरों की पूजा करने में अपना वक़्त ज़ाया करते हो और अपने सच्चे रब क हक़ को दूसरों की तक़्सीम करने के मुज्रिम बन रहे हो, अ़क़्ल से काम लो, इन निशानियों में ग़ौर करो, जो आसमानों और ज़मीन में बिखरी हुई हैं, कायनात की हर चीज़ पुकार पुकारकर कह रही है, मेरा ख़ालिक़ एक ही है, अल्लाह बुज़ुर्ग बरतर, अरफ़अ़ व आ़ला, अकबर यक्ता, हर इन्सान का दिल भी यही पुकारता है, मगर इन्सान नादान बनकर अपने दिल की आवाज़ को नहीं सुनता, ख़्वाहिशों, लज़्ज़तों, फ़ायदों की दलदल में फंसकर हाथ मारता रहता है और ज़िन्दगी के जौहर को मिट्टी में मिला देता है, तुम जितना अ़क़्ल से काम लोगे ग़ौरो फ़िक्र करोगे। क़ुरआनी आयात से तअ़ल्लुक़ जोड़ोगे, उनमें छुपे हुए हक़ाइक़ तक पहुँचने के लिए अपना वक़्त लगाओगे, हक़ीक़त तुम पर रोशन होती चली जाएगी, तुम बेज़ार हो जाओगे, उन झूठे रबों से जो रब कहलाने के

मुस्तहिक़ ही नहीं है।

सूरह रूम की आयत 8 में है,
''क्या इन्होंने अपने दिलों में यह ग़ौर नहीं किया कि अल्लाह तआ़ला ने आसमानों और ज़मीन को और उन चीज़ों को जो उनके बीच में है, हक़ के साथ और एक मुक़र्ररा मुद्दत तक के लिए पैदा किया है और अक्सर लोग क़यामत के दिन अपने रब के मिलने से इन्कार करते हैं।''

दुनिया की ग़फ़लत में डूबे बेफ़िक्र इन्सानों को चौंकाने, झिंझोड़ने और जगाने के लिए यह आयत अपनी मिसाल नहीं रखती। ग़ौरो फ़िक्र का पैग़ाम देने वाली क़ुरआने करीम की यह एक बेहतरीन आयत है। आसमानो और ज़मीन को हम रोज़ाना देखते हैं, मगर बेहि़स बनकर आयत में वाज़ेह किया गया है, न तो आसमान को सिर्फ़ बनाने के लिए बनाया गया है और न ही ज़मीन बिला वजह पैदा की गई है, दोनों की तख़्लीक़ हक़ और हिक्मत के साथ की गई है और एक मुक़र्ररा मुद्दत के लिए उनको और उनके बीच पाई जाने वाली चीज़ों जैसे हवा, बादल वग़ैरह को बनाया गया है वह मुक़र्ररा मुद्दत है, क़यामत का दिन जब हर इन्सान अपने रब से मुलाक़ात करेगा और अपने कामों का हिसाब देगा, सच्चे रब को मानकर, उसकी तालीम पर अ़मल करने वाले जन्नत की नेअ़मतो से सरफ़राज़ किये जाएँगे। सच्चे रब को न मानकर उसके एहकामात को तोड़ने वाले दोज़ख़ में धकेल दिये जाएँगे।

सूरह रअ़द की आयत 3 में है,
''और वह ऐसा है कि उसने ज़मीन को फैलाया और उस ज़मीन पर पहाड़ और नहरें पैदा कीं और उसमें हर तरह के फलों के जोड़े पैदा किये, वह रात की तारीकी से दिन की रोशनी को छुपाता है, इन सब बातों मे सोचने वालों के लिए तौहीद की निशानियाँ हैं।''

इन्सान हज़ार झूठे रब बना ले, उनकी पूजा करता रहे, हक़ीक़त यह है कि रब एक ही है। उसे पहचानो वह अल्लाह ही है, जिसने ज़मीन को फैलाकर तुम्हारे रहने सहने के क़ाबिल बनाया है, तुम्हारे फ़ायदे के लिए पहाड़ और नहरें पैदा कर दीं, तरह तरह के फल बनाए, रात और दिन पैदा किये। ताकि दिन में तुम अपनी रोज़ी हासिल करो और रात में आराम कर सको। आख़िर तुम ग़ौरो फ़िक्र से क्यों काम नहीं लेते? आख़िर तुम ख़ुद क्यों अपने दुश्मन बने हुए हो? कि अपने मुहसिन व मुनइम की इबादत के बजाय दूसरे दरों पर अपने सिर झुकाकर, दूसरों से मुरादें

मांगकर, उनसे उम्मीदें वाबस्ता करके खुद को दोज़ख़ का हक़दार बना रहे हो। सोचो! समझो और ग़ौर करो, जानवरों की तरह ज़िन्दगी गुज़ारना छोड़ दो। अपने सच्चे रब को पहचानकर उसके लिए अपने आपको वक़्फ़ कर दो। इसमें तुम्हारा फ़ायदा है, तुम्हारी नजात का सामान है।

सूरह नह्‌ल की आयत 10 और 11 में इर्शादे रब्बानी है,
''वह ऐसा है जिसने तुम्हारे वास्ते पानी बरसाया जिसमें से तुम पीते हो और जिसकी वजह से दरख़्त पैदा होते हैं, जिसमें तुम अपने मवेशी चरने के लिए छोड़ देते हो। उस पानी से वह तुम्हारे लिए खेती, ज़ेतून, खजूर, अंगूर और हर त़रह़ के फल पैदा करता है। बेशक इन बातों में ग़ौरो फ़िक्र करने वालों के लिए निशानियाँ हैं।''

सूरह ज़ुमर की आयत 42 में है,
''मौत आने के वक़्त लोगों की जानों को अल्लाह अपने क़ब्ज़े में कर लेता है और जिनको मौत नहीं आती, उनको सोने के वक़्त अपने क़ब्ज़े में कर लेता है। फिर उन जानों को रोक लेता है, जिन पर मौत का हुक्म जारी हो जाता है और बाक़ी जानों को एक मुक़र्ररा मुद्दत के लिए छोड़ देता है। इसमें ग़ौरो फ़िक्र करने वालों के लिए निशानियाँ हैं।'
'

सूरह जासिया की आयत 12 और 13 में है,
''अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए दरिया को मसख़्ख़र कर दिया ताकि उसके हुक्म से उमसें कश्तियाँ चलें और ताकि तुम उसके फ़ज़्ल को तलाश करो और इसी त़रह़ ज़मीनो आसमान की तमाम चीज़ों को अपनी त़रफ़ मसख़्ख़र बना लिया है। बेशक इन बातों में ग़ौरो फ़िक्र करने वालों के लिए निशानियाँ हैं।''

इन आयात में सच्चे रब की क़ुदरतों में ग़ौरो फ़िक्र करने की दावत दी गई है। जो लोग दुनिया में सोचने समझने की आ़दत नहीं डालते, जो लोग अपने ही जैसे इन्सानों की अन्धी पैरवी को ही काफ़ी समझते हैं, जो लोग समाज में फैले हुए त़ौर त़रीक़े का खुद को पाबन्द बना लेते हैं, जो लोग वहम परस्ती को ही ह़क़ परस्ती का नाम देते हैं और फ़हम व शऊ़र का दामन छोड़ देते हैं और जो लोग सिर्फ़ और सिर्फ़ दुनियावी ज़िन्दगी को ही अपना मक़्स़द बना लेते हैं और इस दुनिया में ह़ासि़ल होने वाले फ़ायदों और लज़्ज़तों पर ही नज़र करते हैं। ख़्वाह वह मूर्तियों की पूजा और मज़ार परस्ती या नफ़्स परस्ती के ज़रिये ही ह़ासि़ल हों,

वह लोग सीधी राह से भटक जाते हैं और सच्चे रब को छोड़कर या उस पर ईमान रखते हुए दूसरों की पूजा में लगे रहते हैं। ग़ौरो फ़िक्र से काम न लेने के सबब वह आख़िरकार ऐसे नुक़्स़ान से दो चार होते हैं जिसकी तलाफ़ी भी मुम्किन नहीं। दुनिया में उनको दिली सुकून नहीं मिलता और आख़िरत में अ़ज़ाबे दर्दनाक का शिकार होते हैं। इन्सानों! तुम्हें चाहिए कि ग़ौरो फ़िक्र से काम लो और सच्चे रब से अपना तअ़ल्लुक़ क़ायम करके उसके एह़कामात पर चल पड़ो। मुन्दरजा बाला तीनों आयतों के आख़िरी अल्फ़ाज़, **''इस बात की दलील के लिए काफ़ी है कि कायनात और उसमें बिखरी हुई सच्चाईयों और सच्चे रब की क़ुदरतों में ग़ौरो फ़िक्र करने वाली क़ौम ही मनगढ़त रबों से छुटकारा पाने में कामयाब हो सकती है।''** यह वाज़ेह़ हो जाने के बाद कि सच्चा रब हमें ग़ौरो फ़िक्र के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने की तालीम देता है। ताकि हम दाइमी और अब्दी नुक़्स़ान से मह़फ़ूज़ रहें। आईए, देखिए! इस तालीम को मानने और न मानने का नतीजा क्या होता है।

सूरह रअ़द की आयत 18 में रब फ़र्माता है,
''जिन्होंने अपने रब का हुक्म माना, उनके वास्त़े भलाई है और जिन्होंने उन हुक्मो को न माना, अगर उनके पास जो कुछ ज़मीन में है सारा और उतना ही उनके साथ और हो और बदले में उन सबको दे दे तो भी उनके लिए बड़ा ह़िसाब है और उनका ठिकाना दोज़ख़ है और वह आराम की बुरी जगह है।''

आयत में सच्चे रब ने दुनिया के तमाम इन्सानों से वादा किया है अगर वह अपने रब पर ईमान लाकर, उसकी तालीम और एह़कामात पर अ़मल पैरा होंगे तो उनको दुनियावी भलाईयाँ ह़ासि़ल होंगी। दुनिया में ऐसे लोग सुकून व इत़्मिनान की ज़िन्दगी गुज़ारेंगे और मरने के बाद क़यामत के दिन ज़िन्दा किये जाएँगे तो उस वक़्त भी वहशतों, घबराहट में मुब्तला न होंगे और जन्नत के लहलहाते बाग़ों में मज़े से रहेंगे, वहाँ उनको पाकीज़ा रिज़्क़ सुबह़ व शाम ह़ासि़ल होगा और जो इन्सान अपने रब को छोड़कर दूसरों की इबादत में खोये हुए रहेंगे और उसकी तालीम और एह़कामात पर अ़मल पैरा नहीं होंगे, तो क़यामत के दिन उनके करतूतों की माफ़ी के बदले में ज़मीन की तमाम दौलतें, ख़ज़ाने और नेअ़मतें और उस जैसी दूसरी नेअ़मतें भी क़बूल नहीं की जाएँगी, उनसे उन कामों का सख़्ती से ह़िसाब लिया जाएगा और उनको दोज़ख़ में डाल दिया जाएगा, जो एक बुरी जगह है। लोगो! इससे पहले कि यह ख़त़रनाक और दर्दनाक मन्ज़र तुम्हारे सामने आए, सच्चे रब की अ़ज़्मतों को पहचानकर, उसकी किताब के ज़रिये उसकी

तालीमात और एहकामात का इल्म हासिल करके अपने ग़लत तौर तरीक़ों को बदल डालो। बाप दादा के झूठे गढ़े हुए रबों के जाल से बचो। उस राह पर चलो जो मंज़िले मक़सूद तक तुम्हें पहुँचा दे। अपने उस रब की तरफ़ दौड़ो, जो दुनिया के तमाम इन्सानों का रब है।

सूरह बक़रह की आयत 25 में है,
''और उन लोगों को ख़ुशख़बरी सुनाओ जो ईमान लाए और अच्छे काम किये, उनके लिए ऐसे बाग़ है जिनके नीचे नहरें बहती है। जब उनको वहाँ कोई फल खाने को मिलेगा तो कहेंगे कि यह तो वही फल है जो हमें इससे पहले दुनिया में भी मिला था, और उनको मिलते जुलते फल दिये जाएँगे और उनके लिए वहाँ पाकीज़ा औ़रतें होंगी और वह वहाँ हमेशा हमेश रहेंगे।''

आयत ने वाज़ेह कर दिया कि जो लोग दुनिया में ग़ौरो फ़िक्र के साथ ज़िन्दगी गुज़ारेंगे, सच्चे रब और उसकी बताई हुई तमाम बातों पर ईमान लाएँगे, उसके तमाम रसूलों, नबियों, फ़रिश्तों और क़यामत के दिन को बरहक़ समझेंगे, नेक कामों को अंजाम देंगे, बुरे कामों से अपना दामन बचायेंगे, उनके लिए यह ख़ुशख़बरी है। उनको दोज़ख़ के भड़कते हुए शोलों से बचाकर ऐसे बाग़ों में पहुँचा दिया जाएगा जिनके इर्द गिर्द खुशगवार नहरें बहती होंगी, जाँ पुरफ़िज़ा और रूह परवर होंगे । उनके लिए वहाँ बेहतरीन क़िस्म के फल और पाकीज़ा शरीके हयात होंगी और सबसे बड़ी नेअ़मत यह कि वह ऐसे हयात अफ़ज़ा बाग़ों में हमेशा रहेंगे। लोगो! अगर तुम उन नेअ़मतों के हक़दार बनना चाहते हो तो आज से ही उन तमाम फ़र्ज़ी मअ़बूदों को हिम्मत करके छोड़ दो, जिनको तुम आज तक दूसरों की देखा देखी अपनाये हुए थे, जिनके इख़्तियार में कुछ भी नहीं, तुमने सिर्फ़ अपने वहम से और अपने बाप दादा की अन्धी पैरवी की वजह से ऐसा समझ लिया था। इख़्तियार वाला, ग़ल्बे वाला, क़ुदरत वाला सिर्फ़ अल्लाह ही है, देने और न देने वाली ज़ात सिर्फ़ उसी की है।

इसी सूरह की आयत 62 में है,
''बेशक जो लोग ईमान लाए और जो लोग यहूदी व नसारा और साएबीन हैं उनमें से जो भी अल्लाह पर और रोज़े आख़िरत पर ईमान लाया और अच्छे काम किये तो उनके लिए उनका सवाब उनके रब के पास है और उनको न कोई ख़ौफ़ होगा और न वो ग़मगीन होंगे।''

यह आयत दुनिया के तमाम इन्सानों के लिए एक आ़म ऐलान है। बशर्ते कि वह इस ऐलान को खुले कानों से सुनें। ज़मीन पर पाये जाने वाले मुख़्तलिफ़ धर्मों और मज़हबो के इन्सान जिस तरीक़े और अक़ीदे के साथ ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं, उस तरीक़े और अक़ीदे के सही और ग़लत होने का अच्छी तरह से जायज़ा लें। तरीक़ा और अक़ीदा वही ठीक होगा जो सच्चे रब ने बता दिया है। उसी तरीक़े और अक़ीदे पर कारबन्द रहकर हम अपने रब के अ़ता कर्दा उस सवाब के हक़दार बन सकते हैं जिसके सामने दुनिया के बड़े से बड़े फ़ायदे मिट्टी हैं। वह तरीक़ा और अक़ीदा है सच्चा रब। उसके रसूलों, उसके फ़रिश्तों और उसके तमाम एहकामात पर ईमान लाकर जो उसने अपनी आख़िरी किताब क़ुरआन में बयान कर दिये हैं। नेक कामों में अपनी ज़िन्दगी गुज़ारना। यह तरीक़ा और अक़ीदा उनको हर तरह के ख़ौफ़ और ग़म से नजात दिला देगा और इस दुनिया और मरने के बाद सामने आने वाली दुनिया में अम्ने अमान से रहेंगे।

इसी सूरह की आयत 82 में है,
''और जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल किये, वही जन्नत में जाने वाले हैं, वो हमेशा उसी में रहेंगे।''

लोगो! तुम्हारा सच्चा रब बार बार दो चीज़ों पर ज़ोर दे रहा है, वो भी सिर्फ़ तुम्हारे फ़ायदे के लिए। पहली चीज़ ईमान और दूसरी चीज़ अच्छे काम। रूए ज़मीन पर बिखरे हुए अरबो–खरबों इन्सानों में वही इन्सान है, जो इन दो चीज़ों की हक़ीक़त को समझकर इन्हें अपनी ज़िन्दगी का लाज़मी हिस्सा बना ले। सच्चे रब और उसकी तालीम पर ईमान लाकर उसके आख़िरी रसूल के ज़रिये बताये गए अच्छे कामों में वक़्त लगाए जिसका बदला मरने के बाद जन्नत और उसकी ला ज़वाल नेअ़मतें हैं।

इसी सूरह की आयत 277 में है,
''बेशक जो लोग ईमान लाए और अच्छे अ़मल किये और नमाज़ को क़ायम रखा और ज़कातें अदा कीं, उनके लिए उनके रब के पास बड़ा सवाब है और न उनको ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे।''

इस आयत में सच्चे रब ने उन अच्छे कामों के बारे में भी बता दिया है जिसका ज़िक्र इससे पहले की आयतों में हो चुका है। अच्छे कामों में से दो अहम और अच्छे काम यह हैं कि नमाज़ को पाबन्दी के साथ क़ायम रखना और ज़कात देते रहना। सच्चे रब पर ईमान लाकर उसके इन एहकामात पर चलने का नतीजा,

दुनिया व आख़िरत में ख़ौफ़ व हिज़्न से नजात पाना होगा।

सूरह निसाअ की आयत 57 में है,
''और जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किये, हम उनको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी और वह उसमें हमेशा रहेंगे। उनके लिए वहाँ पाकीज़ा बीवियाँ होंगी और हम उनको घनी छाँव में दाख़िल करेंगे।''

लोगो, पढ़ो! और बार बार पढ़ो! इस आयत को और सोचो कि रब को मानकर सिर्फ़ उसी की इबादत करने, उसके सामने सज्दा रेज़ होने और उसकी ख़ुशनुदी के लिए नेक काम अंजाम देने का रब की त़रफ़ से कितना उ़मदा बदला है।

इसी सूरह की आयत 121 में अल्फ़ाज़ की मामूली तब्दीली के साथ आयत 57 के मज़्मून को ही दोहराया गया है ताकि ह़क़ीक़त ज़हनों पर पूरी त़रह रोशन हो जाए। इर्शादे बारी तआ़ला है,
''और जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किये, हम उनको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, वो उनमें हमेशा रहेंगे। अल्लाह का वादा सच्चा है। अल्लाह से ज़्यादा सच्चा क़ौल किसका हो सकता है?''

सूरह माइदा की आयत 9 में फ़र्माने बारी है, ''अल्लाह ने वादा किया है ईमान वालों से और जो नेक अ़मल करते हैं कि उनके वास्ते बख़्शिश और बड़ा सवाब है।''

लोगो! तुम्हारे सच्चे अल्लाह से ज़्यादा सच्चा वादा और किसका हो सकता है? बल्कि ह़क़ीक़तन किसी और का वादा सच्चा हो ही नहीं सकता। तजुर्बा इसका शाहिद है। आज की दुनिया में वादे इसीलिए किये जाते हैं ताकि उनको पूरा न किया जाए। रहनुमा मुस्लेहीन सभी अ़वाम से झूठे वादे करते हैं। आज के इन्सान की सबसे बड़ी बदक़िस्मती यही है कि वह अपने जैसे इन्सानों के फ़र्ज़ी वादों पर पूरा एअ़तिमाद कर रहा है, मगर अपने सच्चे रब के इन्तिहाई सच्चे वादे से ग़ाफ़िल है, और वाक़िफ़ है तो उस पर यक़ीन नहीं करता। नतीजा यह कि तबाहियों और ज़िल्लतों से दो चार है। बर्बादियाँ और रुस्वाइयाँ उसका मुक़द्दर बन चुकी है। सच्चे रब का सच्चा वादा यह है कि उस पर ईमान लाकर नेक आ़माल

अन्जाम देने से इन्सान नजात और बड़े सवाब का मुस्तह़िक़ बनता है। सच्चे रब पर ईमान लाकर उसी की पूजा करने और उसी के हुक्मों पर चलने के इन्आ़मात हमें मालूम हो चुके हैं। उन मानने वाले इन्सानों के मुक़ाबले में, न मानने वालों का क्या अंजाम होगा? सच्चे रब की सच्ची किताब की आयात की रोशनी में इसे भी जानते चलें ताकि हम सबकी आँखों से ग़फ़लत का पर्दा हट जाए।

सूरह बक़रह की आयत 161 और 162 में सच्चे रब का फ़र्मान है,
''बेशक जो लोग काफ़िर हुए और कुफ़्र की ह़ालत में मर गए, उन पर अल्लाह की और फ़रिश्तों की और सब लोगों की लअ़नत है, हमेशा उसी लअ़नत में रहेंगे। न उनका अ़ज़ाब हल्का किया जाएगा और न उनको मोहलत मिलेगी।''

अपने ख़ालिक़ व राज़िक़ को छोड़कर दूसरों की बन्दगी और पूजा में लगे हुए लाखों करोड़ो इन्सानों, पत्थरों और मज़ारों को मअ़बूद बनाकर पूजने वाले इन्सानों, अपने ही जैसे इन्सानों की बन्दगी करने वाले इन्सानों! इन आयात की शक्ल में अपने अंजाम पर नज़र डालो। सच्चाई को न मानने वालों का अंजाम कितना होलनाक है? लोगो! मौत से पहले बड़े से बड़े न मानने वालों के लिए तौबा का दरवाज़ा खुला है। ईमान का रास्ता फ़ायदों से भरा हुआ है। ख़्वाह कुछ वक़्ती ख़सारा ही दुनिया में क्यों न हो जाए। हमेशा हमेश की कामयाबी सच्चे रब पर ईमान लाकर उसकी तालीमात पर अ़मल करके ही मिल सकती है। सोचो! जिस कुफ़्र की वजह से अल्लाह और फ़रिश्ते और तमाम ईमान वालों की लअ़नत किसी पर पड़ जाए, क्या उसको कहीं चैन व सुकून मिल सकता है? क्या कोई कोठी, चमचमाती कार, कोई बड़े से बड़ा बैंक बैलेन्स, कोई ऊँचे से ऊँचा ओ़हदा, उसके दिल को इत्मिनान दे सकता है? अ़क़्लमंद इन्सान ऐसे कुफ़्र को छोड़कर ईमान के अपनाने में ही अपना फ़ायदा मह़सूस करेगा और बेख़ौफ़ इन्सार उस ग़लत़ राह पर चलते रहेंगे जिस पर उन्होंने अपने बाप दादा को चलते हुए देखा है। अन्जामकार ऐसे अ़ज़ाबों में गिरफ्तार होंगे जिसका आज उनको तस़व्वुर भी नहीं।

सूरह आले इमरान की आयत 10 में इर्शादे रब्बानी है,
''बेशक जो लोग काफ़िर हैं उनके माल और उनकी औलाद अल्लाह के मुक़ाबले में उनके कुछ भी काम न आएँगे और ऐसे लोग ही दोज़ख़ का ईंधन हैं।''

सच्चे रब और उसकी तालीम को न मानने वाले कितनी बड़ी ग़लतफ़हमी में मुब्तला हैं। किस क़द्र अपने बुरे अंजाम से ग़ाफ़िल हैं। माल व औलाद में मस्त मगन होकर वह उस ज़ाते अ़ज़ीम को भूल गए हैं जिसने उनको यह माल और यह औलाद अ़ता की है। उन्होंने अपने रब को छोड़कर दूसरों की इबादत में अपना सारा वक़्त लगाया, दूसरों पर नज़्राने चढ़ाए, जिसका नतीजा यह होगा कि वह दोज़ख़ का ईंधन बना दिये जाएँगे।

इसी सूरह की आयत 19 में है,
''बेशक जो लोग काफ़िर हुए और कुफ़्र ही की हालत में मर गए, तो क़यामत के दिन उनमें से किसी भी ऐसे आदमी से ज़मीन भर सोना भी क़बूल न किया जाएगा, अगरचे वह बदले में देना चाहे। ऐसे लोगों को दर्दनाक अ़ज़ाब होगा और कोई उनका मददगार न होगा।''

लोगो! आज तुम सच्चे रब और उनकी तालीमात का इन्कार करके खुश हो जाओ, मगर कल जब दुनिया के तमाम अच्छे बुरे इन्सानों को दोबारा ज़िन्दा किया जाएगा और तुम ज़मीन भर सोना अपने कुफ़्र की माफ़ी के बदले में पेश करोगे, तो वो भी उनसे क़बूल न किया जाएगा, तो तुम्हारी क्या हालत होगी? सोचो! और समझो कि ईमान की क़ीमत ज़मीन भर सोने से भी ज़्यादा है। इतनी क़ीमती चीज़ को छोड़कर कुफ़्र जैसी हक़ीर चीज़ को अपनाना क्या तुम्हारी नासमझी नहीं है? हिम्मत से काम लो, इन्कार कर दो तमाम झूठे मअ़बूदों का, दामन पकड़ लो सच्चे रब का जो अल्लाह है। वही तुम्हारा ख़ालिक़ व मालिक और तुम्हारा राज़िक़ और तुम्हारा रब है।

सूरह फ़ातिर की आयत 26 में सच्चे रब का फ़र्मान है,
''और जिन लोगों ने न माना उनके लिऐ दोज़ख़ की आग है, न उनके लिए मौत का हुक्म जारी किया जाएगा और न ही उनका अ़ज़ाब हल्का किया जाएगा। हम यह सज़ा हर न मानने वालों को देते हैं।''

जब आदमी सोचने समझने की स़लाहियत से महरूम हो जाता है, जब वह ग़ौरो फ़िक्र से काम लेने की बजाय दूसरों की देखा देखी कामों को अन्जाम देता है, ख़्वाह वह मुनासिब हो या ग़ैर मुनासिब। जब वह दुनिया के फ़ायदो और नफ़्सानी ख़्वाहिशों को ही अपना मक़्स़द बना लेता है, जब वह फ़ायदों को हासिल करने और ख़्वाहिशों को पूरा करने के लिए जाइज़ और नाजाइज़ की ह़दों को फलांग जाता है तो कुफ़्र व ईमान से उसे कुछ मत़लब नहीं रहता। दुनियावी

फ़ायदे उसे कुफ़्र से हास़िल हों या ईमान से, उसके लिए दोनों बराबर हो जाते हैं। जिसका नतीजा यह होता है कि वह फ़ायदों, लज़्ज़तों और ख़्वाहिशों का पुजारी बनकर सच्चे रब और उसकी तालीम को फ़रामोश कर देता है। क्योंकि यह तालीम उस पर कुछ पाबन्दियाँ आ़इद करती है। जानवरों की तरह़ आज़ादाना ज़िन्दगी गुज़ारकर वह उस दोज़ख़ का मुस्तह़िक़ बन जाता है जिसके तस़व्वुर से भी ह़स्सास और अ़क़्लमंद इन्सान के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। लोगो! अपने रब पर ईमान लाकर उसकी तालीम को अपनाओ जो हमें एक बेहतरीन इन्सान बना देगी। सोच समझकर ज़िन्दगी गुज़ारने वाला इन्सान, अपने बाप दादा की अंधी पैरवी न करने वाला इन्सान, बेजान पत्थरों, सितारों, मूर्तियों और मज़ारों और अपने जैसे इन्सानों की पूजा न करने वाला इन्सान, समाज के उल्टे–सीधे रिवाजों और मुर्दा रस्मों को ठोकर लगाने वाला बहादुर इन्सान, ऐसा इन्सान ह़क़ीक़ी मअ़नों में इन्सान कहलाने का मुस्तह़िक़ है। ऐसे इन्सानों से बना हुआ समाज ही एक मिसाली समाज हो सकता है। याद रखो! कुफ़्र के मुक़ाबले में ईमान ही हमें इन्सानियत की बुलंदी तक पहुँचा सकता है। तजुर्बा शर्त़ है, तजुर्बा इस बात से इन्कार कर दे तो फिर शौक़ से तुम कुफ़्र को आज़माओ। सच्चे रब ने इन्सान को दुनिया में किसी भी धर्म और किसी भी मज़हब को अपनाने की आज़ादी दी है। न कोई इन्सान काफ़िर बनने के लिए मजबूर बनाया गया है और न मोमिन बनने के लिए। तुम मानने के लिए भी आज़ाद हो और न मानने के लिए भी। मगर दोनों के अन्जाम से भी उस रब ने आगाह कर दिया है। बता दिया है और अपनी सच्ची किताब की आयतों में खोल–खोलकर बयान कर दिया है कि, मानने वाले कौन–कौनसे इन्आ़मात के मुस्तह़िक़ हैं और न मानने वालों को क्या–क्या सज़ाएँ दी जाएँगी। इसलिए इन्सान जो राह अपनाये उसके बारे में पहले सोच ले, आया वह राह उसको मंज़िले मक़्सूद तक पहुँचा सकती है या नहीं।

तक़ब्बलल्लाहु या रब्बल आ़लमीन!